

Read Online



E-BOOK

ফাতেমা খালা একটা চিরকৃট পাঠিয়েছেন। চিরকৃটে খেঁচো—

হিন্দু

একুনি চলে আয়, ম্যানেজারকে পাঠালাম। খবরদৰ দেরি করবি না।  
খবই জরুরী। Very urgent.

ইতি

ফাতেমা খালা।

ম্যানেজার ভদ্রলোক গঁষ্টীর মুখে বসে আছেন। তার গায়ে স্যুট। পায়ে  
কালো বাড়ের জুতা। মনে হয় আসুর আগে পালিশ করিয়ে এসেছেন। জুতা জোড়া  
আপনার মত চকচক করছে। গলায় সবুজ রঙের টাই। বেশির ভাগ মানুষকেই  
টাই মানায় না। ইনাকে মানিয়েছে। মনে হচ্ছে ইনার গ্রাণ্টি ডেরিই হয়েছে টাই  
পরার ভালো। ভদ্রলোক আকাটার শেত সোশান, কিংবা সেন্ট মেথেছেন। মিষ্টি গুৰু  
আসছে। তার চেহারাও সুস্মর। ভরাট মুখ। ঘৰুৰকে শাদা দাত। বিদেশী  
টুকুপেরে বিজ্ঞপনে এই দাত ব্যবহার করা যেতে পারে। ভদ্রলোককে ফাতেমা  
খালার ম্যানেজার বলে মনে হচ্ছে না। মনে হচ্ছে কোন মাল্টিন্যাশনাল  
কোম্পানির সিনিয়র ভাইস প্রেসিডেন্ট। বোধাই যাচ্ছে, আমার ঘৱাটা তার খবই  
অগুচ্ছ হচ্ছে। তিনি সন্তুষ্ট কোন বিকট দুর্ঘট পাচ্ছেন। কাবণ বিছুকণ  
পৰগৱাই চোখ-মুখ কুচকে মেলে নিঃশ্বাস টানছেন। পকেট হাত দিছেন,  
সন্তুষ্ট ঝুমালের খেঁজে। তবে ভদ্রভার খতিয়ে ঝুমাল দিয়ে নাকচাপা দিছেন  
ন। এসিক-ওনিক তাকাচ্ছেন। সন্তুষ্ট দুর্ঘট কোথেকে আসছে তা বের কৰার  
চেষ্টা।

ভদ্রলোক অস্থির গলায় বললেন, 'বসে আছেন কেন? চলুন, দেরি হয়ে  
যাচ্ছে!'

আমি হাই ভলতে ভলতে বললাম, 'কোথায় চলব?

ভদ্রলোক অভিযন্ত রকমের বিশিষ্ট হয়ে বললেন, 'আপনার খালার বাসায়।  
আমি গাঢ়ি নিয়ে এসেছি।'

'देवि हवे। हात-मुख धोब, चा-नाशता करव'।  
'चा-नाशता म्याडमेर बासीय करवेने। टॉ करे मुखटा शुध धये निन।'  
'मुख धुत्तो देवि हवे। घटा दूषी लागवे।'

उद्दलोक आकाश थेके पड़वर मत करे बललेन, 'मुख धुत्तो दूषी घटा लागवे?'

आमि आवारो हाई तुलते तुलते (एवारेह इटा नकल हाई) बललाम, 'बेश्विं लागते पाऱ्ये। आपादेर एই मेसे एकटा मोठे वाखरम। त्रिशज्जन वोर्डर। त्रिशज्जन वोर्डरेर सब समय थाके गोटा दशेक आस्तीय, किंचु देशेव बाढ़ीर मानू। सब मिलिये गडे चारिशज्जन। एই चारिशज्जनेर संसे आमाके पाठ्याने दाढ़ीते हवे। सकालबेळार दिके लगा लाइन हवा।'

'दूषी घटा अपेक्षा करा संज्ञव ना। आपनि गाडिते उडून। हात-मुख आपानार खालार बाढ़ीते धुवेन। सेखानकार बाबस्तु अनेक भाल।'

उद्दलोकेर गलाव एथन हक्कमेर सुर वेर हच्छे। सूट-टाई परा मानव अवाशि नराव थरे कथा बलते पाऱ्ये ना। आपानातेह तादेवर गलाव थरे एकटा धमकेर भाव चले आसे। अवश्यि सूट परा मानूम निनमिन करे कथा बलले ओनतेव भाल लागे ना। तादेवरके घरजामाई मने हय। शश्वरबाढ़ीर सूटे पार्सेनिलिटी आसे ना।

'एक्टि एवारो बसे आहेन? बललाम ना, चलून।'  
आमि टोकि थेके नामतेव नामतेव बललाम, 'आज कि वार?'

'मंदिलवारा।'

आमि आवारो धग करे टोकिते बसे पड़लाम। चिठ्ठिते बललाम, 'मंदिलवार यनि हय, ताहले याओया यावे ना। मंदिलवार याओ नास्ति।'

'यावेन ना?'

'हि ना। आपनि बरं बुद्धिवारे आसून।'

'बुद्धिवारे आसव?'

'हि। खालार बचने आहे — बुद्धेर घाडे दिये पा, यथा इच्छा तथा या।'

म्यानेजर चोख बढ़ बढ़ करे ताकिये आहेन। मने हच्छ खालार बचन शोना तार अभ्यास नेहि। तिनि मने हय खानिकटा रोगेव याहेन। चोख हेट हेट हय गेहे। रागले मानुवेर चोख हेट हय याय। आनंदित मानुवेर चोख हय बड़ बड़।

'हिय साहेब।'

'हि!'

'आपनाके येतेह इवे। म्याडाम आमाके पाठ्यानेन, आपनाके निये येते। आमि ना निये याव ना। आपनि लाईने दाढ़ीते हात-मुख धोन, चा-नाशता खाल, इच्छे करले आरो खानिकक्षण गडागडि करलन। आमि कहिं। नाशता केल, दस्तकार हले सात घटा बसे थाकव। विचु मने करवेन ना, नाशता कि निजेह बाबाकेव?'

'हि ना। इच्छा दिये यावे।'

'इच्छा केव?'

'विस्मित्ताव रेहौरेन्टेर वय।'

'इच्छा नाशता करन दिये यावे?'

'हात-मुख धये एसे उत्तर दिलेव एই जानालाटा खुले देव। एटीह इल आमार निगन्याल। विस्मित्ताव रेहौरेन्टेर थेके आमार घरेव जानाला देखा याय। इच्छा आमार घरेव जानाला खोला देवे व्यावे आमि हात-मुख धये फेलेह। मे नाशता निये चले आसवे। परोटा-भजि।'

'विचु मने करवेन ना, आमि एवनह जानालाटा खुले नि। आपनार हये निगन्याल निये दि। नाशता चले असूक। नयत नाशतार जन्ये आवार एक घटा बसते हवे।'

'आगेतापे जानाला खोला ठिक हवे ना। आमार घरटा नर्मावर पाशे तो — विकट गव असेवे। आपनि नूतन मानूष। आपनार असुविधा हवे। शुध रुमाले काज हवे ना। गोस माझ पराते हवे।'

उद्दलोक विश्वित दृष्टिते ताकिये आहेन। किंचु किंचु मानूव आहे — सहजे विश्वित हय ना। तारा यवन विश्वित हय तर्वन देखते भाल लागे। एই उद्दलोक मने हच्छे सेहि दलेव। तार विश्वित दृष्टि देखते भाल लागहे। ताके आरो खानिकटा उडूके दिले केमन हय?

'म्यानेजर साहेब! आपनार नाम कि?'

'अकिब! अकिबुल इसलाम।'

'आपनि भाल आहेन?'

अकिबुल इसलाम जवाब दिलेन ना। सरु चोखे आमार दिके ताकिये रहिलेन। तिनि वोधहय तार शरीर-वाह्य निये आमार संसे कथा बलते चान ना।

'फातेमा खालार म्यानेजरी कडतिन हव करहेन?'

'वेशिन्दिन ना, दू मास।'

'খালার অবস্থা কি? তার মাথা কি পুরোপুরি আউলা হয়ে গেছে— না এখনো কিছু বাবি আছে?'

'কি বলছেন আপনি, মাথা আউলা হবে কেন?'

'গুণ্ঠন পেলে মানুষের মাথা আউলা হয়। খালা গুণ্ঠন পেয়েছেন। গুণ্ঠন এখনো আছে, না খর্চ করে ফেলেছেন?'

মানেজার গঁথীর উপরিতে বললেন, ম্যাডাম সম্পর্কে আগনোর সঙ্গে কোন আলোচনায় যেকে চাঙ্গি না। উনি আগনোর খালা। উনির সম্পর্কে আপনি যা ইচ্ছা বলতে পাবেন। আমি পারি না। আমি তার এমপ্রিয়। আমার অনেক দারিদ্র্যের একটি হল তার সমান ব্যক্তি করা। হিমু সাহেব, আপনি অগ্রহায়ী কথা বলে সময় নষ্ট করছেন। আপনি বরং দয়া করে বাধ্যকারের লাইনে দাঢ়িন। উভয়ের জানালা খোলার দরকার নেই। আমি বিস্মিতভাবে রেটুরেন্টে গিয়ে ছেন্টেকে নাশ্তা দিতে বলে আসছি।

'খনবাদ!

'আর আপনি যদি চান, আমি আগনোর হয়ে লাইনেও দাঢ়িতে পারি।

'এই বুটিটা খারাপ না। আপনি বরং লাইনে দাঢ়িন। আমি চট করে মেট্রোন্ট যেকে এক কাপ চা দেখে আসি। কোষ্ট পরিকারের জন্যে খালি পেটে চায়ের কোন ত্বরণ নেই। কড়া এক কাপ চা। চায়ের সঙ্গে একটা অজিজ বিড়ি। ভাইটে একশন। কোটির জগতে তেলপাত্তি। কোষ্ট মানে কি জানেন তো? কোষ্ট মানে হচ্ছে খুঁ। কোষ্ট কাঠিন মানে কাঠিন খুঁ।'

রাকিবুল ইসলাম আমার দিকে তাকিয়ে আছেন। এরকম কঠিন চোখে অনেক দিন কেউ আমার দিকে তাকিয়িন।

দেওতার নেমে এলাম। মেসের কেয়ার টেকার হারীব সাহেব (আড়ালে ডাকা হয় হাবা সাহেব। যদিও তিনি মোটাই হাবা না। চালাকের ছড়ান্ত। সুগোর ঝুটেট ঝুইনাইনের মত হাবা কোটেট বুদ্ধিমান)। বললেন, 'হিমু ভাই, আজকের কাণ্জ পড়েছেন?'

আমি বললাম, 'না।'

'ভয়াবহ ব্যাপার। আবার একটা 'ন' বছরের মেয়ে রেপড হয়েছে। একটু দাঢ়িন, পড়ে শোনাই।'

'এখন শুনতে পারব না। আপনি তাল করে পড়ে রাখুন — পরে ঘনে দেব।'

'মেয়েটার নাম নিতু। যাত্রাভিত্তে বাস। বাবা মিকশা চালায়।'

'ও আছে।'

'আমি একটা ফাইলের মত করছি। সব বেগের নিউজ কাটিং জয়া করে আবাহি।'

'তাল করছেন।'

হাবা সাহেবের হাত থেকে সহজে উকার পাওয়া যায় না। ভাগ্য তাল তার হাত থেকে আজ সহজেই হাড়া পাওয়া গেল। ভাগ্য একবার তাল হওয়া শুরু হলে তালটা চলতৈ থাকে। অতি সহজে বাথরুমেও চুকে পড়তে পারলাম। মনের অনন্দে দু' লাইন গানও গাইলাম।

"জীবনের পরম লপ্ত করো না হেলা

হে গরবিনী।"

রবীন্দ্রনাথ কি কোনদিন ডেবেছিলেন তার গান সবচে বেশ গুণ্ঠ হবে বাধ্যকারে! এমন কোন বাঙালি কি আছে যে বাধ্যকারে চুকে দু' লাইন গুণ্ঠণ করেন!

বাধ্যকারকে হেট করে দেখাব কিছু নেই। জগতের মহত্তম চিজ্ঞাতি করা হয় বাধ্যকারে। আমি অবশ্যি এই মুহূর্তে তেমন কোন মহৎ চিজ্ঞা করছি না। ফাতেমা খালার কথা তাবাহি — হঠাৎ শৌভ করছেন, ব্যাপোরটা কি?

ফাতেমা খালার বয়স পঞ্চাশের কাছাকাছি। তিনি বেশ সহজ স্বাভাবিক মহিলাই হিলেন। জন্ম দিয়ে পান থেকেন। আধুন নিয়ে চিত্তের মাটক, ছায়াছন্দ এবং খালি সিদ্ধে দেখতেন। ম্যাগাজিন পড়তেন তার ম্যাগাজিন পড়া বেশ অনুভূত। মাঝখানের পৃষ্ঠা খুলবেন। সেখান থেকে পড়া শুরু হবে। খালা দু'টা টিপ্পিং ক্লাবের মেধার হিলেন। ক্লাব থেকে মেটেষ্ট সব হিলী ছবি নিয়ে আসতেন। তার ঘরের দু'জন কাজের মেয়েকে নিয়ে বাত জেগে হিলী ছবি দেখতেন। কঠিন কঠিন হিলী ডায়ালগ ওদের বুঝিয়ে দিতেন। অমিতাত বচন দেন দিলীপ কুমারের চেয়ে বড় অভিনেতা — এই ধরনের উচ্চতর গবেষণা ওদের নিয়ে করতেন এবং ওদের অভিমতকে যথেষ্ট শুরুত দিতেন।

তার একটা অটোগাফের খাতাও ছিল। বাইরে বেরকলেই সেই খাতা তাঁর সঙ্গে থাকত। যে কোন সময় বিখ্যাত কেন বাতির সঙ্গে দেখা হয়ে যেতে পারে। খাতা সঙ্গে ন থাকলে সমস্যা। নিতি যার্কেটে একদিন কুটি বিনতে গিয়ে আসানুজ্ঞামান নূর সাহেবের সঙ্গে দেখা হয়ে গেল। তিনি ফাতেমা খালাকে অটোগাফ দিলেন —

জয় হোক

অসানুজ্ঞামান নূর।

ଆରେକବାର ଏଲିଫ୍ଟାର୍ଟ ରୋଡେ ଦେଖା ହଲ ଚିତ୍ରନାୟିକା ମୌସୁମୀର ସଙ୍ଗେ। ମୌସୁମୀ ମ୍ୟାଡାମ ବୋରକା ପରେ ଛିଲେନ। ତାରପରେও ଫାତେମା ଖାଲୀ ତାକେ ଚିନେ ଫେଲେନେ। ମୌସୁମୀ ମ୍ୟାଡାମଙ୍କ ଅଟୋଧାଫ ଦିଯେଛେ —

ମନ୍ଦ ହେ

ମୌସୁମୀ ।

ଖାଲାର ଜୀବନ ମୋଟାମ୍ବି ଶୁଷେଇ କେଟେ ଯାଛିଲ। ସମସ୍ୟା ବାଧାଲେନ ଖାଲୁ ସାହେବ। ତିନି ହଟ୍ଟ କରେ ଏକଦିନ ମରେ ଗେଲେନ।

ଫାତେମା ଖାଲାର ଜୀବନଧରାର ବିରାଟ ପରିବର୍ତ୍ତନ ହଲ। ତିନି ପୂରୋପୁରି ଦିଶାହାରା ହୟେ ଗେଲେନ। ଖାଲାକେ ଦେଖ ଦେଯା ଯାଇ ନା। ଯେ କୋନ ମନୁଷୀଇ ଶିଶ୍ରାହାରା ହତ। କାରଣ ହେଟ ଖାଲୁ ମୃତ୍ୟୁ ପର ଦେଖା ଗେଲ ଏହି ଉଦ୍‌ଦେଶ୍ୱର କରେକ କେଟି ଟାକା ନାମିଭାବେ ରେଖେ ଦେଖେନ। ଫାତେମା ଖାଲୁ ମତ ଭ୍ୟାବହ ସରକୁ ମହିଳାର ପକ୍ଷେ ଏକ ଜୀବନେ ଏତ ଟାକା ବରଚ କରାର କୋନ ଉପାୟ ନେଇ।

ହେଟ ଖାଲୁ ମୋହାମ୍ବ ଶକ୍ତିକୁଳ ଆମିନ ବିଚିତ୍ର ମନ୍ଦ ହେଲେନ। ଉଦ୍‌ଦେଶ୍ୱରକେ ଦେଖେଇ ମନେ ହେ ମାଥା ଛାଟ କରେ ବଢ଼େ ଥାକା ଛାଡ଼ା ତିନି କୋନ କାଜ କରେନ ନା। ବଦେ ଥାକା ଛାଡ଼ା ତିନି ଆର ଯା କରେନ ତା ହେହେ ପାଯେର ଚାଦର ଦିଯେ ଚଶମାର କାଚ ପରିଷକାର। ଶୀତ ଏବଂ ଶୀଘ୍ର ଦୁଇ ସିଜନେଇ ତିନି ପାଯେ ଚାଦର ପରଦେଶ ସନ୍ତ୍ରବତ ଚଶମାର କାଚ ପରିଷକାର ସବିଧାର ଜ୍ଞାନେ। ମୋହାମ୍ବ ମୁକାଦ୍ଦମ ମିଯାକେ ଦେଖେ କେ ବଦେ ତାର ନାମନ ଦିକ୍କ ନାମନ ବାବନା — ବିକ ଫିଲ୍ଟ, ସ୍ପିନିଂ ମିକ୍ରେ ଶେରାର, ଏରୋର୍-ଇମପାର୍ଟ, ଗରାମେଟ୍ସର୍ସ ବାବନା, ଟାଲ୍‌ପାର୍ଟ ବାବନା।

ବ୍ୟାବସାୟୀ ମନ୍ଦ ମହିନୀ ଉଦ୍‌ଦେଶ୍ୱର ତେତର ବାସ କରେ। ଘୁମେର ଅୟୁଧ ଥେମେ ରାତେ ସ୍ମୂରାର। ପୀର-ଫିକିରେର ବାହେ ଯାତାଯାତ କରେ। ହାତେ ରବେରେ-ଏର ପାଥରଓଯାଳା ଆଟି ପରେ। ଅର ବ୍ୟେକେଇ ତାଦେର ଡାଯାବେଟିସ, ହଟ୍ଟେର ଅଶ୍ୟ, ହେଇ ବ୍ରାତ ପ୍ରେସାର ହୟ। ସବଚେ ଦେଖି ଯା ହୟ ତା ନାମ ଗ୍ୟାସ। ବ୍ୟାବସାୟୀ ମହିନୀଇ ହେଟ ଭାର୍ତ୍ତ ଥାକେ ଗ୍ୟାସ। ମାଥାରି ଟାଇପେର ଯେ କୋନ ବ୍ୟାବସାୟୀର ପେଟେର ଗ୍ୟାସ ଦିଯେ ଦୁଇ ବାର୍ଣ୍ଣରେ ଏକଟା ଗ୍ୟାସ ଚାଲା ଅନାଯାସ କରେକ ଘଟା ଝାଲାନେ ଯାଇ। ଏକମାତ୍ର ହେଟ ଖାଲୁକେ ଦେଖିଲାମ ଗ୍ୟାସ ଛାଡ଼ା। ହେଟ୍ ଗ୍ୟାସ ନେଇ, ବ୍ୟବସା ନିଯେ କୋନ ଉଦ୍‌ଦେଶ୍ୱର ନେଇ। ତାକେ ବେଶିର ଭାଗ ସମୟଇ ଦେଖେଇ ଭ୍ୟାବହ ହେତେ ବଦେ ଥାକରେ। ଅଗ୍ରାହିତ୍ୟେ କାରୋ ସଙ୍ଗେ କଥାଓ ବଳଦେନ ନା। ତାର ସଙ୍ଗେ ଆମର ଶେର ଦେଖା ଏକ ବିଯେବାଡ଼ିର ହୈଟ୍-ଏର ମଧ୍ୟେ ତିନି ଏକ କୋଣାର୍ଯ୍ୟ ପୋଫାର ପା ଉଠିଯେ ବଦେ ଆଛେନ। ମନେ ହଲ ତାର ଶୀତ କରେଇ, ଦେମ ହେଟ୍‌ରୁଟ୍ ମରେ ବାସ। ଆମ ଏଗିଯେ ଦିଯେ ବଳାମ, 'ଖାଲୁ ସାହେବ କେମନ ଆଛେନ?'

ତିନି ନିଚ୍ଛ ଗଲାଯ ବଳାନେ, 'ଭାଗ !'

'ଆଗ୍ରୋ-ଦାଗ୍ରୋ ହେଯେଇ ?'

'ହେ !'

'ଭାଗଲେ ତୁମ୍ହେ ବଦେ ଆଛେନ କେନ, ଚଲେ ଯାଇ !'

'ଭାଗର ଖାଲାକେ ଖୁଜେ ବେର କରଲାମ। ତିନି ହତଭ୍ୟ ଗଲାଯ ବଳାନେ, 'ପାଗଲ ! ଆମି ଏହି ଯାବ କି ବାଗ୍ରୋ-ଦାଗ୍ରୋର ପର ଗନ-ବାଜନା ହବେ। ଗନ ତୁମ ନା ? ତୁହୁ ତୋର ଖାଲୁକେ ଚଲେ ଯେତେ ବଳ ପାହିଟା ମେନ ଦେଖେ ଯାଇ। ହିମ୍ ଶୋନ, ତୁହୁ ଏକଟା ଉପକାର କରି ଯାବାର କାହାର ଖାଲୀଟା ନିଯେ ଆର !'

'ଖାତା ଫେଲେ ଏମେହ ?'

'ହେ ! ମାରେ ଯାବେ ଏମନ ବୋକାମି କବି ଯେ ଇଚ୍ଛା କରେ ନିଜେକେଇ ନିଜେ ଚଢ଼ି ମାରି। ଚାମ୍ର ମେର ଚାପର ଦୀନତ ମେଳେ ଦେଇ !'

'ବିଯେବାଡ଼ିତେ ବିଖ୍ୟାତ କେଉଁ ଏମେହ ?'

'ତୁହୁ ବି ମଧ୍ୟ ନାବି ? ଦେଖତେ ପାହିଟା ନା — ଜୁମ୍ଲେ ଆଇଚ ସାହେବ ଏସେଛେନ, ଉନାର ଶ୍ରୀ ବିପାଶା ଆଇଚ ଏସେଛେନ। ଏବା କତକଣ ଧାକବେନ କେ ଜାନେ। ତୁହୁ ଟି କରେ ଅଟୋଧାଫେର ଖାତା ନିଯେ ଆଯା। ଆମାର ଡ୍ରେସିଂ ଟୋବିଲେର ଉପର ଆଛେ। ତୁହୁ ଖାତା ନା, କବନ ଓ ଆନବି !'

ଆମି ଖାଲୁ ସଙ୍ଗେ ବାସାଯ ଗେଲାମ। ଡ୍ରେସିଂ ଟୋବିଲେର ଉପର ଥେକେ ଫାତେମା ଖାଲାର ଅଟୋଧାଫେର ଖାତା ଉନ୍ଧର କରଲାମ। ଖାଲୁ ସାହେବ ଗୁଣ ଶାତ ସାତ ଟାକା ଦିଯେ ଦିଲେନ ଦେରାର ରିକଶା ଭାଡ଼। ଆମାକେ ବଳାନେ, ରିକଶାଓୟାଳା ଆଟ ଟାକା ଚାଇବେ। ଦୟାଦାରି କରିଲେ ସାତ ଟାକା ରାଜି ହବେ।

ଆମି କିନ୍ତୁକୁଣ ବିଶିଷ୍ଟ ହେଯେ ଖାଲୁର ନିକିଯ ବଳାମ, 'ଆଜା !' ପରଦିନ ଖାଲୁ ସାହେବକେ ଆମି ଚାର ଟାକା ଫେରତ ଦିଯେ ବଳାମ, 'ଶେରାର ରିକଶା ପେଯେ ଚଲେ ଦେଇ। ତିନ ଟାକା ନିଯେଛେ। ଆପନାର ଚାର ଟାକା ବାଁଚିଯେ ନିଲାମ !'

ତିନି ହସତେ ବଳାନେ, 'ଏଦିନ ଗୁଣ ଗୁଣ ସାତ ଟାକା ଦିଯେହି ବଳେ ରାଗ କରେଇ ?'

ଆମି ବଳାମ, 'ନା, ରାଗ କରବ କେନ ?'

'ମନେ ହେ ରାଗ କରେଇ ? ରାଗ ନା କରିଲେ ଏହି ଟାକା ଫେରତ ଦିତେ ଆସତେ ନା। ଯାଇ ହୋଇ, ତୁମି କିନ୍ତୁ ମନେ କରୋ ନା। ହିସେବ କରେ କରେ ଏହି ଅବହା ! ହେଯେ ! ସାରାକଣ ହିସେବ କବି। ଗାହିତେ ସଥିନ ତେଲ ତେଲ ହିସେବ କବି କତୁକୁ ତେଲ

নিলাম। গাড়ি কতক্ষণ চলবে। এর আগে কবে তেল নিয়েছি। বুরলে হিম, আমি শাস্তিমত পাটটা টাকাও খরচ করতে পারি না। এইসব কি হয়েছে শোন — গাড়ি করে যাইছি মহিল। পেরাটনের কাছে রেড লাইটে গাড়ি থেমেছে — ফুল বিজি করে একটা দেয়ে এমে ঘানাঘান শুরু করল, ফুল নেন। আমি মুখ শক্ত করে বলে আছি। হঠাতে মেরি আমার ড্রাইভার তার পকেট থেকে ফস করে একটা দশ টাকার নোট দেয়ে করে মেয়েটাকে দিয়ে দিল। আমি হতভাস!

'ড্রাইভারের কাও দেবে খুশি হলেন?'

'না। আমার মাধ্যম ঢুকে দেল, ড্রাইভার কি পয়সা মারছে? তেল চুরি করছে ন্যূন টায়ার বিভিন্ন করে শুরুন টায়ার লাগিয়ে পাড়ি চালাচ্ছে? তা না করলে ফুলওয়ালীকে ফস করে দেন টাকার নোট দেয় কি করে?'

'আপনি ড্রাইভার ছাটাই করে দিলেন?'

'ঠিক ধরেছ। ন্যূন ড্রাইভার নিলাম। আমি অবশ্যি এমিতেই এক ড্রাইভার বেশিদিন রাখি না। চার মাসের বেশি কাটকেই রাখি না। ড্রাইভারেরা প্রক্রতেই চুরি শুরু করে না। একটু সময় দেয়। আমি সেই সময় পর্যন্ত তাদের রাখি। তারপর বিদায়। সবই হচ্ছে আমার হিসেবে। আমি বাস করি কঠিন হিসেবের জ্ঞানে।'

'তার জন্মে কি আপনার মন খারাপ হয়?'

'না, মন খারাপ হয় না। আমাকে তৈরিই করা হয়েছে এইভাবে — মন খারাপ হবে কেন? সাধু সত্ত্ব মানুষ কি মন খারাপ করে — কেন তারা সাধু প্রকৃতির হল? না করে না। কারণ তাদের মানসিক গড়নটাই এমন। আমার বেলাতেও তাই। এই যে তুমি হিমু সেজে পথে পথে ঘূরে বেড়ো — তোমার কি মন খারাপ হয়?'

'না।'

'কফি খাবে?'

'কফিও নিশ্চয়ই আপনার হিসেব করা। আমি খেলে কম পড়বে না?'

'না, কম পড়বে না, খাও। কফি খেতে খেতে তোমার সঙ্গে কিছুক্ষণ গল্প করি।'

ছেট খাল, নিজেই কফি বানালেন। টিনের কোটা খুলে বিস্কিট বের করলেন। কেক বের করলেন। অপ্রস্তুত ভঙ্গিতে বললেন, 'আলসারের মত হয়েছে। ডাক্তার শুধু চা কিন্বা কফি থেতে নিমেষ করেছে। গরু ছাগলের মত সারাক্ষণই কিছু যাই।'

আমি হাসতে হাসতে বললাম, 'নিজের জন্মে একটা খরচ করতে হচ্ছে — এই জন্যে মন্টা সব সময় খরচ করে?'

'খাল সাহেবে লজিত মথে বললেন, 'হ্যাঁ, করে।'

'আজ্ঞা খাল সাহেব, আপনির ঠিক কর টাকা আছে বলুন তো?'

'জেনেভাবে হিসেব করিনি। তালই আছে।'

'তালই মনে কি?'

'বেশ ভাল।'

'কোটির উপর হবে?'

'তা তো হবেই।'

একটা মানুষের কোটির উপর টাকা আছে, 'সে নির্বিকার ভঙ্গিতে কফি বাসাহে ভেবেই আমার শীতল শীতল করতে লাগল। অবশ্যি আজ এমিতেই শীত। কোত ওয়েড। শীতো টেল পাছিলাম না। এখন পাছিল।

'খাল সাহেবে লজিত মথে বললেন একটা কাজ করি। এক রাতে আমরা দু'টা ফিফটিন সিটার মাইকেবাস তাড়া করি। বাস ভঙ্গি থাকবে করল। শীতের রাতে আমরা শব্দে ঘুরব — যেখানেই দেখব খালি গায়ে লোকজন শয়ে আছে — ওমি দূর থেকে তাদের গায়ে একটা কহল ছুঁড়ে দিয়েই লাঙ দিয়ে মাইজেবাসে উঠে পালিয়ে যাব। যাকে কহল দেয়া হয়েছে সে যেন ধন্যবাদ দেয়ার স্বয়ংগত না পার।'

'কাজটা কি জন্মে করব, সোয়াবের জন্মে? বেহেশতে যাতে হুরপরী পাই?'

'না সোয়াব-চোয়াবের না, হঠাতে দামী কহল পেয়ে লোকগুলির মুখের ভাব দেখে মজা পাওয়া। আপনার জীবনে নিশ্চয়ই মজার অংশ খুব কম। যাদের জীবনে মজার অংশ কম তারা অনাদের মজা দেখে আনল পায়। দুর্ধের যাদ তাতের মাড়ে মেটানোর মত।'

খাল সাহেবের সিগারেট ধরালেন। শান্ত মুখে সিগারেট টান দিচ্ছেন, কিন্তু বলছেন না। আমি কফি শেষ করে উঠে পাঁড়ালাম। ছেট খাল, আমাকে বিশ্বিত করে দিয়ে বললেন, 'ঠিক আছে। বাস ভঙ্গি কহল দেয়া যাক। করে দিতে চাও?'

'ঠিক আছে।'

'আমি কহল কিনিয়ে রাখব। হাজার পাঁচেক কহল কিনলে হবে না?'

'অবশ্যই হবে। কঠল দিয়ে একবার যদি মজা পেয়ে যান তাহলে আপনি কঠল দিতেই থাকবেন। কে জানে আপনার নামই হয়ত হয়ে যাবে শফিকুর আমিন কঠল।'

খালু সাহেবের আমার রসিকতা সম্পূর্ণ অধ্যায় করে নিচুগলায় বললেন, 'কঠল দেখা যেতে পারে। আমার যে মাঝে মাঝে দিতে ইচ্ছা করে না, তা না। কেন তামি শেষ পর্যন্ত দেয়া হয় না।'

সেমবাবর রাত বারোটায় তাঁর কঠল নিয়ে বেঙ্গবার কথা, উনি মারা পেলেন শনিবার সকাল দশটার। অফিসে যাবার জন্যে কাগড় পরেছেন, ফাতেমা খালাকে বললেন, 'একটা সুয়েটার দাও তো। তাঁ ঠাণ্ডা পাগছে, শুধু চাদর শীত মানছে না।'

খালা যানাঘরে রান্না করছিলেন। তিনি বললেন, 'আমার হাত বৰ্ক, তুমি নিজে খুঁজে নাও। আলমিরায় আছে। নিচের তাকে দেখ।'

খালু সাহেবের নিজেই সুয়েটার খুঁজে বের করলেন। সুয়েটার পরামেন না। হাতে নিয়ে খাবার ঘরে বেস রইলেন। ফাতেমা খালা যানাঘর থেকে বের হয়ে অবাক হয়ে বললেন, 'কি বাধাৰ, তুমি অফিসে যাওনি!'

'শৰীরটা ভাল লাগে না। দেখি এক কাপ লেবু চা দাও কেন?'

'সুয়েটার হাতে নিয়ে বেস আছ কেন?'

'পরামেন ইচ্ছা করবেন না। আস ফিস লাগে।'

ফাতেমা খালা আদা চা বালিয়ে এসে দেখেন খালু সাহেবের কাত হয়ে চেয়ারে পরে আছেন। ক্ষীর কালারের সুয়েটারটা তাঁর পারের কাছে পরে আছে। পথে দেখায় তাঁর মনে হল— মানুষটা বৃথি ক্লান্ত হয়ে যাচ্ছে।

আমি সকাল বেলাতেই খবর পেলাম — টিক করলাম একটু রাত করে খালাকে দেখতে যাব। সন্ধিয়ার মধ্যে চিংকার, কান্নাকাটি থেমে যাওয়ার কথা। যে বাড়িতে মানুষ মারা যায় সে বাড়িতে মৃত্যুর আট থেকে ন ঘন্টা পর একটা শান্তি শান্তি ভাব চলে আসে। আর্যায়-বজনুরা কান্নাকাটি করে চোখের পালিন টক ফুরিয়ে দেলে। চেষ্টা করেও তখন কান্না আসে না। তবে বাড়ির সবার মধ্যে দুইটি দুর্ঘীতি তার থাকে। সবাই সচেতনভাবেই হেক বা অবচেতনভাবেই হোক — দেখাবার চেষ্টা করে মৃত্যুতে সে-ই সবচে বেশি কষ্ট পেয়েছে। মৃল দুর্ঘীতের দেয়ে অভিন্নভাবে দুর্ঘীত পথখন হয়ে দাঢ়ান। একমাত্র ব্যক্তিগত সভান্বের মৃত্যুতে মার্যাদের দুর্ঘীত। যে বাড়িতে মায়ের কেন সত্ত্বান মারা যায় সে বাড়িতে আমি কথনই যাই না। সত্ত্বান শোকে কাতর মায়ের সামনে দৌড়ানোর ক্ষমতা হিমুদের দেয়া হয়নি।

আমি রাত ন'টার দিকে ফাতেমা খালার বাড়িতে উপস্থিত হলাম। বাড়ি জর্জ মানুষ। ফাতেমা খালা নাকি এর মধ্যে কয়েকবার অজ্ঞান হয়েছেন। এখন একটু সুস্থি। ডাক্তার রিলাইজন দিয়ে অঙ্গকার ঘরে শুয়ে থাকতে বলেছে। তিনি জর্জের শেবার ঘরে তায়ে আছেন। সেই ঘরে কারের যাবার হুকুম দেই।

হুকুম ছাড়াই আমি শেবার ঘরে চুক্ক পেলাম। খালা আমাকে দেখে হেচেকিস মত শব্দ তুলে বললেন, 'হিমু, রে, আমার সর্বিনাশ হয়ে গেল রে। সেবু চা থেকে চেয়েছিল — ব্যালি। ঘরে লেবু ছিল না বলে আদা চা বানিয়ে দিয়ে দেবি এই অবহা। নতুন না, চতুর্থ না, চেয়ারে কাত হয়ে আছে। মানুষটার শেবার ইচ্ছাও শুন্ধি হল না। সামাজিক লেবু চা, তাও থেকে পারেন না।'

'ঘরে লেবু ছিল না?'

'ব্যালি হিমু, আসলে ছিল। পরে আমি ফিজের দরজা খুলে দেখি ভেজা ন্যাকুর দিয়ে মুড়ানো চার-পাঁচটা কাপজি লেবু।'

'কেজা ন্যাকুর দিয়ে মুড়ানো কেন?'

'কাজের মেঠো যে আছে জাহেদার মা — সে কি যে বোকা তুই চিত্তাও করতে পারবি না। তাকে একবার বলেছিলাম, পান ভেজা ন্যাকুর দিয়ে মুড়ে রাখতে। এর পর থেকে সে করে কি, যা-ই পায় ভেজা ন্যাকুর দিয়ে মুড়ে রাখে।'

খালা উত্তেজিত ভঙ্গিতে বিছানায় উঠে বসলেন। আমি এখন বষ্টি বোধ করছি। খালাকে মৃত্যুশোক থেকে বের করে কাজের মেঠের সমস্যায় এনে দেলে দেয়া হয়েছে।

'হিমু শোন, এই মেঠোটা আমাকে যে কি যন্ত্রণার মধ্যে ফেলে তুই কর্মাণ করতে পারবি না। মাঝে-মধ্যে ইচ্ছা করে ওর গায়ে এসিড ঢেলে দেই।'

'সে কেন?'

'ভোর খালু মার গেছে সকাল দশটায়। এগরোটা থেকে শোকজন আসতে শুরু করেছে। আর তখন জাহেদার মা শুরু করেছে কান্না। আছাড় পিছাড় কান্না। বাড়ির ডেলে পড়ে যায় এমন অবহা। আমি তাকে আঙ্গালে ডেকে নিয়ে বলগাম, বৰ্বার, চোখের পানি, চিংকার সব বৰ্ক। আরেকটা চিংকার যদি করিস গলা টিপে মেঠে কেবল।'

'কেন?'

'আরে বুরিস না কেন — তার কান্নাকাটি দেখে শোকজন ভাববে না — বাড়ির বুরা এত কাদে কেবল রহস্যটা কি? তার উপর মেঠোটা দেখতে তাঁ। শৰীর শাহ্ন্যাও তাঁ। ভারী বৰ্ক, ভারী কোমর। মাথার চুলও লম্বা। চুলে গোপনে

গোপনে শ্যাম্পু দেয়। আমার শ্যাম্পুর বোতল ফাঁক করে দেয়। এত সজ্জগোচর গোকজন উচ্চাপান্তি ভাবতে পারে না।

'তো পারেই!'

'এইসব কথা তো কাউকে বলতেও পারি না। তুই এসেছিস, তোকে বলে মন্টা হালকা হল। চা খাবি?'

'না!'

'খা এক কাপ চা। তোর সঙ্গে আমিও খাই। হজ্জগায় মাথা ফেটে যাছে। আমি তো আর এই অবস্থায় চা দিতে বলতে পারি না। সবাই বলতে খাবীর শাশ করবে নমিহায় চা কফি দেয়ে বিবিয়না করছে। ডঙা দরজারও ছিটকিনি আছে। মানুষের মূখের তো আর ছিটকিনি নেই। তুই যা, চায়ের কথা বলে আয়।'

চা ধেয়ে দেতে খালা পুরোপুরি শাজাবিক হয়ে গেলেন। কোথায় শোক, কোথায় কি? সব জনে তেসে গেল।

'বুলি হিম, তোর সঙ্গে কথা বলে আরাম আছে। তুই যে কোন কথা সহজভাবে নিতে পারিস, বেশির ভাগ মানুষ তা পারে না। একটা সাধারণ ব্যক্তির দশটা বাকা অর্থ দেব করে। এখন থেকে তুই আমাকে পরামর্শ দিবি, বুঝিবি। তোর পরামর্শ আমার দরকার।'

'কি পরামর্শ?'

'তোর খালু মেলা টাকা রেখে দেছে। বিলি ব্যবস্থার ব্যাপার আছে।'

'কত রেখে দেছেন?'

'পুরোপুরি জানি না। আস্তাজ করতে পারছি। তবে আমার হাত-পা পেটে তুকে যাচ্ছে হিম।'

'কেবা?

'টাকাওয়ালা মানুষের দিকে সবার নজর। তাছাড়া আমি মেয়েমানুষ। তোর খালুর আশীর্য-সুজনের এখন সব উদয় হবে। মড়া কানা কাদতে কাদতে আসবে। তারপর সুযোগ বুকে হায়েনার মত খুলে ধরবে।'

'তুমি বড় হায়েন হয়ে হাহা করে এমন হাসি দেবে যে হাসি শুনে ওরা পালাবার পথ পাবে না।'

'রসিকতা করিস না। সব দিন রসিকতা করা যায় না। এই বাড়িতে আজ একটা মানুষ মারা গেছে— এটা মনে রাখিস। এখনো কবরে নামেনি। আছে শোন— কুলখানির একটা ভাল আয়োজন করা দরকার না!'

'অবশ্যই দরকার। এমন খাওয়া আমরা খাওয়ার যে সবার পেটে অসুখ হয়ে যাবে। পরের এক সঙ্গই ওরস্যালাইন থেকে হবে।'

খালা গাঁথির গদায় বলেন, 'হিম, তুই আবার ফাজলামি শুব্দ করেছিস। তোকে অস্থায় লাগছে। একটা মৃত মানুষের জন্যে তোর সমান থাকবে না? তুই কি অমানুষ?'

'স্তুক জানি না খালা। আমি কি তা পরে সবাই মিলে ঠিক করলেই হবে। আগজত এসো কুলখানির মেনু ঠিক করি। তুমি কি থেকে চাও?'

'আমি কি থেকে চাই মানে ফাজল বেশি হয়েছিস। ধরাকে সরা জন করাইয়া আমার সঙ্গে রসিকতা। তুই এছনি বিদেয় হ। এই মুহূর্তে।'

'চলে যাবা?'

খালা রাগে ঝুলতে ঝুলতে বলেন, 'অবশ্যই চলে যাবি। আমি কি থেকে চাই জিজেন করতে তোর মুখে বাধল না? শোন হিম, আর কোনদিন তুই এ বাড়িতে আসবি না।'

আমি ঘুবই সহজভাবে বললাম, 'তুমি ডাকলেও আসব না?'

খালা তীব্র গদায় বললেন, 'না, আসবি না। তোর জন্যে এ বাড়ির দরজা বন্ধ। যাবার মত বাসে আছিস নেন? চলে যেতে বাধায়, চলে যা।'

আমি চলে এলাম। খালা আর ডাকলেন না, আমিও গেলাম না।

দু'বছর হয়ে গেল। ফাতেমা খালু কীটায় দু'বছর পর ডেকে পাঠিয়েছে। আমি আবারো যাইছি। তার মধ্যে কি পরিবর্তন দেখব কে জানে। ম্যানেজার সাহেবকে দেখে শুকিত বোধ করছি। মনে হচ্ছে বড় ধরনের পরিবর্তন দেবতে পাব। কে জানে, হয়ত দেখব শাড়ি ফেলে দিয়ে স্লার্ট টপ ধরেছেন। ছু বব করিয়ে ফেলেছেন। মাথার সাদা চুলে আগে মেনি দিলেন। এখন সর্বত পিচ করাচ্ছেন।

'ম্যানেজার সাহেবে!

'ছি!'

'ফাতেমা খালা— আপনার ম্যাডাম আছেন কেমন?'

'তার আছেন। গ্যাসের প্রবলেম হচ্ছে, চিকিৎসার জন্যে শিগপিরই সিসাপুর ঝোন।'

'গ্যাসের প্রবলেম মানে কি? পেটে গ্যাস হচ্ছে?'

'ছি!'

'ঘুবই দুঃসন্দেহ। মেয়েদের পেটে গ্যাস একেবারেই মানায় না। গ্যাসের জন্যে সিসাপুর যেতে হচ্ছে?'

'গ্যাস্টারকে তুচ্ছ করে দেখবেন না। গ্যাসের প্রবলেম থেকে অন্যান্য মেজর প্রবলেম দেখা দেয়। গ্যাস বেশি হলে উপরের দিকে ফুসফুসের ডায়াফ্রেমে চাপ দেয়, হাতের ফাংশানে ইন্টারফেয়েম করে।'

আমি বিশিষ্ট গলায় বললাম, 'তাই আপনি তো মনে হচ্ছে জানী যানেজার। ডাক্তারীও জানেন।'

ভালোক আমার রাস্তাকতা পছন্দ করলেন না। গাঁটীর হয়ে গেলেন। সারা পথে তার সঙ্গে আমার আর কোন কথাবার্তা হল না। এবার একটা সিগারেট ধরিয়ে ছিলাম— যানেজার সাহেবে কঠিন গলায় বললেন, 'গাড়িতে এসি চলছে। সিগারেট ফেলে দিন।'

আমি বড়লৈ সুন্দর হলে হয়ে গেলাম। সিগারেট ফেলে দিলাম।

ফাতেমা খালকে দেখে আমি ঘোষিষ্টার একটা চমক খেলাম। স্টার্ট টপ না, তিনি সাধারণ শাড়ি-ব্রাউজই পরে আছেন। সাধারণ মানে বেশ সাধারণ — সুন্তি শাড়ি। হালকা সবুজ রঙে সদা সুন্দর কাজ করা। তার পরেও তাঁকে দেখে চামকিবার কারণ হচ্ছে তাঁকে খুকী খুকী দেখছে। মনে হচ্ছে দশ বছর বয়স করে গেছে। মুখ হাসি হাসি। গান হেয়েছেন বলে টোট লাল হয়ে আছে। সারা শরীরে সুন্তি সুন্তি ভাব। ঢোকে সেমালি ঘোমের চশমা।

খালা বললেন, 'হা করে তি দেখছিস?'

'তোমাকে দেখছি। তোমার ব্যাপারটা কি?'

'কি ব্যাপার জানতে চাস?'

'তোমাকে এমন দেখাচ্ছে কেন?'

'কেমন দেখাচ্ছে?'

'খুকী খুকী দেখাচ্ছে। মনে হচ্ছে দশ বছর বয়স করিয়ে ফেলেছে।'

'ফাজলামি করিস না হিমু।'

'ফাজলামি করছি না। আমার এই হলুদ পাঞ্জাবীর শপথ, তোমাকে দেখে মনে হচ্ছে তোমার বয়স কৃতি বছর করছে।'

'একটু আগে তো বললি দশ বছর করছে।'

'ওকুন্তে দশ বছর মনে হিছিল — এখন মনে হচ্ছে কৃতি। ব্যাপারটা কি?'

খালা আনন্দিত গলায় বললেন, 'মুচ্চ হেবিট চেঞ্জ করেছি। এখন এক বেলা ভাত খাই। ওধু রাতে। তাও গাদা খানিক খাই না, চায়ের কাপের এক কাপ ভাত। আত্ম চারের ভাত। দিনে শাকসজি, ফলমূল থাই। সেই সঙ্গে তিটামিন।'

'কি তিটামিন?'

'তিটামিন ই। এটি এজিং তিটামিন। খুব কাজের। তিটামিন ই ক্রীম পাওয়া যাব। এ ক্রীম মুখে মারি। গুলামে একটা হেলথ ক্লাবে ভর্তি হয়েছি। স্টী হাত একসারসাইজ করি। একসারসাইজের পর সোয়ানা নেই। সোয়ানাৰ পর আধখন্তা সুইচি করি। সোয়ানাটা শরীরে ফ্যাট কমানোৰ জন্যে খুব উপকারী।'

'সোয়ানাটা কি?'

'শ্বেত বাষ। দশ-পন্নোৱা মিনিট স্থীর বাষ নিলে শরীরের পুরোপুরি রিলায়েড হয়ে যাব। টেলিফন করে। সুইচ থাকার প্রধান রহস্য টেলিফন স্থী থাকা।'

'সোয়ানা-হৃয়ানা নিয়ে তুমি যে টেনশন স্টী হয়েছ এটা তোমাকে দেখে দেখা যাবে এবং খুবই তাঁ লাগছে। তেমাকে যায়াবতী লাগছে। তবে তোমার যানেজারে বললিস তুমি নাকি যায়াবতীৰ সঙ্গে সঙ্গে গ্যাসোবতী হয়েছ। গ্যাস হেচে আসাৰ জন্যে সিঙ্গারু যাচ্ছ।'

খালা পচ্চির গলায় বললেন, 'গ্যাসোবতী হয়েছি মানে — কি ধৰনেৰ কথা বলছিস। শুনুজ্জননদেৱ সঙ্গে কো বকার সময় সাধান রেখে কো বলবি না? আমি তোৱ খালা না? আমি তি তোৱ ইয়াৰ-বাঙ্কীৰী?'

'অক্ষেই তুমি আমার খালা। ধৰণবতী খালা। আমাকে ডেকেছ বেন বল?'

'ভাঙ্গাড়া কৰিছিস কেন? বলব। তোকে খুব জুরুৱাঁ কাজে ডেকেছি। ওছিয়ে না বললে তুই বুবাবি না। সময় নিয়ে বলতে হবে। তুই তো একেবাৱে কাকেৱ মত হয়ে পেছিস, খুব দোনো দোনো ঘুৰিস?'

'হ হুই!'

'আজকেৰ জন্যে হোয়াহুৰি বাদ দে। বাড়িটা নতুন কৰে ঠিকঠাক কৰেছি। খুবে খিৰে দেখ, মজা পাৰি। সংশ্লিষ্টিক পৰে এলৈ সোয়ানা পাৰি। আৰ্কিটেক ডেকে সোয়ানা বানাতে বলে দিয়েছি। রোজ রোজ গুলশানে গিয়ে পোৱায় না।'

'তোক কৰেছ!'

'সোয়ানাটা বানানো হলে তোৱ যখন ইচ্ছা কৰে সোয়ানা নিয়ে যাবি। দায়োহানকে বলে দেবে — আমি না থাকলোও চুকতে দেবে।'

'খালুক হুই!'

'একটা সুইচ পুল দেবাৰ ইচ্ছা ছিল। আৰ্কিটেক বলল, সম্ভব না। জায়গা নেই। ছাদেৰ উপৰ যে কৰব সে উপায়ত নেই। সুইচ পুলেৰ শোভ নেয়াৰ মত হাঁকচারাল টেক্ণিক বাঢ়িৱ নেই।'

'নতুন বাঢ়ি কৰাব না কেন?'

'নতুন বাঢ়ি কৰাৰ কথা মাঝে মাঝে মনে হয়। বাঢ়ি কৰা কোন ব্যাপার না। তোমানে তোৱ খালু জায়গা কিমে রেখেছিস। তাৰলাম কি দৱকার পুৱানো

বাড়িতে তো ভালই আছি। তাহাড়া তোর খালুর শৃঙ্খল এই বাড়িতে আছে। মানুষটা তো হারিয়েই দেল, তার সূর্যুত্তর ধাক। কি বলিস?

'ঠিকই বলছ।'

'আমার ম্যানেজার কেমন দেখলি?'

'সুট পরা ম্যানেজার?'

'আমিই বলেছি সুট পরতে। শার্ট লাগে। পারভাজা-পাঞ্জাবী পরা একটা লোকের কথায় মানুষ ঘোরত্ব দেয় সুট পরা মানুষের কথায় তারচে অনেক বেশি গুরুত্ব দেয়।'

'মানুষটা কে তার উপরেও কিছুটা নির্ভর করে। নেট পরা মানুষের কথাও লোকজন খুব গুরুত্ব দিয়ে থেকে, যদি মানুষটা হয় মহায়া গান্ধী!'

'খুল্লত্ব কথা বলিস না তো হিমু, মহায়া গান্ধীকে আমি ম্যানেজার হিসেবে পরাক্রিতারে? আমি যা পেয়েছি তাই ভাল। খুব চালাবাব চুরুর হেলে। মাছির মত চারপিংকে চোখ। সব দেখছে। সমস্যা হলে নিজেই ডিসিশন নিছে, তেমন প্রয়োজন হলে আমকে জানাবেছ। কোটি কোটি টাকার ব্যাপার বুঝতেই তো পারছিস।'

'টাকা এখনো খরচ করতে শেষ করতে পারিস?'

'কি বলছিস তুই? তোর কি ধীরণা, হাতে টাকা পেয়ে দুই হাতে উড়াচ্ছি? খুব তুল ধারণা। খরচ তো অবশ্যই করছি। টাকা তো খরচে জনোই। ব্যাপকে জয়া রেখে টাকার তিম পাঢ়ানোর জন্যে না। তবে খরচ-ট্রেচ করেও তোর খালু যা রেখে দেছে সেটাকেও বার্তাচো। খলানোর এত বড় জয়গা শুধু শুলু মেলে রেখেছিল — রিয়েল এক্ষেট কোম্পানিকে দিয়ে দিয়েছি। আমাকে চারটা ফ্ল্যাট দিচ্ছে, প্লাস এবং কেটাটা টাকা কাশি — বুলবুলই সব ব্যাবস্থা করেছি।'

'বুলবুল তোমার ম্যানেজার?'

'হঁ, ভাল নাম রাখিবুল ইসলাম। ডাকনাম বুলবুল। আমি বুলবুলই ডাকি।'

'বুলবুল সাহেব তাহলে তোমার ভাল হাতও!'

'তা বলতে পারিস — খুব ওষ্ঠাদ ছেলে। ইঠাত করে তোর খালুর এক আরীয় সেলিন বের হল, সৎ বেন। সম্পত্তির ভাগ নিয়ে ইঠে শুরু করল। ছোট আদলতে মামলাও করে দিল। বুলবুল তোকে এমন পাঠে মেলেছে যে তার টেন্ডেটা মেজে পেছে না। এখন কেবলে কুল পাছে না। আমার সবে দেখা করতে এসেছিল। আমি তামানাকে বললাম, বলে দাও আমার সবে দেখা হবে না। তারপরেও যাবে না। শুরু করেছে কান্দাকাটি। আমি তামানাকে বললাম, যেতাবে পায় এই মহিলাকে বিদায় কর। একবার বলেছি দেখা করব না — দেখা করব না।'

'তামানা আবার কে?'

'ও আজ্ঞা, তামানার কথা তো তোকে বলা হয়নি — আমার পি.এ। বুলবুল মেম শক্ত, তামানা তেমনি নরম। উচু গলায় কাটিকে কোন কথা বলা তার পক্ষে সহজ না। তুই তার সঙ্গে একটু কঠিন হয়ে কিছু বলবি ওরি দেখবি মেয়ের দেখ ছান্নল করছে।'

'তামানাকে দেখেছি না তো।'

'দেখবি। আজ মোবার তো, ওর আসতে দেরি হবে। মোবার সে তার সঙ্গারের জন্যে বাঙাল করে। সঙ্গার মানে তাই-বেন, মা-বাবার সংসার। তামানা দিয়ে করেনি। বিয়ে করবেই বা বিভাবে? যাতে এত বড় সংসার। যাই হোক, ওকে নিয়ে আর তোকে নিয়ে আমার একটা প্লাস আছে।'

আমি ঘাবড়ে দিয়ে বললাম, 'এই জন্যে তুমি আমাকে আনিয়েছে?'

খালা হাসিমুর বললেন, 'তোকে আনিয়েছি অন্য কারণ। সেটা এখন না, পরে করল। তার সঙ্গে তামানার সম্পর্ক নেই। যাই হোক, তুই তামানাকে দেখ। তার সঙ্গে কথাবার্তা নাই। সারাজীবন পথে পথে ঘূরবি নাবি? হিমগিরি তো অনেকদিন করলি, আর কত। ঘর-সংসার করবি না? মুসলমান ধর্ম, হিন্দু ধর্ম না — সংসার ধর্মই আসল ধর্ম।'

'মেয়েটা দেখতে দেখন?'

'সাধারণের বাঙলি মেয়ের মত। সাধারণের চেয়ে একটু তাঁউনও হতে পারে। তবু খুব দেশি ভাউন না। চলে। আর তুই নিজেও তো বাণিজনের রাজপুত না। দেহরা করেছিস কারেক মত, চাবিরি নেই, বিছু নেই। কারেক মতই এটকাটা কুড়িয়ে আছিস। যে মেয়ে তোকে বিয়ে করতে রাজি হবে বুঝতে হবে তার ইইনে সমস্যা।'

'তামানা তো তাহলে রাজি হবে না।'

'সেটা আমি দেখব। তুই একটা কাজ কর, হাত-মুখ ধূয়ে মোটামুটি তত্ত্ব ভাব ধ্রুব চেষ্টা কর। এখনও খালি পায়ে থাকিস?'

'হঁ।'

'দৌড়া, স্যাতেল কিনিয়ে দিছি। আছা শোন, এক কাজ কর, আমি বুলবুলকে বলে দিছি ও তোকে স্যাতেল কিনে দেবে। নাপিতের সোকান থেকে তুল কাটিয়ে আনিব। ভাল একটা পাঞ্জাবী কিনে দেবে। অসুবিধা আছে?'

'কোন অসুবিধা নেই।'

খালা ম্যানেজারকে কি সব বললেন। নিচু গলায় বললেন, আমি কিছুই অক্ষম না।

ম্যানেজার সাহেব কর্মী মনুষ। তিনি প্রথমে আমার চূল কাটলেন। চূল কাটার সময় সামনে উপস্থিত থাকলেন এবং ত্বরিত নাপিককে ডিনেকশন দিতে লাগলেন— শেছনেটা আরেকটু ছেট। সামনে বড়, জুড়ি আরেকটু রাখ। চূল কাটাকে মনে হচ্ছে শিরকর্ম এবং তিনি একজন মহান শিরনির্দেশক। মাথার চূলে পরে পাঁচালী বানানো হচ্ছে এবং তিনি সত্যজিৎ রায়।

চূল কাটার পর শ্যাম্পু করা হল, হেয়ার ড্রাইয়ার দিয়ে চূল শকানো হল। তারপর আবার পেলাম স্যান্ডেল বিনান্তে। নিউ এলিফাণ্ট রোড থেকে মেট ইন ইটালী স্যান্ডেল কিনলাম। মাঝেও পেলাম স্যান্ডেল। স্যান্ডেল ঝোঢ়া যেন গুণগত করে গাইছে, 'চৰণ ধৰিতে দিও শে আমারে .....' পায়জ্ঞাম পঞ্জাবী কেনা হল। পাঞ্জাবীর উপর মেলে রাখার জন্যে চাদর। সুতির চাদর তবে সুন্দর কাজ আছে।

‘ম্যানেজার সাহেব বললেন, ‘চূলুন, চশমা কিনে দেই।’

আমি বিশ্বিত হয়ে বললাম, ‘চশমা কেন? আমার তো চোখ খারাপ না।’

ম্যানেজার বিশ্বিত হয়ে বললেন, ‘চোখ খারাপের চশমা না, পেটাপ চেঞ্জের চশমা।’ অনেক মনুষ আছে চশমা পরলে তাদের পেটাপে বিবর্ণ পরিবর্তন হয়। যাদের চেহারায় মাঝকি ভাব আছে — চশমা তাদের জন্যে মাটি। মুখের অনেক-খানি ঢেকে ফেলে।’

আমার চেহারায় মাঝকি ভাব আছে তা জানতাম না। আমি শুধু বললাম, ‘ও, আচ্ছা।’

‘আপনি ভেভাবে ও আচ্ছা বললেন তাতে মনে হল আপনি আমার কথা বিশ্বিত করলেন না। কথা সত্য। গলায় টাই পরলে মানুষকে এক রকম লাগে, আবার টাইয়ের বদলে কৌথুম চাদর ফেললে অন্য রকম লাগে। তেমনি চশমা পরলে লাগবে এক রকম, চশমা না পরলে লাগবে আরেক রকম। সুন্দর ফ্রেম দেখে তিনের পাওয়ারের একটা চশমা কিনে দি চূলু।’

‘চূলু।’

আমি ভোল পাস্টে ফেললাম। চশমা পরলাম। পঞ্জাবী বদলে নতুন পঞ্জাবী পরলাম। ডেসিং রুম ছিল ন বলে পায়জ্ঞাম বদলানো শেল ন। কৌথুম ফেললাম চাদর। ম্যানেজার সাহেবে ফিটিকের মত শুকনো গলায় বললেন, ‘আপনাকে দেখতে ভাল লাগছে। বেশ ভাল লাগছে। খেজেটেবল। শুধু চূল কাটাট। তেমন ভাল হয়নি। অভিবালকার নাপিত চূল কাটতে জানে ন।’

‘চূল আরেকবার কেটে আসি। মনে আফসোস রাখা ঠিক না।’

ম্যানেজার সাহেব বললেন, ‘না ধাক্ক, দেরি হয়ে যাচ্ছে। চূলু যাই।’

বাড়ি ফিরলাম। আমাকে দেখে ফাতেমা খালা মুঝ গলায় বললেন, ‘আরে তোকে তো চেনা যাচ্ছে না। তোর চেহারা থেকে চামচিকা ভাবটা মেটামুটি চলে গেছে।’

আমি কদম্বুটি করে ফেললাম। খালা বললেন, ‘ওকি, সালাম করছিস কেন?’

‘নতুন জামা-কাপড় পরেছি এই জন্যে। তামাম্বা কি এসেছে খালা?’

‘না আজ আসবে না। ওর বাসায় সমস্যা হয়েছে। ওর ছেট ভাইটা রিকশা থেকে পোর সিরিয়াস ব্যাথা পেয়েছে। তামাম্বা ওকে নিয়ে গেছে হাসপাতালে। পুরো পরিবারটা সেটার ঘাড়ে সিন্দুরাদের চুক্তের ঘর চেপে আছে। একা সে ক’দিক সামনারে দুর্গুণ মত তার তো আচারটা হাত না, দুটা মোটে হাত।’

‘খালা আমার মন্টা খারাপ হয়ে যাচ্ছে — এত খামেলা করে পেটাপ চেঞ্জ করা হল, কেন কাজে লাগল না। তামাম্বার সঙ্গে দেখা হল না। এক কাজ করলে হয় না! ঠিকানা দাও বাসায় চূলৈ হাত নাই।’

‘বাসায় নিয়ে কি করবি?’

‘তামাম্বার সঙ্গে বলব, আমাকে ফাতেমা খালা পাঠিয়েছেন। আপনার ছেট ভাই রিকশা থেকে পরে ব্যাথা পেয়েছে — এ ব্যাপারে খৌজববর নিতে বলেছেন। তামাম্বার হাত ভাইটা নাম কি খালা?’

‘আচ্ছা।’

‘জামানের বয়স কত?’

‘পাঁচ বছর।’

‘জামানের জন্যে বেলুন-চেলুন জাতীয় কোন মিফিট নিয়ে গেলে কেমন হয় খালা?’

‘ভুই কি সত্যি যাবি?’

‘অক্ষমই।’

‘যাক, তোর মধ্যে কিছু চেঞ্জ তাহলে এসেছে। আমি ভেবেছিলাম ভুই আর বললাবি না।’

‘বাসার ঠিকানা দাও, বিকশা ভাড়া দাও দূরে আসি।’

‘তামাম্বার বাসায় উপস্থিত হওয়াটা বাঢ়াবাড়ি হবে। আমি ব্যবহা করব, ভুই ঠিকা করিস না। যে জন্য তোকে ঢেকে আনালাম সেটি তো বলা হল না।’

‘ক’বল বলবে?’

‘আয়, শোবার ঘরে আয় — বলি।’

ফাতেমা খালা শোয়ার ঘরে আমি বসে আছি। খালা খাটে, আমি খাটের

সঙ্গে লাগোয়া চেয়ারে। খালা কথা বলছেন ফিস্ফিস করে। দরজাও তেজিয়ে  
দেয়া হয়েছে। এব আধো অঙ্কুর। মেমন বড়বুজ তাৰ। মিলিট্ৰী কু  
ঘন হয় তখন সভ্যত জেনারেলৱা ইইভেই কথা বলেন।

‘কেজন লোককে তুই খুজে বেৰ কৰিব। লোকটাৰ নাম ইয়াকুব। বাবাৰ নাম  
সোলায়মান মিয়া। বাবস পঞ্জাশেৰ উপৱা। তাৰ স্থার ঠিকানা আমাৰ কাছে নেই।  
দাকায় যেখানে থাকতো সেই ঠিকানা আছে— অভীশ দীপংকৰ রোড। সেখানে  
এবন নেই। মানেজৱারকে পাঠিয়েছিলাম। বেধায় গোছে তাও কেউ জানে ন।  
তোৱ কাজ হচ্ছে ইয়াকুবকে খুজে বেৰ কৰা। ঢেল পিটিয়ে খোজা যাবে ন। চুপি  
চুপি খুজতে হবে।’

‘তোমাৰ ম্যানেজৱ যেখানে ফেল কৰেছে সেখানে আমি পাশ কৰিব  
কিভাবে।’

‘তুই পাশ কৰিব। তোৱ কাজই তো পথে পথে ঘোৱা। আৱ ইয়াকুব লোকটা  
খুব সৰ্বত পথে পথেই থাকে।’

‘যদি পাই বি কৰিব? কানে ধৰে তোমাৰ কাছে নিয়ে আসব?’

‘আমাৰ কাছে আনতে হবে না। খৰ্বৰীৰ আমাৰ কাছে আনবি না। তুই তাৰ  
সঙ্গে গৱণত্ব কৰিব।’

‘ইয়াকুব সাহেবকে খুজে বেৰ কৰে তাৰ সঙ্গে কিছুক্ষণ গৱণত্ব কৰিব,  
এই আমাৰ কাজ?’

ই।

‘খালা আমাৰ মাথায় কিছু ঢুকছে না। কি ধৰনেৰ গৱণত্ব কৰিব? দেশেৰ  
ৱাজনীতি হাসিনা-খালুনে সংবাদ?’

খালা ছেটি নিঃখাস ফেলে বললেন, ‘দীড়া, তোকে পুৱো ব্যাপারটা খুলে  
বলি। পুৱো ঘটনা না তন্তে তুই গুৱাতৃষ্ণ বুঝবি না। আমাকে কথা দে যে হিচীয়  
কেউ জানবে না। কসম কাট।’

‘কসম কাটছি কেউ জানবে না।’

‘এইভাৱে কেট কসম কাটে? তোৱ কোন ধিৰ মানুষেৰ নামে কসম কাট।’

‘তামান্নাৰ কসম। হিতীয় কেউ জানবে না।’

খালা অসম্ভব বিৰক্ত হয়ে বললেন, ‘তোৱ সবকিছু নিয়ে ফাজলামিটা  
আমাৰ অসহ লাগে। তোকে ব্যৱ দিয়ে আনাই ভুল হয়েছে। তামান্নাৰ নামে  
কসম কাটছিস কোন হিসেবে? ও তোৱ অতি প্ৰিয়জন হয়ে গেল?’

‘পুৰুষ আমাৰ অতি প্ৰিয়। তোমাৰ নামে কসম কাটিব।’

‘থাক কসম কাটতে হবে না। ঘটনাটা শোন — তোকে আলাহৰ মোহাই

লাগে কেউ যেন না জানে।’

‘কেউ জানবে না খালা। আপনি নিশ্চিত মনে বুন।’

দৱজা তেজানোই ছিল। খালা উঠে গিয়ে লক কৰে দিলেন। এতেও তাৰ মন  
তাল ন। তিনি আবাৰ দেজা খনে বাইবে টাপি দিয়ে আবাৰ দৱজা বন্ধ কৰলেন।  
চেয়াৰ টেনে আমাৰ কাছে নিয়ে এলেন। গলাৰ স্ব আৱে নামিয়ে ফেললেন,  
‘তোৱ খালুন ছিল খুব বেয়াদিক মানুষ। তাৰ বিলি-ব্যবহাৰ, হিসাব-নিকাশ  
খুব পৰিষ্কাৰ। তাৰ মৃত্যুৰ পৰ টাকা-পৰসাৰ বি কৰতে হবে না কৰতে হবে  
সব দে লিখে গেছে। উকিলকে দিয়ে সাঙ্কি-সাৰুদ দিয়ে উইল কৰে গোছে। সেই  
উইল ঘৰতে গিয়ে নথি সৰ্বনাশ — ইয়াকুব নামেৰ এক লোককে সে  
মালীবাগৈৰ বাড়ি আৱ নগদ দশ লাখ টাকা দিয়ে গোছে।’

‘সে কি, বেল?’

‘আমাৰে তো সেটাই পশ্চ — কেন? তোৱ খালুনেৰ কাছে সারাজীবনে  
একবাৰ তাৰ নাম শুনলাম না কোথাকাৰ কোন ইয়াকুব — তাকে বাড়ি আৱ দশ  
লাখ টাকা। তোৱ খালুন কি ভীমৱতি হয়েছে।’

‘ভীমৱতি-ফতি খালুনেৰ হবে না।’

‘ঠিক বলেছিস সে এ টাইপেৰ না। টাকা যখন দিয়েছে তখন কোন কাৰণেই  
নিয়েছে।’

‘এ লোককে খুজে বাৰ কৰা তোমাৰ জন্যে খুব বোকায়ি হবে। ও আসবে  
বাড়ি আৱ নগদ টাকা নিয়ে ভ্যানিশ হয়ে যাবে। তিনি ভিত্তি ভিসি।’

‘গাধাৰ বাবু বৰা বলিস না তো হিমু। বাড়ি আৱ টাকা নেয়া অত সহজ—  
আমি শুধু জানতে চাই তোৱ খালুনেৰ সঙ্গে লোকটাৰ সম্পর্ক কি ছিল?  
আমাৰ ধারণা ফিস্ফাস কোন ব্যাপার?’

‘ফিস্ফাস ব্যাপার মানে? ফিস্ফাসটা কি?’

‘মেয়েঘাটিত বিছু।’

‘কিছুটা কি?’

‘সেটা কি আৱ আমি জানি নাকি?’

‘খালুন যেমন মানুষ তাৰ তেমন ভীমৱতি হওয়া সভ্ব না, তেমনি  
ফিস্ফাস হওয়াও সভ্ব না।’

‘পুৰুষ মানুষেৰ গক্ষে সবই সভ্ব। পুৰুষ জাতি বড়ই আজৰ জাতি।’

‘তাহলে আমাৰ কাজ হচ্ছে ইয়াকুবকে খুজে বেৰ কৰে তাৰ পেটেৱ ভেতৱ

থেকে গুরু টেনে বের করে নিয়ে আসা।'

'হ্যাঁ পারবি না!'

'ইয়াকুব সাহেবকে খুঁজে বের করতে পারলে পারব।'

'বুশি হিমু পরিকাম বিজগন-চিজগন দিয়ে সোকটাকে পাওয়া যেত, কেন বিজগন সিছি না— বুবতেই পারছিস।'

'তা পারছি।'

'তুই এই উপকারটা আমার কর। সোকটাকে খুঁজে বের কর। আমি তোকে খুঁজ করে দেব।'

'আজ্ঞা।'

'খুঁজে বের করতে পারবি না?'

'মনে হয় পারব।'

'কিভাবে খুঁজবি?'

'রাস্তায় মাড়ার হাঁটি— সলেহজনক কাটকে দেখলে জিজেস করব, স্যার আপনার নাম কি ইয়াকুব? নাম যদি ইয়াকুব না হয় তাহলে আমার কেন কথা নেই। আর নাম যদি ইয়াকুব হয় তাহলে আমার একটা কথা আছে। কথাটা হচ্ছে আপনার পিতার নাম কি?'

'হিমু।'

'কি খালা!'

'তুই তো মনে হয় আমার সঙ্গে ইয়ারকি করছিস। তোকে ইয়ারকি করার জন্যে আমি ডাকিনি। আমি খুব ভাল করে জানি ইয়াকুব নামের সোকটাকে খুঁজে বের করা তোর কাছে কেন ব্যাপৰ না। ইচ্ছা করলে তুই তিনি দিনের মাথায় সোকটাকে বের করে ফেলবি। এই জন্যেই তোকে ঢাকিয়েছি।'

'আজ্ঞা ঠিক আছে।'

'তুই সোকটাকে খুঁজে বের কর। আমি কথা দিচ্ছি তোকে খুশি করে দেব।'

'আমি তো সব সময় খুশি হয়েই আছি। তুমি এরচে বেশি খুশি কি করে করবে?'

'বললাম তো তোকে খুশি করব। কিভাবে করব সোটা তখন দেখবি।'

'আজ্ঞা তাহলে বিদ্যায় হই খালা!'

'আজ্ঞা যা।'

'স্যাঙ্গেল শশমা এইসব মেখে যাই? তামাম্বাৰ সঙ্গে দেখা হবাৰ সঙ্গীবন্মা যখন হবে তখন পৱব। খালি পায়ে হেঁটে অভ্যাস হয়ে গেছে। স্যাঙ্গেল পায়ে পথে

নামলে হমড়ি থেয়ে চলত টাকেৰ সামনে পড়ে যেতে পাৰি। তেমন কিছু ঘটলে ইয়াকুব সাহেবের সংস্কাৰ পাৰে না। সোটা ঠিক হবে না।'

'তোৱ যা ইচ্ছা কৰ। তোৱ কথাৰাৰ্তা একনগাঠে শোনা অসম্ভব ব্যাপৰ। তুই যে কি বলিস না বলিস তা বোধহয় তোৱ নিষেজোৱা জানা নেই।'

আমি স্যাঙ্গেল, চান্দ, চশমা রেখে খালাৰ বাড়ি থেকে বেৰ হলাম। গেটেৰ দারোয়ান সলেহেৰ চোখে আমাৰ দিকে তাকাবে। আজ্ঞা, এই দারোয়ানেৰ নাম ইয়াকুব না তো? বাধেৰ ঘৰে ঘোণেৰ বাসা। অনুসন্ধান খালাৰ বাড়িৰ গেট থেকেই শুন যেক। দারোয়ানেৰ বাস চান্দিশেৰ উপৰে। কাজেই তাকে সলেহজনদেৰ তালিকায় রাখা যেতে পাৰে। আমি ধৰ্মক দাঁড়ালাম। দারোয়ানেৰ কাছে এগিয়ে এসে বললাম, 'কে ইয়াকুব না? ইয়াকুব কেমন আছ? তারা?'

দারোয়ান খৰ্মত থেয়ে বলল, 'স্যার আমাৰ নাম কলাম।'

'ও আজ্ঞা, কালাম তোমাৰ চেহারা অবিকল ইয়াকুবেৰ মত। সেই রকম নাক, সেই রকম মুখ। তোমাৰ চোখও ইয়াকুবেৰ মতই ঢ্যারা। ভাল কথা, ইয়াকুব নামে কাউকে নেন?'

'জ্ঞেনা।'

'না জ্ঞেনা ভাল। ডেনজুৱাস লোক।'

আমি লোক লোক পা ফেলে এগাছি। দারোয়ানেৰ বিষয় এখনো কঠিন না। সে তাকিয়ে আছে। আজ্ঞা, বিশ্বয় নামক মানবিক আবেগ কত ধৰনেৰ হতে পাৰে? কি কি কাণে আমাৰ বিশ্বিত হই?

অবেগ বোকামি দেখে বিশ্বিত হই।

অবেগৰ বিশ্বিতা দেখেও বিশ্বিত হই।

খৰান্দেও সহজ্য আছে। যে মহাবোকা দে অন্তোৱ বোকামি দেখে বিশ্বিত হৰে না। সে সেটাই যাতাবিক ধৰে দেবে। বিজানীদেৱ উচিত বিশ্বয় ব্যাপীৱৰটা নিয়ে গবেষণা কৰা। বিশ্বয় মিটাৰ জাতীয় যন্ত্ৰ বেৰ কৰে ফেলা। যে যন্ত্ৰ মানুষেৰ চোখেৰ পলকে বিশ্বয় মেঘে ফেলাৰে। বিশ্বয় মাপ হবে এগৰে দশেৰ মধ্যে। লগারিদমিক কেলে। দশ হবে বিশ্বয়েৰ সৰ্বশেষ সীমা। একজন মানুষেৰ জীবনে যাত্র দু'বাৰ বিশ্বয় মিটাৰেৰ সৰ্বশেষ মাপ দশে উঠবে।

প্ৰথমবাৰ হবে যখন সে মায়েৰ গৰ্জ থেকে পথৰীতে ভূমিষ্ঠ হবে। পৃথিবী দেখে বিশ্বয় দশ। আৱ শেষবাৰ আবাৰো বিশ্বয় মিটাৰেৰ মাপ দশ হবে যখন সে

মৃচ্ছার মুখেমুখি দাঁড়াবে। পৃথিবী অন্ধকার হয়ে আসতে শুরু করবে, সে হতভব হয়ে তামবে— কি হতে যাচ্ছে? একি, আমি বেরধায় যাচ্ছি!

যারা বুর ভাগ্যবান মানুষ তাদের মেট কেট এক জীবনে বিশ্বয় মিটার আরো এক 'দ' বার হয়ত দশ ক্ষেত্র করবেন। নেইল অর্থসং ধন ঠাঁকে নামদেন তখন তিনি দশ খোর করলেন।

ট্যাস আলভা এভিন ফনোগ্রাফ আবিক্ষার করলেন। এমন এক যন্ত্র যা মানুষের কথা বন্সি করে ফেলতে পারে। আসলেই তা পারে কিনা তা পরীক্ষার জন্মে নিষেই যজ্ঞের সামনে বসে বিড়বিড় করে একটা ছড়া বললেন—

Mary had a little lamb

Its fleece was as white as snow

And every where that Mary went

That lamb was sure to go.

ছড়া শেষ করে উজ্জেননা কপালের ঘাম মুছলেন। তার গলার শব্দ আসলেই কি যন্ত্রটা বলি করতে পেরেছে? তিনি যন্ত্র চালু করলেন — যদ্রের ক্ষেত্র থেকে শব্দ আসতে লাগল —

Mary had a little lamb

সেদিন বিশ্বয় মিটার ছিট করে রাখলে ট্যাস আলভা এভিনের বিশ্বয় দশ বা দশের কাছাকাছি হত।

আচ্ছা আমি এইসব কি তাবাহি? মূল দায়িত্ব পাশ কাটিয়ে যাচ্ছি। আমাকে ইয়াকুব সাহেবের সঙ্গান করতে হবে। বরাশি ফেলে তার পেটের ক্ষেত্র থেকে কথা বের করে নিয়ে আসতে হবে।

পাজেরো একটা জীব রাস্তার পাশে দায়িত্ব আছে। জীপের মালিক বিরসমুখে বসে আছে। বিরসমুখের কারণ গাড়ির চাকার হাওয়া চলে গেছে। ডাইভার চাকা বদলাতে। আজ্ঞা পাজেরোর মালিকের নাম কি ইয়াকুব হতে পারে না? আমি কেন ধরে নিছি ইয়াকুব সেকটা হবে হতদরিদ্র? সে বিশ্বাসীও ক্ষেত্র থেকে পারে।

আমি ভদ্রলোকের কাছে এগিয়ে গেলাম। ভদ্রলোক তীব্র দৃষ্টিতে তাকলেন। সেই দৃষ্টিতে খানিকটা সন্দেহ নিয়ে তাকান।

'স্যার কিছু মনে করবেন না, আপনার নাম কি ইয়াকুব?'

কোন জবাব আসছে না। আমি হাসিমুখে বললাম, 'স্যার আপনার যে ডাইভার তার নাম কি? বাই এনি চাল ইয়াকুব না তো? আমি ইয়াকুবের সহানে বের হয়েছি। আমাকে একটু সাহায্য করুন।'

I need your friend help.'

পাগলদের দিকে মানুষ যে দৃষ্টিতে তাকিয়ে থাকে, ভদ্রলোক সেই দৃষ্টিতে আমার দিকে তাকিয়ে আছেন। এতক্ষণ তার চোখ ভর্তি হিল সন্দেহ। এখন সেই সন্দেহের সঙ্গে যুক্ত হয়েছে ত্য। তিনি দ্রুত গাড়ির কাছ উঠাচ্ছেন। গাড়ির কাছে নাক চেপে ভদ্রলোককে দেখিতি কাটলে কেমনে হয়। তায়ে তার নিষ্কয়ই পিলে চাকে যাবে। পাজেরোর মালিকরা বড়ের বেগে গাড়ি চালিয়ে আমার মত নিশ্চীয় প্রচারায়েক ত্য দেখান। কাজেই সুযোগ মত তাদেরকেও ছেটখাট ত্য দেখাবার অবিকার আমার আছে। আমি গাড়ির কাছে নাক চেপে জিভ বের করে সাপের মত এদিক-ওদিক করতে লাগলাম এবং দৈর্ঘ্য দৈর্ঘ্যে জাতীয় শব্দ করতে লাগলাম। পাজেরো মালিক তায়ে এবং আতঙ্কে কেমন জানি হয়ে গেছেন। তার সঙ্গে নিষ্কয়ই মোবাইল ফোন নেই। থাকলে পুরীশকে যবর দিতেন।



ইয়াকুবের স্বাক্ষনে যাও অক্ষ হল। কোন একটা উদ্দেশ্য নিয়ে ঘর থেকে বের হবার আলাদা আনন্দ। নিজেকে শুরুপূর্ণ মনে হয়। ছব্বর দেখানে চা খেয়ে ফুরুগতে পা রাখা মাঝে নিজেকে কলাধোলের মত মনে হল। একজন মানুষ, একটা মহাদেশের মত। মানুষকে আবিষ্কার এবং মহাদেশ আবিষ্কার একই ব্যাপার।

ফুরুগতে বিশ্লিষ এক পাথর।

পাথরে ধাক্কা খেয়ে হমড়ি খেয়ে পড়ে যাবার জোগাড় হল। নিজেকে পতন থেকে অনেক কষ্ট সামলালাম। ভাল পায়ের নথ কেটে রক্ত বের হচ্ছে। দু' হাতে পায়ের নথ ঢেপে বসে পড়তেই কে একজন জিজ্ঞেস করল, ভাইজন, আইজন, কৃষ্ণ।

তাকিয়ে দেবি পাথরটা থেকে পাচ ছ' হাত দূরে এক মধ্যম বয়সী তিবিরী। তার একটা চোখ নষ্ট। ভাল চোখটা অতিরিক্ত ভাল। সেই চোখের পাতা জ্বালাত পিণ্ঠ পিণ্ঠ করছ। দৃষ্টিও ভীষণ। একচক্ষ তিবিরীই তারিখ জানতে চাচ্ছে। তার মুখে চাপা হচ্ছি। পাথরের সঙ্গে ধাক্কা ব্যাপরটা দেখে সে মনে হয় মজা দেয়েছে। তিবিরীর জীবনে মজাৰ অৱশ্য কম। অনেকের দুঃখকষ্ট থেকে মজা আহরণ করা ছাড়া তাঁদের উপায় নেই। আমি বললাম, 'এই পাথরটা কি তুমি এখনে রেখে

তিবিরী গঁউ গলায় বলল, যাবারে অনুমতি দিকি?

'না কেন অনুমতি দেই। তুম রেখে কিনা সেটা বল।'

'ই রাখছি।'

'প্রতিদিনই গোকজন এখনে ধাক্কা বাছেছে?'

'বেবিয়ালে হাঁটলে ধাক্কা বাইবেই।'

'আজে সারাদিন ক'জন ধাক্কা বায়েছে?'

'অত হিসাব নাই।'

'আমিহি কি প্রথম?'

'তুম না — আহনে প্রথম না।'

'নাম কি তোমার?'

'আমার নাম দিয়া আহনের কি দুর্বকার?'

'কেন দুর্বকার নেই, তারপরেও জানতে চাচ্ছি। তুমি যেমন কারণ ছাড়াই

জানতে চাচ্ছিলে আজ কত তাৰিখ? আমিও সে রকম জানতে চাচ্ছি।'

'আমার নাম দেবকন্দের মিয়া। কাঢ়ি বৰিশাল নৰীমগৱর।'

'তিক্কা শেষ কৰে যখন বাড়িতে ফিরে যাও তখন পাথরটা কি কৰ, সঙ্গে

করে নিয়ে যাও?'

'আমি পাথরের নিম্ন ক্ষাণ: পথৰ কি আমার?'

'সারাদিন তোমার বোজগার কত হয়?'

'এক আগাম ডিক্কা কৰি বইলা রোজগার কম। হাঁটাহাঁটিতে বোজগার কেলি।'

'হাঁটাহাঁটি কৰ না কেন?'

'ইচ্ছা কৰে না। সামান্য দুইটা পয়সার জন্যে অত খাটনী ভাল লাগে না। কারোৱ ইচ্ছা হইলে দিব। ইচ্ছা না হইলে নাই। আমি কি আহনের কাছে তিক্কা চাইতিই?'

'ন।'

আহনের কাছে যেমন ডিক্কা চাই না, অন্যের কাছেও চাই না।

'শুধু তাৰিখ জানতে চাই?'

'হ্যাঁ।'

ছেকছান্দৰ মিয়া তার ঝুলিৰ ভেতৰ কি যেন খৌজাখুজি কৰছে। এৰ ঝুলিও অন্যদেৱ ঝুলিৰ মত শক্তিনিকেতনী কাপড়ৰ বাগ। মেছকান্দৰ মিয়া বিড়ি বেৰ কৰে। মুখ দিতে দিতে বলল, 'স্যার তাৰিখ কত জানেন?' কৰিব। মুখ দিতে বলল, 'আমি হইলাম না চাওইন্যা।'

'ভাল কোনটা, চাওইন্যাটা, না না চাওইন্যাটা?'

'ভাল—মন দুই দিকই আছে।'

নথ থেকে রক্তপাত বৰ্ক হচ্ছে না। আমি উঠে লাড়ুলাম। রক্ত পড়ছে পচুক।

তিক্কুক আবারো বলল, 'স্যার তাৰিখ কত জানেন?' কৰিব। মুখ দিতে বলল, 'আমি বললাম, 'জানি না। মনে কৰার চেষ্টা কৰাই। যদি মনে পড়ে তোমাকে জানিয়ে যাব। আৰ শোন, পাথরটাকে যত্নে রেখো, এটা সাধাৰণ পাথৰ না। এই

পাথৰ রহস্যম।'

মেছকান্দৰ আমার দিকে তাকিয়ে আছে। আৰ আমি তাবাই আজকেৰ তাৰিখটা দেবল কৰে বৰ্ষ দিবস, না সংক্ষ দিবস?

ঘৰে তাৰিখ তুলে গেলে দেয়ালে ক্যালেন্ডাৰ দেখা যাব — পথে ক্যালেন্ডাৰ খুলে না। নগৰকৰ্ত্তাৰ ধৰে দেখা যাবে পথে নামে তারা তাৰিখ জেনেই নামে। এ জনেই শহৰের মোড়ে মোড়ে কালেৰ খুলে না।

ইদনীং ধাক্কা শহৰ অনেক উন্নত হয়েছে — একটু পৰপৰ দোকান সজিয়ে চেঙ্গা ছেঁদেপুলে বসে আছে — আইসসতি টেলিফোন, দেম-বিদেশে ফোন, ফ্লার। এদেৱ ব্যৰসাও ব্যৰমাল। বাংলাদেশৰ মানুষ বিদেশে টেলিফোন কৰতে ভালবাস।

ধাই ধাই কৰে যে দেশ এন্তে সে দেশেৰ পথে পথে ক্যালেন্ডাৰ ধাক্কা দৰকাৰ। কাউকে কি জিজ্ঞেস কৰব আৰ আজি তাৰিখ কত? ক'টা বাজে জিজ্ঞেস কৰা সমস্ত। আজ কত তাৰিখ? — জিজ্ঞেস কৰাৰ খুব সহজ না। পৰিচিত প্ৰশ্নেৰ জবাব আমৰা আগৰাই কৰে দেই। অপৰিচিত প্ৰশ্নেৰ জবাব দিতে কৰক যাই। তুম কুকে তাৰিখ কোৱা এই প্ৰশ্ন কৰল কেন? তাৰিখ জায়ে কেন? রহস্য কি?

বাস্তাৰ পাশে স্থিতি মুখ এক ভদ্ৰলোক দৰিয়ে আসেছে। তাৰ সোহায় অফিসে যাবার তাড়া। বৈবীটোঁৰ দেখা মাঝ হাত উঠ কৰছেন এবং এই বৈবী একী বৈবী কৰে জিজ্ঞেস কৰে আসেছে। তাৰ একটা হাত পাঞ্জাবীৰ পকেটে। সে যখন আমার পাশে এসে দাঁড়াল, তখন বুলাল তাৰ হাতে পিণ্ঠ। মুখ দিয়ে ভক কৰে মনে পৰ্যাপ্ত আসেছে। আমাকে বলল, 'তুমি ইয়াকুব?'

আমি বললাম, 'ছি না।' সে বলল, 'মিয়া কৰা বলছিস কেন? তাৰ নাম কি শোলাম আয়ম? এই ধৰণে শক্তিক হওয়ায় যাব। এন প্ৰশ্ন তো কৰছি না।'

সামৰ ভৱলামৰেৰ ভাগী ভাল। তিনি খালি বৈবীটোঁৰ পেয়ে প্ৰায় লাফিয়ে টাপ্পিয়ে উঠে পেছেন। বৈবীটোঁৰ পেছনেৰ জানালা দিয়ে বৈৰীতুলী হয়ে আমাকে দেখেনে। তাৰ চোখ ধোৰে ভাৰ এবলো কাটিনি। আমি টা-টা, বাই-বাই বাই-বাইতে হাত হাত জালালাম। তিনি টা কৰে মুখ ধূৰিয়ে দিবেন। ভৰিসে বিহুৰে এই ভৰোক সৰ মৰহৰ্ষ সৰ গৱ তৰু কৰবেনে। তাৰ সহকৰ্মীৰা চোখ বড় বড় কৰে গৱ তৰুণৰে —

ভৰংকুৰ এক বদমাশৰে পালায় পড়েছিলাম। অৱেৰ জন্যে শীবনটা রক্ষা দেয়েছে। বৈবীটোঁৰ জন্যে অপেক্ষা কৰাই — হঠাৎ দেখি হুলু পাঞ্জাবী পৰা এক লোক এসেছে। তাৰ একটা হাত পাঞ্জাবীৰ পকেটে। সে যখন আমার পাশে এসে দাঁড়াল, তখন বুলাল তাৰ হাতে পিণ্ঠ। মুখ দিয়ে ভক কৰে মনে পৰ্যাপ্ত আসেছে। আমাকে বলল, 'তুমি ইয়াকুব?'

আমি বললাম, 'ছি না।'

সে বলল, 'মিয়া কৰা বলছিস কেন? তাৰ নাম ইয়াকুব?' আমি হতভুব। কী বলল, এই কৰে কৰে বুৰুতে পিণ্ঠ পিণ্ঠ।'

আমি তাকিয়ে দেবি বাস্তাৰ পাশে একটা মাইক্রোবাস দৌড়িয়ে আছে।

মাইক্রোবাসে ছয় জন বসে আছে। তাৰে গায়ে হলুৱা পাঞ্জাবী। সবাই তাকিয়ে আছে আমাকে দিবে। আমাৰ হাত-পা জমে গৈল। আমি কোনমতে বললাম, 'আপনি ভৰ কৰবেন ....'

শোতাৰা হতভুব হেৱ গৱ তৰুণৰে — তাৰা যতই হতভুব হৰে, গৱেৱ ভালপালাৰ তাতই ছাতৰে এবং একটা সময় আসেৱ বৰন এই ভদ্ৰলোক নিজেই নিজেৰে গৱ বিশ্বাস কৰতে শৰু কৰবেন। তিনি যদি লেখক হন তাহলে তাৰ আৰাম হৰে।

কাজেৰা ধাক্কাৰ সঙ্গে কথা বলা দৰকাৰ। তাৰে জানালো দৰকাৰ যে পঞ্জেট ইয়াকুবেৰ কাজকৰ্ম পূৰ্ণ তুল্য চাচ্ছে। অনুসন্ধান স্বৰূপ সম্প্ৰায়েৰ মধ্যেই চলছে। ভিক্কু পশ্চাদ্যায়ে মেছকান্দৰ মিয়াকে দিয়ে অনুসন্ধানেৰ কাৰ্যকৰ্ত্তাৰ শৰু হয়েছে। সাফল্য দৰাপত্ৰে। টেলিফোনেৰ কোথোকে কৰব বুৰুতে পিণ্ঠ পিণ্ঠ। সঙ্গে কাৰ্ড দেই যে কাৰ্ড হৈলেন কথা বলৰ। টেলিফোনেৰ দোকান খুলে যাবা বসে আছে তাৰে কাজে দেলে লাভ হবে না। তাৰে হচ্ছে 'ফেল কৰ্ত্ত মাথ তেল' ব্যাপার। মালীবাণে আমাৰ একটা টেলিফোনেৰ বাকিৰ দোকান

কেন? সবাই সবাইকে সন্দেহ কৰছে। আপনাৰ নাম কি ইয়াকুব? এই নিৰ্দোষ

আছে। সেখানে আমার নামে খাতা আছে। খাতায় নাম লিখে টেলিফোন করতে হয়। কল শেষ হবার পর দেকানের মালিক জগন্নাথ ভাই বিরস গলায় বলেন—‘টাকা তো অনেক জমে গেল হিমু সহেব। বিছু অন্তত ক্লিয়ার করেন। আজ ন পারলেও এই সঙ্গের মধ্যে কিছু নিতে পারেন বিনা দেখেন। চা খাবেন?’

আমার টেলিফোনের এই বাকির দেকানের সবচে বড় সুবিধা হচ্ছে টেলিফোন শেষ হবার পর চা পাওয়া যায়। এক কাপ না, হত কাপ ইছ। দপ্তরে গেলে জগন্নাথ ভাই জোর করে ভাত খাইয়ে দেন। রাতে বিপদে গড়লে ঘুমুবার ব্যবস্থাও আছে। জগন্নাথ ভাই রাতে দেকানে থাকেন। শোলমের পেছনে বড় ঘর আছে। সেই ঘরের সবচে জুড়ে খট পাতা। রাতে উপর্যুক্ত হলে তিনি যথ বিরক্ত হয়ে বলেন—‘কি ব্যাপার রাতে ধাককেন? বাণিষ্ঠ নেই, কোলবালিশ মাথার নিচে দিয়ে ঘুমুন, নাক ডাককেন না। আমি সব সহ্য করতে পারি, নাক ডাক সহ্য করতে পারি না।’

জগন্নাথ ভাইয়ের দেকান খেতে ফাতেমা খালাকে টেলিফোন করলাম। ডারী গভীর পুরুষ কষ্ট শোনা গেল—‘কে কথা বলছেন? ফাতেমা খালার ম্যানেজার।

‘আমি বললাম, ‘বুলবুল নাকি? ভাল?’

‘কে, হিমু সহেব?’

‘ছি।’

‘দয়া করে আমাকে কখনো বুলবুল ডাককেন না। বুলবুল আমার ডাকনাম। আমার ভাল নাম রকিবুল। আমি ডাকনামে পরিচিত হতে চাই ন। আমি পরিচিত হতে চাই ভাল নামে।’

‘মহাকবি সেরপীয়ার নাম পসঙ্গে একটা কথা বলেছিলেন— গোলাপকে তুমি যে নামেই ডাক সে গুরু ছড়াবে।’

‘দয়া করে আমার সঙ্গে সেরপীয়ার কপচাবেন না। এবং আমাকে কখনো বুলবুল ডাককেন না।’

‘আমার যদি কোনদিন খালার মত কোটি কোটি টাকা হয় তাহলে কি আপনাকে বুলবুল ডাকতে পারব?’

‘আপনি কি ম্যাডামের সঙ্গে কথা বলবেন?’

‘ছি।’

‘ধৰন দিছি। ম্যাডামের শরীরটা বেশি ভাল না। ডাক্তার তাকে মোটামুটি রেস্টে থাকতে বলেছেন। কাজেই টেলিফোনে আপনি বেশিক্ষণ কথা বলবেন না।’

‘ছি আচ্ছা। রাতের শুনুন, আজ কত তারিখ বলতে পারবেন?’

‘তারিখ দিয়ে আপনি কি করবেন? তারিখ তো আপনার কোন কাজে আসার কথা না।’

‘আমার জন্যে না। একজন ডিবিয়ারি আমার কাছে তারিখ জানতে চাচ্ছিল। ডিবিয়ারি নাম মেচকান্স নিয়া।’

‘আজ ১৭ তারিখ। উনিশশো অষ্টাশি সাল। আপনি ধরে থাকুন। আমি ম্যাডামকে দিচ্ছি।’

খালা এসে টেলিফোন ধরলেন। চির্ট গলায় বললেন, ‘কে হিমু? আমি মারা যাচ্ছি।’

‘বি হচ্ছে?’

‘সুম হচ্ছে না। সারাবাত জেগে থাকি।’

‘সে কি?’

‘সুর্য উত্তর পর ঘূম আসে। তখন দরজা-জানালা বন্ধ করে ঘুমাই। তাও খুব অল্প কষ— ম্যারিমাম দই থেকে আড়াই ঘণ্টা।’

‘দুই আড়াই ঘণ্টার মধ্যেই। নেপোলিয়ান তিন ঘণ্টার বেশি ঘুমাতেন না।’

‘গাধাৰ মত কথা বলিস না, আমি কি নেপোলিয়ান?’

‘অবশ্যই নেপোলিয়ান— মেয়ে মানুষ হয়ে এত বড় ব্যকসা দেখছ। তুমি কম বিঃ নেপোলিয়ানকে এই ব্যকসা দেখতে দেয়া হলে সে এক সঙ্গের মধ্যে লাল বাতি ঝালিয়ে সব হেঢ়ে দুরে আসারের দিকে চলে যেত।’

‘তোম কথার্বৰ্তিৰ ধৰন আৰ পাস্টল না। ইয়াকুবেৰ হোঁজ বেৰ কৱেহিস?’

‘কাজ চলছে। শিশুগৰি জানতে পারবে।’

‘লোকটাকে বেৰ কৰতে পাৰলে তোকে আমি ক্যাশ কুড়ি হাজাৰ টাকা দেব।’

‘টাকটা আলাদা কৰে রাখ খালা— আমি দু’ একদিনের মধ্যে আসাৰী হাজিৰ কৰিব।’

‘নে প্ৰলোম।’

‘তাহলে টেলিফোন রেখে দেই। কথা বলতে পাৰছি না। মাথা ছিড়ে পড়ে যাচ্ছে। অস্তৰৰ বজ্রণ।’

‘জামান কেমন আছে খালা।’

‘জামান কেমন আছে মানে? জামানটা কে?’

'এই যে তামান্নার ছোট ভাই —বিকশা থেকে পড়ে পায়ে ব্যথা পেল। আমি ঠিক করে দেখেছি কুড়ি হাজার টাকা পেলে ছেলেটাকে একটা লেগো সেট উপহার দেব। জামানের বোন তার আছে তো?'

'তামান্নার কথা বলছিস'

'ই!'

'আশ্চর্য, এখনো তোর মাথায় তামান্না আছে? আমি তো তেবেছি সব তুলে বসে আছিস। তোর যা নেচার। তোকে তো আমি আজ থেকে চিনি না। যাই হোক, তুই তামান্নার ব্যাপারে ভাবিস না। আমি সব ব্যবস্থা করব। আমি তামান্নাকে বিছ হিসেব দিয়েছি। সরাসরি তোর কথা বলিনি— ঘুরিয়ে বলেছি। ও দেবি খুবই লজ্জা পাচ্ছে!'

'অতিরিক্ত লজ্জার জন্মে আবার পিছিয়ে পড়ে না তো!'

'পিছিয়ে যাবে কোথায় — আমি এমন চাল চালব।'

'খালা ধাঁকস।'

'তোর পরিবর্তন দেখে আমি খুবই অবাক হচ্ছি। শেন হিমু, তোর ঝীবনটা আমি বলে দেব। আমার ফর্মে তোকে চারিয়ি দেব।'

'সুট-টাই পরতে হবে?'

'পরতে হলে পরবি। সুট-টাই কি খারাপ? তোর হলুদ পাঞ্জাবীর চেয়ে ভাল।'

'কোমার মাথার ঘঘণা এখন একটু কম না?'

'হ্যাঁ কম। সকালে তো মাথা তুলতে পারছিলাম না এমন অবস্থা। তুই ইয়াকুবের পৌঁজ পেলেই আমাকে জানাবি। আমি ঘুমিয়ে থাকলে ঘুম থেকে তুলবি।'

'আচ্ছা, খালা একটা কথা — ইয়াকুব লোকটা দেখতে কেমন তা কি জান? মেটা না রেগা, শৰ্ষা না রেটে?'

'বিছুট জানি না।'

'না জানলেও অসুবিধা নেই। দূ'একদিনের মধ্যেই জানা যাবে লোকটা কেমন। আজও জানা যেতে পারে। কুড়ি হাজার টাকা ক্যাশ দিয়ে খালা। ক্ষণভ দেখ দিলে বিরাট সমস্যা হবে। আমার বাধাকে একাউন্ট নেই।'

একটা টেলিফোন করলে খালে পড়ার সম্ভাবনা। আমি আবার সাতার জনি না। কর্জেই বাধ হয়ে বিড়ীয় টেলিফোন করলাম। তামান্নার ব্যাপারটা ঝপাকে জানানো দরকার। আজকাল ঝপাকে টেলিফোনে ধরা সমস্যা হয়েছে। প্রথম একজন কাজের লোক টেলিফোন ধরে। তার কাছে নাম ঠিকানা দিতে হয়।

অনেকক্ষণ টেলিফোনের রিসিভার কানে নিয়ে বসে থাকার পর হিটীয় একজন টেলিফোন ধরে। তার কাছে হিটীয় দফতর নাম ঠিকানা দিতে হয়। সে বায়োডাটা প্রয়োটা শোনার পর বলে, ধরেন দেখি আপা বাসায় আছে কিনা। খুব সন্তুষ্ট ক্ষী।

আজো তাই হল। ফর্স্ট রাউন্ড শেষ করে আমি সেকেন্ড রাউন্ডে উঠলাম। পুরুষ কঠ বলল, কার সঙ্গে কথা বলবেন ঝুপা আপার সঙ্গে?

আমি বিনীত ভঙ্গিতে বললাম, ছিঃ।

'আমার নাম?'

'সিমেন্স মেরিকান্সর?'

'কি বলতেন? কি কান্সর?'

'মেছকান্সর।'

'আমার পরিচয়?'

'আমি ধর্মস্তু মাওলানা এজাজুল কর্বীর সাহেবের পিএ। ধর্মস্তু আপার সঙ্গে কথা বলবেন। বিশেষ প্রয়োজন।'

'সাহিদে থাকুন দিছি।'

'একটু তাড়াতাড়ি করতে হবে। জোহরের নামাজের টাইম হয়ে গেছে মন্ত্রী সাহেব নামাজে দাঁড়াবেন।'

ছিঃ দিছি।

'একটা সেকেন্ড আপার নাম তো ইয়াকুব তাই না?'

তদ্বলোক হতজে গলায় বললেন, ছিঃ। আপনি কি করে জানেন।

আমি হাই তেলার মত শব্দ করতে করতে বললাম, আমাদের সব পৌঁজ-খবর রাখতে হয়। জুমার নামাজ পঢ়া হচ্ছে দিয়েছেন ব্যাপার কি?

টেলিফোনের ওপাশ থেকে বিড় বিড় জাতীয় শব্দ হচ্ছে। ইয়াকুব সাহেবের বিশ্ব আকাশ শৰ্প করেছে।

'স্যার একটু ধরেন আপাকে দিছি।'

'চার কলমা জানেন?'

'প্রথমটা শুধু জানি।'

'চারটা কলমাই শিখে রাখবেন। পরে আবার ধরব।'

ছিঃ আছে।

ঝুপা টেলিফোন ধরেই বলল, কে হিমু?

আমি বললাম, হ্যাঁ।

'সবার সঙ্গে তামাশা কর কেন? ইয়াকুবকে উন্টাপান্টা কথা বলছ কেন?'

'উটপাস্টা কথা তো কিছু বলছি না। চার কলমা মুখ্যত করতে বলেছি।'  
'ওর নামই বা জনতে কিভাবে'

'আদাজে তিল ছুঁড়েছি। তিল শেগে গেছে। আজকাল যে কোন লোকের সঙ্গে কথা হলে পথমেই জনতে চাই — তার নাম কি ইয়াকুব? কেন জনতে চাই বলব?'  
'নিশ্চয়ই উট্টট কোন কারণ আছে। আমি এখন আর উট্টট কিছু শুনতে আগ্রহী না। তোমার উট্টট আচার-আচরণ এক সময় ভাল শাগতো। একটা বয়স থাকে যখন বিভাগ হতে ভাল লাগে। সেই বয়স আমি পার হয়ে এসেছি। হিমু শোন, আমার বয়স তোমার মত একটা জায়গায় রিয়ে হয়ে নেই। আমার বয়স বাড়ছে।'

'আমারো বয়স বাড়ছে। আমি এখন আর আগের হিমু না। পরিবর্তিত হিমু।'

'তাই খুবি!'

'হ্যাঁ তাই। এখন আমার মধ্যে পাখিদের বভাব দেখা যাচ্ছে। সকা঳ হলে পাখিদের মত ঘরে ফিরে আসি। গত দু'টা পূর্ণিমায় আমি ঘর থেকে বের হইনি।'

'আজ্ঞা।'

'শুধু তাই না, আমি ঠিক করেছি বিয়ের কথাবার্তা অনেকদূর এগিয়েছে। মেয়েটার নাম তামান্না। নাম সুন্দর না?'

'হ্যাঁ, নাম সুন্দর।'

'চেহারা ছবি তোমন না। বেশ খানিকটা ভাট্টে। তা আমার মত ছেলেকে ডাউন মেয়েরাই তো বিয়ে করবে। আর মেয়েরা কেন করবে?'

'তাও ঠিক।'

'ভাবছি তামান্নাকে নিয়ে একদিন তোমার বাসায় যাব।'

'শ্রীজ দয়া করে এই কাজটি করবে না। তোমার কেন কর্মকালের সঙ্গে আমি নিজেকে জড়ত্বতে চাই না। এবং আমি খুব খুশী হব যদি তুমি এই মেয়েটিকে আর বিভাস না কর।'

'তুমি ভুল করছ কুণ। আমি তামান্নাকে মোটেই বিভাস করছি না। বরং সেই আমাকে বিভাস করছে।'

'হিমু আমি এখন রাখি। আমার কথা বলতে ইচ্ছা করছে না। আমার শরীর তাল না, ঝুর। গায়ে রাখের মত হয়েছে।'

'দেখতে আসব?

'না। রাখি কেমন?'

কপা খুব সহজভাবেই টেলিফোন নামিয়ে রাখল।

আমি টেলিফোন রেখে জগলু ভাইয়ের দিকে তাকিয়ে মধুর ভদ্বিতে হাসলাম। জগলু ভাই বগলেন, হিমু সাহেবের কিছু পেমেন্ট করবেন না। আপনার তো মেলা জয়ে গেল। একটা একটা করে বালি জয়ে মরহুমি হয়ে যায়।

আমি আনন্দিত গলায় বললাম, মরহুমি বয়েই মরহুমানের খেজ থাকে। এক সঙ্গাহের মধ্যে সব ক্ষিয়ার করে দেব। কৃতি হাজার টাকা পাওছি।

'চা থাবেন?

'চা তো থাবাই। ভাল কথা, আপনার কর্মচারীদের মধ্যে ইয়াকুব নামে কেউ আছে?'

'কিম্বা।'

'তাদের আয়োজ্য-বজনদের মধ্যে ইয়াকুব নামে কেউ আছে?'

'জানি না, মেজ নিয়ে দেব।'

'ভাল করা হোজ নেবেন। আপনার মুখ এমন শকনো কেন? শরীর ভাল।'

'কিং প্রীতির ভাল।'

'মন খারাপ। খুবই খারাপ।'

'ব্যবসা হচ্ছে না?'

'না।'

জগলু ভাই সীর্ধনিংশ্বাস ফেললেন। ঝালত গলায় বগলেন, বাবা কিছু ক্যাশ দেখে দিয়েছিল বলে ডেবে থাকি। ক্যাশ শেষ হলে কি হবে জানি না। আপনার মত হৃদয় পাঞ্জাবী পরে পথে পথে ঘূরতে হবে। তাণ্য, বুখলেন হিমু ভাই, সবই তাণ্য।

জগলু ভাই বিমর্শযোগে চায়ে চুমুক দিছেন। জগলু ভাইয়ের দোকানের নাম সুয়ামা ষ্টেশনারী। রাস্তার মোড়ে বেশ বড় দোকান। জিনিসপত্র ভালই আছে। দোকানটা দেখতেও সুন্দর। দু'জন কর্মচারী আছে। সুর্যন, কথাবার্তায় ভর। অথচ এই দোকানে কেন কাস্টমার আসে না। আসলেই আসে না। জগলু ভাই এর আগে কলাবাগানে একটা দোকান দিয়েছিলেন — সাগর ষ্টের। সেখানেও একই অবস্থা। আশপাশে সব দোকানে ভাল বিক্রি— সাগর ষ্টেরে। মছিও উড়ে না যে কর্মচারীরা মাছি মারবে। জগলু ভাই দোকানের জায়গা বদলালেন। কোন লাভ হল না। এখানেও এই অবস্থা। সব দোকানে রঘবমা ব্যবসা — তারটা ফৌকা।

'হিমু সাহেবে!'

'কিং?'

'ভাগটা কেমন জিনিস দেখবেন? আমি সারাদিন চুপচাপ বসে থাকি, তা খাই আর মনে ভাগ্য কি সেটা ভাবি। মেন আমার দেকানে লোক আসবে না? আমি জিনিসের দাম বেশি রাখি না, কাষ্টমারের সঙ্গে তাল ব্যবহার করি। তারপরেও এই অবস্থা কেন? বড় ধরনের শীর-ফরিদ গেলে তেকে জিজেস করবাম। আপনার সঙ্গানে কেন পীর-ফরিদ থাকলে নিয়ে আসবেন। উনাদের সেয়াতে যদি কিছু হয়। খরচপাতি যা লাগে আমি দিব। কথটা মনে রাখবেন হিমু সাবের।'

'ছি মনে রাখব।'

'চা কি আরেকে খাব খাবেন?'

'ছি না। আজ উঠি, কাজ আছে।'

'বসেন গুৱ করি। চুপচাপ বসে থাকি — কথা বলার মান্য নাই।'

'আরেক দিন এসে গুৱ করব। আমার প্রচুর কাজ — একটা লোকের সঙ্গান করাই। নাম ইয়াকুব।'

'ওখু নাম দিয়ে লোক খুঁজে বের করে ফেলবেন? এক কোটি লোক থাকে ঢাকা শহরে।'

আমি উঠি দৌড়াতে দৌড়াতে বলগাম, চেষ্টা করে দেবি।

'বুগুরে চলে আসুন। আজ শিউড়ি রাখতে বলেছি। আমার কাজের ছেলেটা ভাত—মাছ রাখতে পারে না, যিছেড়ি পেলাও এইসব তাল রাখে।' দেবি সময় পেলে চলে আসব।'

আমি আবারো পাশে নামলাম। পায়ের ভাঙা নথ কঠ দিছে। মানুষের দু'টা অংশ শরীর এবং মন। মন অনেক কষ্ট সহ্য করতে পারে। শরীর কেন পারে না? শরীরের বয়স বাড়ে। মনের বাড়ে না। জড়া শরীরকে ধাঃ করতে পারে। মনকে পারে না। শরীরের মৃত্যু আছে মনের কি অবস্থা? যে মন জড়াতে জয় করতে পারে সে নিশ্চয়ই মৃত্যুকেও জয় করতে পারে। এই জাতীয় দর্শনিক চিন্তা করতে করতে এগছি।

রাস্তায় পচার মানুষ। তাদের ব্যক্তাও দেখার মত। রাস্তার পাশে চায়ের দেকানে বসে যে চা খাচ্ছে সেও ব্যাট। হির হয়ে চা খাচ্ছে না, সারাক্ষণ এন্দিক-এন্দিক তাকাচ্ছে। এদের মধ্যেই লুকিয়ে আছে রহস্যময় ইয়াকুব।

দাকা। শহরের মানুষদের ঠিকঠাক পরিসংখ্যান থাকলে দেখা যেত এই শহরে যোট কঠজন ইয়াকুব আছে। তিন থেকে পাঁচ হজার থাকার কথা। এদের মধ্যে কেউ কেউ নিশ্চয়ই অস্থির নিতবান। কেউ হতারিদ। দু' একজন পাওয়া যাবে সাধু সুত — মহাশূন্যের পর্যায়ের, কয়েকজন নিশ্চয়ই ত্য়ৎকর অপরাধী—

খুন্টান করে ফেলেছে। কিছু থাকবে রেশিট। ন' দশ বছরের বালিকা রেপ করে লুকিয়ে আছে।

ঢাকা শহরের সব ক'টা ইয়াকুবকে একত্ব করে একটা ধূপ ছবি তুলতে পারলে তাল হত। এদের নিয়ে গবেষণাধর্মী একটা বইও লেখা যেত —

A comprehensive study in the lives of  
Yakub's of  
Dhaka city.

বাংলা—'ঢাকা শহরের ইয়াকুবদের জীবন চর্চা।' না বাংলা নামটা তাল  
লাগছে না। গবেষণাধর্মী বইয়ের নাম ইংরেজিতেই তাল খুলে।

গুরম লাগছে। শীতকালের মোস খব কড়া হয়। রোদটা জামা-কাগড় তেন  
করে চামড়ার ডেতের চূকে পড়ে। রোদ থেকে ছায়াতে পেলেই লাগে ঠাণ্ডা।  
শীতকাল হল এমন এক কাল যে কালে রোদেও থাকা যায় না, ছায়াতেও থাকা  
যায় ন।

অমি ডিস্কুক মেছকান্দর মিয়ার সঙ্গানে বের হলাম। আজ সতোরে তারিখ  
এই খবরটা তামা জানানো সরকার। বেচরা তারিখ জানতে চাঙ্গিল। যে পাদের  
আমাকে ব্যাথ দিয়েছে তাকেও দেখে আসতে ইচ্ছা করছে। অগৎ অতি রহস্যময়।  
কে জানে একদিন হাত বৈজ্ঞানিকরা বের করে ফেলবেন জড় পদার্থের মন  
আছে। তাদের জীবনেও আছে আনন্দবেদনার কথা। আমার বাবা তার জবেদা  
খাতায় লিখে গেছেন

"মহাপ্রাণ নানান উঙ্গিতে নিজেকে প্রকাশ করেছেন। তিনি মানুষ হিসেবে  
নিজেকে প্রকাশ করেছেন, পশ কীটপতঙ্গ হিসেবেও নিজেকে প্রকাশ করেছেন।  
গাছপালাও মহাপ্রাণেরই অংশ। নদী, সাগর, বালি ধূলিকণ্ঠেও তিনি নিজেকে  
প্রকাশিত করেছেন। বিশ্বব্রহ্মাণ্ডের সর্বলাই মহাপ্রাণের নানান ঝুঁপাতুর।"

আমার শিতার কথা সত্য হলে পাথরেও প্রাপ থাকবে। যেহেতু সে পাথর  
তার প্রাপ হবে কোমল। সে মানুষকে বাথা দিচ্ছে চিকই বিস্তু নিজে সেই কারণে  
অনেক বেশি কষ্ট পাচ্ছে।



'কে হিম না?'

আমি ধর্মকে দোড়লাম। পায়ের পাতা গরমে ঢিঢ়িড় করছে। এক জ্যাগায় নাড়িয়ে থাকা ভয়াবহ ব্যাপার। শৌভকল এখনো শেষ হয়নি। অথচ দিনের বেলায় চৈত মাসের গতম পড়ছে। আলনিনোর এমেষ্ট হবে। রাস্তার পিচ এখনো গলা শুল্ক করেনি। তবে মনে হচ্ছে করবে। ভরদুয়ের হলো কথা ছিল। বেলা চারটার মত বাজে। বিকেল সত্ত্ব হয়েছে। এখনো এত গরম।

'কথা বলছিস না কেন? তুই হিম না?'

আমি বলতে যাইলাম—'তুই না। রংবার না।' বলা হল না। এমন তো হচ্ছে পারে যে পশু করছে—তাকেই আমি ঝুঁজি। তার নামই ইয়াকুব। বাবা নাম সোলায়মান। আমার অনুসন্ধানের অন্তরিক্ষতায় মুঠ হয়ে গত অলমাইটি তাকেই আমার কাছে পাঠিয়ে দিলেছেন। আমি প্রশ্নকর্তা দিকে তাকাবাম। প্রশ্নকর্তা মিডিয়ম সার্কেজ পরিদেশে কাছাকাছি। টক্কেতে লুল শার্প গায়ে দিয়ে আছেন। তার বিশাল তুরী শার্প ছিড়ে যে কেনে মুক্তেও বের হয়ে আসবে বলে মনে হচ্ছে। মাথা পরিকার করে কামাতো। নেট্ট পরিয়ে হেঁচে দিলে জগপানী স্মৃতি কৃত্তিম হয়ে যাবে। জগপানীদের সঙ্গে চেহারার খনিকটা মিলও আছে। নাক চ্যাপ্টা। চোর ছেট ছেট। এর নাম ইয়াকুব হবার কেন কারণ নেই।

প্রশ্নকর্তা আহত গলায় বলল, মাই ডিয়ার ওড ফ্রেণ্ড, তুই কি এখনো আমাকে চিনতে পারছিস না?

আমি বললাম, না এখনো চিনতে পারিলি। তাতে কোন অসুবিধা নেই। তুই আছিস কেমন সেন্ট? শীরীটা তো মাশালাই ভাল বানিয়েছিস।

প্রশ্নকর্তা বিষণ্ণ গলায় বলল, কেউ আমাকে কিনতে পারে না। তোর সঙ্গে কিশোরী মোহন পাঠশালায় গড়তাম। আমি অরিফ। অরিফুল আলম জোয়ারী। এখনো চিনতে পারিসনি!

'না।'

'চোনা কি লাগছে? না তাও লাগছে না?'

'তাও লাগছে না। অবশ্য শুরুতে তেবেছিলাম—তুই ইয়াকুব!'

'ইয়াকুব কে?'

'ইয়াকুব হল সোলায়মানের ছেলে।'

'সোলায়মানটা কে?'

'জা দে, চিনতে পারিব না। কেমন আছিস বল?'

'দেন্ত সত্ত্ব করে বল তুই এখনো আমাকে চিনতে পারছিস না?'

'না।'

'চিনতে না পারলে এমন আন্তরিক্ষতাকে কখা বলছিস কেন?'

'তুই আন্তরিক্ষতাকে কথা বলছিস দেখে আমিও বলছি।'

আরিফুল আলম জোয়ারীর গলা নিচ করে বলল, ক্লাস ফোরে পড়ার সময় ক্লাস ছুটি হয়ে গেল। একদিন বেছিতে 'ইয়ে' করেছিলাম। যার জন্যে টিফিনের সময় ক্লাস ছুটি হয়ে গেল। অকেন্দ্র আমাকে ভাবতেন—'ব্যাঙ্গাটি'।

আমি ইত্তেক্ষণে আরো আরো ব্যাঙ্গাটির এই অবস্থা?

ইউনিভার্সিটির পুরানো বস্তু সঙ্গে দেখা হলে মুখ হাসি হাসি করে ঝিঙেস করা হয়—'তারপর কি খবর ভাল আছে? এখন কি করছেন?' কলেজের পুরানো বস্তু সঙ্গে বলা হয়—'আরে তুমি? কেমন আছ?' আর সুল লেতোলের বস্তু সঙ্গে দেখা হলে—একজন আরেকজনের উপর ব্যাঙ্গাটির পাড়ে—তাই নিয়া।

আমি ব্যাঙ্গাটির উপর বীপ দেব কি দেব না তা বাবছি। বেচারা যেতাবে কঞ্চপ চোখে তাকিয়ে আছে মনে হচ্ছে আমার বাঁশের অপেক্ষা করছে। বীপ দেয়াই মশুর করবাম।

মূল হাতেও তাকে ঠিক জড়িয়ে ধরা গেল না। ব্যাঙ্গাটি ধরা গলায় বলল, দেখ গরমের মধ্যে জড়াজড়ি করিস না ছাঢ়। শুরীর উর্তি চার্চি। জড়াজড়ি করলে অস্পতি লাগে।

আমি বললাম, লাশক অস্থি। তোকে ছাড়ব না। তুই এমন মৃত হয়েছিস কি তাকে?

'যেমে যেমে মৃত হয়েছি সেন্ট। দিন-রাত বাই।'

'বিলি কি?'

'কেন খাব ন বল—আল্পাহপাক মানুষকে খাওয়ার জন্যেই তো সৃষ্টি করেছেন। পুরীয়ীতে যা নিচু আছে সেই মানুষের খানাদুর্বা। গুরু-মহিয়, ছাপল-তেড়া, পোকা-মাকড়, গাঢ়-গাঢ়স সবই তো আমরা আছি। বাহি না?'

'ই খাচি।'

'আমার এক চাটী হিলেন পেটে সন্তান এলেই তিনি মাটি বেতেন। মাটির চুলার তিনটা মাথা তেসে একদিন যেমে কেলেন। সেলিন রান্না হল না। রীখের কোথায় চুলা নেই। চাটীর পাশের চাটীর উপর খুব রাম করল। রোমা এতই যদি মাটি বেতে হয়—ক্ষেতে চলে যাও। আমি চোকের আজ্জল হলে তুমি দেখি বাড়িয়ে সব থেমে ফেলে। তাদের আবার মাটির ঘর-বাড়ি তো, এই জন্যে চিটাটা বেশি।'

আমি হো হো করে হাসছি। বড় হয়ে ব্যাঙ্গাটি যে এমন রসিক হবে তা বোঝা যায়নি। ছোটবেলু তার প্রতিভা বেছিতে 'ইয়ে' করে দেবের ব্যাপারেই সীমাবদ্ধ ছিল।

ব্যাঙ্গাটি হোট করে নিখেশ হেলে বলল, তোর সঙ্গে দেখা হয়ে তাল লাগছে নে দেন্ত। তুই যখন জড়িয়ে ধরলি তখন শায় কেনেই হেছেছিলাম। দেখা হলে জড়িয়ে ধরার মত বস্তু মানুষের এক দু'টা তোর মেশি থাকে না। আয় কোথাও বসে চা-টা কিছু থাই। তাল কথা, চাকরি-বাকির কিছু করাইস?

'গার্ট টাইম চাচি।'

'গার্ট টাইম চাচি ভাল রে দেন্ত। টেনেশন কর। কাজটা কি? বেতন কত? বেতন কম হলে বলিস না। তোকে লজজ দেবার জন্যে জিজেস করিস। পুরানো বস্তু সেই দাবিতে বেজেস করা।'

'অনুসন্ধানের কাজ। একটা লোককে খুঁজে বের করা। খুঁজে বের করতে পারেন কুড়ি হাজার টাকা পাব। খুঁজে না পেলে লবড়স।'

'দেন্ত চিতা করিস না। আমি তোকে সাহায্য করব। ড্রার্ট অব অনার। পুরানো বস্তুর জন্যে এইটুকু না করলে কি হয়। তাছাড়া আমার কাজকর্মে কিছু নেই। আয় কোথাও বসে চা-টা কিছু থাই। কর ওড টাইম সেক। তোর সঙ্গে টাকা-পসো কিছু আছে।'

'না। আমার পঞ্জাবীর পকেটে নেই।'

'টাকা ভাল করবেস। পকেটে দিয়েছিস। টাকা আমার কাছেও নেই। বড় টাকা দেয় না। টাকা দিলেই খাওয়া-দাওয়া করব এই জন্যে দেয় না। সে যেনে বুল ওল আমিও তেমন বাধা তেল। আমিও ব্যাঙ্গাটি—ঢাকা শহরে তিনটা জ্যাগায় ব্যাবহা করা আছে। বাকিতে খাই, মাসকাবারি টাকা দেই। চল আমার সঙ্গে একটা হাঁটতে হবে। পারবি না।'

'পুরান।'

'তোকে দেখে এমন ভাল লাগছে দেন্ত। আবার খাবাপও লাগছে। খালি গায়ে হাঁটছিস দেখে মনে বেগেছি আই এয়া হার্ট। বিক্ষ করে যে ফকির সেও স্পঞ্জের স্যার্ডেল পায়ে দেব। আর তুই হাঁটছিস খালি পারে? তুই কেন চিতা করিস না—তোকে আমি ভাল এক শোভা সামুতে কিনে দেব। প্রমিস।

টাকা ধাকলে আজকে কিনে নিতাম। জুতার দেকানে বাকি দেয় না।'

ব্যাঙ্গাটি আমাকে নিয়ে মালিবারের এক কাবার হাউসে চুক্ল। শিয়া কাবাব এও বিনারী হাসিস। সাইইবোর্ডে রোগ গটকা এক খাসির ছবি। খাসির মুটো হাসি হাসি। হাস্যমূলী ছাগল যে পেইস্টার একেছে তাকে ধন্যবাদ দিতে হয়। মানুষ ছাড়া অন্য কোন প্রাণী হাসতে পারে না বলে যে ধারণা প্রচলিত তা যে সম্পূর্ণ ভূল হাস্যমূলী ছাগল দেখে তা বোঝা যায়।

'দেন্ত কি খাবি যা যেতে ইয়ে করে তা। এটা বলতে পেলে আমার নিজেরই সোকান। মালিক আমার ভাল্লো। আপন না, পাতানো। আপন ভাল্লোর চেয়ে পাতানো কেনে তো জানিসই। জানিস না? বিবানী খাবি?'

'বিকাল দেলি বিবানী খাবি?'

'বাসি বিবানী। এগো গুড়া। গুরম করে দিবে, নাশতার মত খা। বিবানী যত বাসি হয় তত বাদ হয়—যি ভেতরে চুক্ল। মাসে নাম হয়। মাসের প্রতোক্টা আঁশ আলাদা আলাদা হয়ে যায়। আমার কথা শুনে আজ যেয়ে দেখ। একবার খেলে আর টাটকা প্রেসেল প্রেসেল করে তাকিয়ে দেলেন। শুধু বাসি পেলাও দেখে আবি।'

খাওয়ার মত খুল ব্যাপেরও যে এত দৃষ্টিন্দন হতে পারে তেলে পেলাওয়ের প্রাথিতি দানার বাদ সে আলাদা করে পাচে। হাঁড়ি চুক্ল। আনন্দে তার চোখ বৰু হয়ে আসছে। খাওয়ার মাঝখানে একটা আঁশ পেলাও করে তিবিয়ে দেলেন। গাঢ় হয়ে বলল, পেলাওরে বস হজমের সহায়ক। ডার্পেট বিবানী খাবার পর দু'টা মিডিয়াম সাইজ পেলাও তিবিয়ে দেয়ে দেলবি দেখবি আধ ঘটার মধ্যে আবার কিংবে দেয়ে। আমার অবশ্য হজমের সময় নেই।'

বিবানী পর্ব টেল ছেট। আর ছিল না।) শেষ হবার পর এক বাটি স্যুপের মত তরল পদার্থ এল। স্যুপের উপর শুলমরিচের গুড়া তাসছে। কুকুচি করে কাটা কাটা মাঝে তাসছে। আরিফ বাটির দিকে মুঠ হয়ে তাকিয়ে আছে। স্যুপের বাটির দিকে এমন মুঠ প্রেমপূর্ণ দৃষ্টিতে এর আগে কি কেউ তাকিয়েছে মনে হয় না।

আমি বললাম, জিনিসটা কি?

আরিফ গাঢ় হয়ে বলল, কাচি-রস।

'কাটি-রসা মানে? এই নাম তো আগে কখনো শনিনি!'  
'ওলিরি কি কয়ে আমার দেয়া নাম — অসাধারণ একটা জিনিস — কাটি  
বিহিয়ানীর তেল। ছাইয়ে ছাইয়ে পাতিলের নিচে জ্বা হয়। হাই প্রোটিন। খেতে  
অস্ফুত। ইঠাং একদিন আবিকার করলাম, সেও এক ইতিহাস। শুনবি?'  
'কি তোন!'

'কিসমত নামে গুরানো ঢাকায় একটা রেষ্টুরেন্ট আছে। সেখানে বিহানী  
খালি ইঠাং দেখি বাবুটি পাতিল থেকে তেল নিংড়ে ফেলে দিছে। আমি  
ভাবলাম থেমে দেখি জিনিসটা কেমন। খাবাগ হবার কথা তো না, যি প্রাণ  
গোশতের নির্ধাস, প্রাস পোলাওয়ের চালের নির্ধাস। এক চামচ মুখে দিয়ে বিশ্বাস  
বর দেষ্ট আমার কলপ্তা ঠাঙ্গা হয়ে গেল। সেই থেকে নিয়ামিত খালি। ঢেখে  
দেখবি একটু?'

'না!

'থাক, যোগা পেটে সহ্য হবে না!'

ব্যাঙাটি গজীর ভূতিতে কাটি-রসার বাটিতে চুমুক দিল। লম্বা ছমুক না,  
ধীর লয়ের ছমুক। যেন প্রতিটি বিন্দুর স্বাদ আলাদা আলাদাভাবে নিষ্কে। তার  
চোখ বেক। মাথা সামান্য দুলছে। যেন কেনন সংগীত রসিক বিহুতেনের কফিথ  
নিমফলী ভূলে।

অবিষ্ক ইঠাং চোখ খুলে গোপন কেন সংবাদ দেবার মত করে বপল,  
মিরপুরে বিহারীদের একটা দোকান আছে। খালির চাপ বানায়। এখন চাপ  
বেহেশতের বাবুটি ও বাকাতে পারবে না। তোকে একদিন নিয়ে যাব। আজই নিয়ে  
যেতোম ওরা আবার বাকিতে দেয় না। কি সব মশলা সিয়ে চাপটাকে চার পাঁ  
ফটা তিজিয়ে রাখে। তারপর তোবা তেলে তাজে। মশলার মধ্যেই কারিগরি।

'থাওয়া—দাওয়া ছাড়া অন কেন পসক নিয়ে তুই কথা বলিস না!'

'বলব না কেন? বলি তবে বলতে ভাল লাগে না। খাওয়ার জন্মে মরতে  
বসেছি। ডাক্তার জবাব দিয়ে দিয়েছে। শরীর উর্তি চর্চি, হাই স্লাড প্রেসাৱ, হাই  
কোলেষ্টেরল, লিভাৰ ডায়ামেট। ফ্যাটি লিভাৰ। কিউলীন সমস্যা। হয়ত আৱ  
বছৰখানিক বাঁচব। যাৰ জন্মে মৰতে বসলাম তাৰে নিয়ে কথা বলি। কাটি রসা  
যেয়েছি—এখন তাৰ একেষ্ট লি হয় দেখ— তাকিয়ে থাক আমার দিকে!'

আমি তাকিয়ে আছি। ব্যাঙাটি ঘামতে প্রস্তুত কৰেছে। কেটে কেটা ঘাম না,  
বৃষ্টিৰ ধারার মত ঘাম নেমে আসছে। একটা বড় ফ্লেৰ ফ্যান তাৰ দিকে দিয়ে  
দেয়া হয়েছে। পাখা ফুল স্পীডে ঘূৰতে। ব্যাঙাটি ক্লান্ত গলায় বলল, 'এই রকম  
ঘাম চলবে আধ ঘন্টাৰ মত। তাৰপৰ শৰীৰ নেতৃত্বে যাবে। তখন ঘন্টাখানিক

ভয়ে থাকতে হবে। তুই চলে যা— এদেৱ এখানে বিছানা আছে। আমি শয়ে  
ঘুমি।'

'চলে যাব?'

'অবশ্যই চলে যাবি। এই নে কাটিটা রেখে দে। বাসাৰ ঠিকানা আছে। সকাল  
পৱ চলে আপিস। তোকে স্যান্ডেল কিনে দেব। আমাৰ হাতে তো এৱা টাৰা-  
পৱসা দেব না। তোৱা দাবীতে বৰ ব্যাডেল কিনে দিতে। তুই খালি পায়ে  
হাতাহিস দেখে খুবই মনে কষ্ট পেয়েছি। ক্লান্তেৰ কত অগা-মগা-বণা কোটিপথ  
হয়ে গেল আৰু তুই খালি পায়ে হাতাহিস কৰাইস।'

'তুই কথা বলস না, হংপ কৰে থাক। কথা বলতে তোৱ কষ্ট হচ্ছে।'

'কষ্ট তো হচ্ছেই। তোৱ কেন কাৰ্ড আছে?'

'না।'

'জিজেস কৰাই তুল হয়েছে। খালি পায়ে যে হাতে তাৰ আবাৰ কাৰ্ড কি।  
যাই হোক, আমাৰটা মেলে দে। স্বাস্থাৰ পৰ বাসায় চলে আসবি। দারোয়ান চুক্তে  
না দিলে কাৰ্ড দেখবি। স্টেইট আমাৰ কাছে নিয়ে যাবে। দারোয়ানকে বলা আছে।  
অপৰিচিতদেৱ মধ্যে যায়া আমাৰ কাৰ্ড দেখাবে শধু তাকেই চুক্তে দেবে।'

'তুই কি খুব মালুমৰ পাঁটি না-কি?'

'কাটিটা দেখ। কাৰ্ড দেখপেই বুৰুবি। আৱ দেষ্ট শোন, তোকে আমি সাহায্য  
কৰব। আজি অব অনৱ। এ লোককে খুঁজে বেৰ কৰব।'

ব্যাঙাটি যাব আৰু বেলে গেল। তাকে ওই অবহায় রেখে আমি চলে  
এলাম। হাতে ব্যাঙাটিৰ কাৰ্ড। হেভলোকেৰ বদলে কাৰ্ডশেক। কিছুদিন পৰ কাৰ্ড  
কাল্পনারে আৱো উন্মতি হবে বলে আমাৰ ধৰণ। কাৰ্ড সৰকাৰী বিধিনিয়েধ  
এসে গড়বে। সাধাৰণ জনগণ ব্যৱহাৰ কৰবে সাদা রঙেৰ কাৰ্ড, সংসদেৱ  
সদস্যৱা লাল পাসপোর্টেৰ মত লাল কাৰ্ড, কোটিপতিদেৱ কাৰ্ড হবে সোনালি,  
শক্তপতিদেৱ কুপালি—। ফৰিব-মিসকিনদেৱ কাৰ্ডেৰ রঙ হবে ছাই রঙেৰ।  
তাদেৱ কাৰ্ডে প্ৰয়োজনীয় সব তথ্য থাকবে। যেমন—

মেছকান্দৰ মিয়া ভিক্ষুক
পিতা : কুতুব আলি
এক চক্ষু বিশিষ্ট (কোনা)
ব্যবসায়েৰ স্থানঃ রামপুৰা টিতি ভবন হইতে মৌচাক গোলচতুৰ
টেল মাৰ্ক : গোল পাথৰ
সৱকাৰী ৱেজিষ্ট্ৰেশন নথৰঃ ৭১৯৬৩০২/ক

সক্ষ্যবেলো ডিস্কুক মেছকান্দর মিরার অবস্থানের জ্বালাটায় গেলাম।  
মেছকান্দর আমাকে দেখে বিরক্ত ভঙ্গিতে তাকাল। আমি মধুর গলায়

কেমন আছ মেছকান্দর?

সে জ্বাব দিল না। পিচ করে ধূম ফেলল। ধূম পড়ল পাখরটার উপর।

আমি বললাম, 'মেছকান্দর আজ হল ২৩ তারিখ। তুমি তারিখ জানতে চাও। কাজেই আমি ঠিক করেছি রোজ এমে তোমাকে তারিখ জানিয়ে যাব।'

মেছকান্দর এক চোখে তাকিয়ে আছে। এমন চোখের দৃষ্টি এমনিতেই তীক্ষ্ণ হয়। আজ আরো তীক্ষ্ণ লাগছে। মেছকান্দর বিড়ি বের করে ধরাল। আমি অমরিয় গলায় বললাম, 'আমাকে একটা বিড়ি দাও তো।'

মেছকান্দর বিরক্ত গলায় বলল, 'ক্যান আমাকে ত্যাক্ত করতেছেন? আমি আপনের কি ক্ষতি করছিঃ'

বলতে বলতে সে পাথরের উপর আবার ধূম ফেলল। আমি বললাম, 'পাথরের উপর ধূম ফেলে না। আমি ঠিক করেছি এই পাখরটা আমি আমার এক বৃক্ষে উৎসরণ দেব। সে সৰ্বস্তুক হাতুড়ি দিয়ে পাখর ডেকে টুকুরা টুকুরা করে সে খেয়ে ফেলবে। একটু সিরকা দেবে, কিছু লবণ, কিছু শোলমরিচ। পাথরের চাটনি।

মেছকান্দর কঠিন চোখে তাকিয়ে আছে। তার হাতের বিড়ি নিন্তে গেছে। বিস্তু চোখে আগুন ঝুলছে। আমি পাথরের উপর বসে পড়লাম। সন্ধ্যা হচ্ছে। পাথরে বসে সকার দৃশ্য সেখানে তাল লাগার কথা। মেছকান্দরের মুখ ভর্তি ধূম। মনে হচ্ছে পাখরটা সে ব্যবহার করে ধূম ফেলার জন্যে। আমি পাথরে বসে থাকায় সে ধূম ফেলতে পারছে না।



আমি ইয়াকুব সাহেবকে স্বপ্নে দেখলাম। ভদ্রলোকের কেমন মমি মিহেরা। তার চোখেও কোন সমস্যা আছে। সারাক্ষণ পিটপিট করে চোখের পাতা ফেললেন। শবাসনের মত শিরপোঁতা সোজা করে আমার বিছানায় বসে আছেন। খালি গা, গা বেসে যাবে নাহচে। অথবা শীতকাল। আমি চাদর পায়েই স্বপ্নের তেজের কীপিছি। ইয়াকুব সাহেব মাঝে বড় বড় নিঃশ্বাস নিছেন। খালি পাহারের কারণে তার পাঞ্জিরের বের হাত দেখা যাচ্ছে। পাঞ্জির বের করা বৃক্ষের ঘূর্ণির সঙ্গে কিছু সিল আছে। বৃক্ষদেরে কানের মধ্যে বড় বড় কাল। টানা টানা চোখ।

আমি বললাম, ইয়াকুব সাহেব সাহেবে না?

বিস্তু বললেন, স্তু জনাব। আমার নাম ইয়াকুব।

'আপনাকে কি দিন ধোরেই খুজে বেঢ়াচ্ছি। কেমন আছেন?'

'কৃত তাম।'

'যান করছিলেন নাকি?'

'অনেকটা সে রকমাই।'

'সরি, আপনার ধান ডাঙ্গালাম।'

'না, ঠিক আছে।'

'আপনি আপাল ইয়াকুব তো? আপনার বাবার নাম কি?'

'বাবার নাম শ্রী সোলামান।'

'নামের আগে শ্রী বসাছেন কেন? আপনি মুসলিমান না?'

'স্তু না। আমাদের মানব র্মাঁ।'

'ও আছে, মানব র্মাঁ।'

'যাবার ধর্মে নামের আগে শ্রী বসানো যায়, আবার জনাবও বসানো যায়।

আপনার যা তাল লাগে তাই বসাতে পারেন।'

'জনতাম না।'

৫২

৫০

'ইয়াকুব সাহেবের ধ্যানস্ত হয়ে পড়লেন। ঢোক বন্ধ। আমি ইতস্তত করে বললাম, ধ্যান করে কিছু পাচ্ছেন?'

'কিছু পাওয়ার জন্যে তো ধ্যান করছি না। মনের শান্তির জন্যে ধ্যান করছি।'

'শান্তি পাচ্ছেন?'

'এখনো পাচ্ছি না, তবে পাব।'

'ইয়াকুব সাহেবে!'

ক্ষি!

'আপনার ঠাণ্ডা লাগছে না?'

'কিছু একটু লাগে।'

'আমার চাদরটা কি আপনার গায়ে জড়িয়ে দেব?'

'দিতে পারেন। তবে আপনার তো ঠাণ্ডা লাগবে।'

'ঠাণ্ডার আমার কষ্ট হয় না। ঠাণ্ডা সহ্য করার প্রয় আমাকে আমার বাবা শিখিয়ে দেচ্ছে।'

'মুর্তো কি?'

'আপনাকে বলা যাবে না। শুরুযুৰী শুষ্ট বিদ্যা। আপনাকে বললেই বিদ্যা চলে যাবে।'

'তাহলে বলার দরকার নেই। চাদরটা পায়ে জড়িয়ে দিন। তাল ঠাণ্ডা পড়েছে।'

'এত ঠাণ্ডা জানে খালি গায়ে ধ্যানে বসতাম না। মিসটেক হয়ে গেছে।'

আমি ইয়াকুব সাহেবের পায়ে চাদর জড়িয়ে দিলাম। ব্যবেশ মধ্যেই শীতে আমার নিজের শীরীর জন্মে গেল এবং আমি জেগে উঠে দেখি গায়ের লেপ মেঝেতে পড়ে আছে। আমি ঠিককর করে কাপাই। এ বছরে আবহাওয়ার কোন ঠিক ঠিকনা নেই। ক'নি আপনোই গুরু হলি — এখন আবার শীত নেমে গেছে। ভয়বেহ শীত। শীত থবাই চলেছে। ব্যবেশের স্বাস্থ কাপড় করে থাকবে। নেতৃদেশ ধূ সুবিধা হয়েছে। করণ মুখ করে — সদস্যাষ্ট লঞ্চ টার্মিনেল, গাবতলীতে, কমলামুর রেল টেক্সেনে শীতের কাপড় বিলি করতে পারেন। সেই ছবি টিভিতে দেখানো হচ্ছে। পরিকায় সচিত্র সংবাদ ছাপা হচ্ছে। ছবির ক্যাপশন—

শীতার্ত মায়ের মুখে হাসি

দেখা যাচ্ছে মা একজন খালি গায়ের শিশুকে নিয়ে দাঢ়িয়ে আছে। মা এবং শিশু দু'জনের মুখ ভর্তি হাসি। দু'জনই ব্যবেশের দিকে হাত বাড়িয়ে আছে।

সবাই খুশি। নেতা খুশি তিনি কমল দেয়ার সুযোগ পাচ্ছেন। মা এবং শিশু

মেরে থেকে লেপ তুলতে দিয়ে আমি হোটেক্ট একটা শকের মত পেলাম। আমার ঘরে বাই-এ-চেইস বছরের একটা মেয়ে। পায়ের কারের মেয়াদে চুপচাপ বসে আছে। মেয়েটা পিটেন্টে একটা শাড়ি পরেছে। সীমের জন্যে মাথার কার্ফ বীধ। মেয়েটিকে সুন্দর দেখাতে বললে ভুল হবে — অপূর্ব লাগছে বললেও কম বলা হয়। ব্যপ্ত দৃশ্যের মেয়েরেই এত সুন্দর হয়। একটু আগে স্বপ্নে ইয়াকুবকে দেখাচ্ছি — এই মেয়েটিকেও ব্যপ্ত দেখছি না তো। আজ বোধহয় আমার হ্যান্ড দেখাবে দিন। না শুধু না, মেয়েটির গা থেকে সেন্টের গুরু আসছে। ব্যপ্ত দৃশ্যে গুরু থাকে না। মেয়েটা চোখ ভর্তি বিষয়। স্টো চেপে সে হাসছে। ঘুমের মধ্যে আমি হস্তাক্ষর কোন কান কেবলেই কী-না কে জানে।

শীত চেরাবার মেয়ে। নিশ্চয়ই কোন বাড়ি বড় মেয়ে। এনেককুলি ছোট ছোট ভাই-বোন আছে। ভাই-বোনগুলি দুটি। এদের সবাইকে সামলে-সুমলে রাখতে হয়। এ ধরনের বাড়ির বড় মেয়েদেরে চেহারা এ রকম হয়। এরা মেয়ের স্বপ্নেই খুবই তাল, শুধু সমস্যা একটাই — এরা সবাইকে হোট ভাই-বোনের মত দেখে।

আমার যদি যুব তেলে না যেত — আমি নিশ্চিত সে মেয়ে থেকে লেপ তুলে আমার পায়ে দিতে। মাথার নিচের বালিঙ ঠিকঠাক করে দিত। আমি মুক্ত চিতা করার চেষ্টা করিছি। মেয়েটা কে হতে পারে? নিশ্চয়ই আমার পরিচিত। পরিচিত না হল ঘরে তুকনে না। নেতৃজো খেলা থাকতেও উভয় দিয়ে দেখেই নেরজাহ টোকা দেবে। ঘরের বাইরে থেকে সাড়াশব্দ করে যুব ভাসাবার চেষ্টা করবে। মেয়েদের স্বপ্নকর্ক সবার ধারণ তারা যুব ধৈর্যশীল। আসলে তা না। মেয়েরা ধৈর্য ধৈর্য মেশিনগুরু করতে পারে না। বৰু নেতৃজোর সমাজে দাঢ়িয়ে হেলেরা থেকানে দু' তিনিবার কলিং বেল টিপবে — মেয়েরা সেখানে কলিং বেল টিপে মেঝে থাকবে।

মেয়েটি হাসিমুখে বলল, আপনি বোধহয় আমাকে দেখে যুবই বিশ্বিত হচ্ছেন। ভাবছেন কে-না কে? অভদ্রের মত ঘূর্ণত মানুষের ঘরে বসে আছে।

আমি লেপ দিয়ে গা ঢাকতে ঢাকতে বললাম, আমি মোটেই বিশ্বিত হচ্ছি না। আপনাকে দেখে তাল লাগছে।

'অপরিচিত একজন মানুষ ঘরে তুকনে বসে আছে, তারপরেও বিশ্বিত হচ্ছেন না?'

'না। কাবণ আপনি মোটেই অপরিচিত নন — আপনি হচ্ছেন তামান্না। ফাতেমা খালার পি.এ।'

মেয়েটা নিজেই এবার বিশ্বিত হয়ে বলল, 'যুবলেন কি করে?'.

৫৪

৫৫

'আমার আধ্যাতিক ক্ষমতা আছে। সেই ক্ষমতা দিয়ে টের পাছি। খালা  
অপনাকে আমার অঙ্গীকৃক ক্ষমতা সম্পর্কে কিছু বলেনি!'

'করছেন!'

'আপনি বিশ্বাস করেননি!'

'কিন্তু না!'

'এখন কি করছেন?'

'অখনো করছি না। আপনি অনুমান করে বলেছেন আমি তামাঙ্গা। এমন কোন  
জটিল অনুমানও না। সহজ অংক। দুই দুই-এ চার।'

'ঠিক বলেছেন। আমার নিজেরো ধারণা আমার কোন ক্ষমতা নেই। তবে  
অনেকের ধারণা খুব প্রবলভাবেই আছে। আপনার ম্যাডাম অর্ধাং ফাতেমা খালা  
তেরে যথে একজন!'

'আমি ম্যাডামের একটা চিঠি নিয়ে এসেছি।'

'আপনাকে পাঠালো কেন? খালাৰ টাই পৰা ম্যানেজার কোথায়, বুলবুল  
ভাইয়া!'

'উনি আছেন। ভাবগৱেও আমাকে পাঠিয়েছেন। নিশ্চয়ই কোন একটা উদ্দেশ্য  
আছে। যাই হোক, এই নিন চিঠি। আপনি চিঠি পড়ুন, আমি জলালাম।'

'চিঠি শেষ না হওয়া পর্যন্ত বসুন। হয়ত চিঠিতে জরুরী কিছু আছে।  
আপনাকে দিয়েই জ্ঞান পাঠাতে হবে।'

'আজ্ঞ আপনি চিঠি পড়ুন, আমি বসছি। আপনি কি দরজা খোলা রেখে  
চুলাল? চোর চুকে না?'

'চুকে। আমাৰ ঘৰেৰ জিনিসপত্ৰ দেখে লজ্জা পেয়ে চলে যায়। চোৱদেৱও  
কিন্তু চুক্ষ লজ্জা আছে।'

'ঘৰ খোলা রেখে মুহামান কেন? চোৱদেৱ লজ্জা দেবাৰ জন্মে?'

'তা না। আমাৰ বাবা আমাকে খোলা মাঠে ঘুমুতে বলেছেন। খোলা মাঠেৱ  
বিকলৰ হিসেবে খোলা ঘৰ।'

আমি চিঠি পড়া শুরু করেছি। তামাঙ্গা আড়চোখে আমাকে দেখছে। মনে  
হচ্ছে আমাৰ চিঠি পড়া দেখে সে মজা পাচ্ছে। খালা তাঁৰ দুৰোধ্য হাতেৰ বেৰায়  
লিখেছেন—

হিয়ু,

তুই যে গোলি আৰ তো দেৰা নেই। একদিন শুধু টেলিফোনে হড়বড়  
কয়ে কিমৰ বললি। মাথাৰ ঝুমায় সব বুৰুচেতো পারলাম না। ইয়াকুবকে  
বৌজোৱ বাপারে কি কৰিছিস আমাকে জানাবি না? না—কি ভুলেই পোছিস যে,

তোকে একটা দাঙিত্ব দিয়েছি? তোৱ চশমা, চাদৰ, নতুন পাঞ্জাবী সব তো  
ফেলে গৈল।

এদিন একটা ভুলও কৰেছি — ইয়াকুবকে খুঁজে বেৰ কৰাৰ জন্মে  
তোকে কিছু থৰত দেৰ বলে তোৱে রেহেছিলাম। সেদিন যাবাৰ সময় তুই  
এমন তাড়াহড়া শুরু কৰলৈ যে বৱৰ দেৱাৰ কথাটাই মাথা থেকে দূৰ হয়ে  
গৈল।

তুই বৰি সোম এই দু দিন বাস দিয়ে যে কোন একদিন চলে আয়।  
ম্যানেজারকে না পাঠিয়ে ইছে কৰে তামাঙ্গাকে পাঠালাম। যাতে তোৱ সঙ্গে  
পৰিষ্কাৰ হয়। কোশলটা ভাল কৰিন্ব মেয়েটাকে নিশ্চয়ই তোৱ পছন্দ  
হয়েছে। গুৰু হৰাৰ মতই মেয়ে। দেখতেও খুব সুন্দৰ তাই না? শুঁটা শুঁ  
যদি আৰ এক শোক সামৰ হত তাহেৰে আৱ চোখ মেৰানো যেত না।  
মেয়েটা যে এত সুন্দৰ এটা তোকে ইছে কৰেই আপে জানাইনি। বৰং  
ইচ্ছা কৰে বলাই মেয়েটা ডাউন টাইগ। আগে জানিয়ে বাবালৈ তুই  
কৰন্নায় উৰ্বৰী বা মেনকা তোৱে রাখতি। তখন আৱ তামাঙ্গাকে এখন যত  
সুন্দৰ লাগত তত সুন্দৰ লাগত না।

হিয়ু, তোকে আঢ়াৰ দেৱাই লাগে তুই এমন কিছু কৰিস না যেন  
মেয়েটা কিমিনেৰে জ্ঞান তোৱে পঢ়ি বিবেগ হয়ে যায়। তোৱ আচাৰ-  
আচাৰে, কথাবৰ্তী কিছুই ভাল না। তোৱ টাইপেৰ হেলেনেৰ কাছ থেকে  
মেয়েৱা একশ হাত দুৱে থাকে। কাবেই ইচ্ছা বিকল্প হলোও মেয়েৱা  
যেসব অচৰণ গুহ্য কৰে সে রকম আচাৰণ কৰিব।

আৰ বিড়াল ভাইজেষ্টৈ পড়েছি মেয়েৱা এটেলেনাম খুব গুহ্য কৰে।  
তুই এমন তাৰ কৰিবি যেন তামাঙ্গাৰ ধাৰণা হয় তুই তাৰ দিকে খুব  
এণ্টেলাম লিছিস। তোৱ ফাজলামি ধৰনেৰ রসিকতাগৰ্তি অশুধি কৰিবি  
না। মেয়েৱা রসিকতা গুহ্য কৰে না। এটাও রিভার্স ভাইজেষ্ট পড়েছি।  
মেয়েৱা সিৰিয়াস টাইপ খুৰু গুহ্য কৰে। যাবা রসিকতা কৰে মেয়েৱা  
তাকে ছাকলা কৰে।

আমি যা বৰাবি তোৱ ভালোৱে জ্ঞানোই কৰাই। তোৱ খালু তোকে খুব  
পছন্দ কৰতো। এই জ্ঞানোই তোৱ জন্মে আমাৰ কিছু কৰতে ইছে কৰে,  
যামিং খুব তাৰ কৰেই জ্ঞান যে মেয়েৱা সঙ্গে তোৱ বিয়ে হবে তাৰ জীৱনটা  
ছাৰখাৰ হৰে যাবে।

তুই ভাল আপকিস। ইয়াকুবেৰ ব্যাপৰটা মনে রাখবি। আমি খুব  
টেনশনে আছি। এ বাটাটৰ কথা ভাৰতে ভাৰতে আমাৰ পেটে গ্যাস হচ্ছে।  
গ্যাসেৰ চিকিৎসাৰ জন্ম দেৱদেৱ বাইতে যাব। সিঙ্গাপুৰে আমেৰিকান  
হসপিটালটা নাকি খুব ভাল। আৱেকটা হসপিটাল আছে এলিজাৰেথ

হস্পিটাল। দু'টার একটায় যাব। এখনো ফাইনল করিনি। আজ্ঞা হিমু শেন, তুই কি আমার সঙ্গে যাবি? তুই তো দেশের বাইতে কখনো যাসনি। এই ঝুকে বিদেশ দেখা হব। আমি ঠিক করে রেখেছি তামান্নাকে সঙ্গে নিয়ে যাব। তুই যদি সঙ্গে থাকিস তাহলে তাহাই হয়, মাঝে মধ্যে তামান্নাকে নিয়ে শপিং কোরি। বা দু'জনে মিলে ছবি দেখিবি। এইভাবেও মেটেটার সঙ্গে তোর ভাব হতে পারে। যাই হোক, অনেক কথা লিখে রেখলাম। ভাল থাকিস।

তোর ফাতেমা খালা।

ঠিক শেষ করে আমি তামান্নার দিকে তাকালাম। সে আগের মতই মিটি নিটি করে হাসত। এবন মাথা থেকে ঝার্ফ খুলে ফেলেছে। ঝার্ফ খেলার জন্যে তাকে আরো সুন্দর লাগছে। তার মাথা ডাতি ফুলগো-ফুলগো চুল। তামান্না যদি ছেলে হত তাহলে নাপিতরা তার চুল কেটে খুব মজা পেত। গোছা গোছা চুল কাটা হবে। শব্দ হবে কচকচ।

আমি বললাম, 'আপনি ঠিকটা পড়েছেন তাই না?'

তামান্না হকচকিয়ে গিয়ে বলল, 'হ্যাঁ। দয়া করে ম্যাডামকে বিছু বলবেন না। ম্যাডাম বিশ্বাস করে এই ঠিক আমার হাতে পাঠিয়েছেন। আমি বিশ্বাসভঙ্গের কারণ হয়েছি।'

'গুড়জেন কেন?'

'ম্যাডামের সব চিটিগত আসলে আমি লিখে দেই। উনি শুধু সই করেন। এই চিটিটা উনি নিয়ে অনেক সময় নিয়ে লিখলেন। নিজেই খামে মুখ বন্ধ করলেন। খামের মুখ ঠিকমত বন্ধ হয়েছে কি-না নামান্তরে পরীক্ষা করালেন। এতে আমার কৌতুহল খুব বেচে গেল। এবং কি জন্যে জানি আমি পুরোপুরি নিশ্চিত হয়ে গেলাম চিটিগত আমার প্রসঙ্গে সেখা আছে। সেই কারণেই খুলে পড়েছি। আমার মন্ত বড় ভুল হয়েছে। আমি খুবই লজিত।'

'চা খাবেন?'

'হ্যাঁ না, চা খাব না।'

'কুরি খাবেন?'

তামান্না তাকিয়ে রইল। আমি বললাম, 'খালা আপনার প্রতি এটেনশান দিতে বলেছেন এই জন্যেই চা-কুরির কথা জিজ্ঞেস করছি।'

'হ্যাঁ না, কুরিও খাব না।'

'ঠাণ্ডা কিছু? পেপসি বা কোক কিংবা লাক্ষিজ?'

তামান্না হেসে ফেলল। শব্দ করে হাসি। হেসেই বোধহয় তার মনে হল হাসা ঠিক হয়নি। সে গভীর হতে চেষ্টা করল। মানুষের চরিত্রে তরল ভাব চলে

এলে তাকে সঙ্গে সঙ্গে কঠিন করা সহজসাধা না। মেয়েটা গভীর হতে চেষ্টা করছে, পরাহে না। আমি বললাম, 'আপনি বসুন আমি হাতবুর্খ ধূয়ে আসি। তারপর চুন মেটানিকেল গার্ডেন দেবে আসি। না-কি চন্দ্রিমা উদ্যানে যেতে চান? বিবাহপূর্ব প্রেমের জন্যে চন্দ্রিমা উদ্যান ভাল।'

তামান্না আবারো হেসে উঠল। মেয়েটা ভাল হাসতে পারে। কিংবা এও হতে পারে যে, সে যে পরিবেশে বাস করে নেবামে হসার সুযোগ তেমন নেই। অনেকদিন পর মন খুলে হাসতে পরাহে।

তামান্না এক দৃষ্টিতে আমার দিকে তাকিয়ে আছে। আমি বললাম, 'চা দিতে বলি চা খান?'

'হ্যাঁ আছা।'

'তিনি মিনিট চোখ বন্ধ করে থাকতে পারবেন?'

তামান্না আবাক হয়ে বলল, 'চোখ বন্ধ করতে হবে কেন?'

'আমি খালি গায়ে লেপের ডেতের বন্দে আছি। চোখটা বন্ধ করলে লেপটা ফেলে দিয়ে শৰ্ট গায়ে দিতে পারি। সুন্দরী একটা মেয়ের সামনে খালি গা হওয়া অসম্ভব ব্যাপার।'

'আমি আজ চলে যাই, আরেকদিন এসে চা খাব।'

'আজ ঠিক আছে।'

তামান্না উঠে দৌড়ল। মাথায় ঝার্ফ পরল। আবার বন্দে পড়ল। সে মনে হয় কর্মসূর্য কেন কথা বলবে। সিরিয়াস ধরনের কেন কথা। ছেলেরা হটহাট করে সিরিয়াস কথা বলে ফেলতে পারে। মেয়েরা পারে না। তাদের সিরিয়াস কথা বলার জন্যে সামান্য হাতেও আয়োজন লাগে। তামান্না সেই আয়োজন করছে। কি বলবে তা আমি মনে হচ্ছে আনন্দজ করতে পারছি।

'হ্যাঁ সাহেব!'

'কুি!'

'ম্যাডাম আপনার সম্পর্কে আমাকে অনেক ভাল ভাল কথা বলেছেন। আমি ম্যাডামের কথা যথেষ্ট শুভত্বের সঙ্গে নিয়েছি। ধরে নিছি উনি সত্যি কথাই বলছেন। কিন্তু....'

'আমাকে বিয়ে করা আপনার পক্ষে সম্ভব না, তাই তো?'

'কুি!'

'आमाके विये देवार नामित म्याडामके देया हयनि। उनि आगवाड़िये सेइ दायित्व केन निते चाहेन तां जानि न। विये संपूर्ण ब्यक्तिगत एकटा बापार। उनि केन आमार ब्यक्तिगत बापारे नाक गलाबेन।'

'आमि कि खालाके निमेध करे देव?'

'न। म्याडाम विरक्त हबेन। आमि किछुतेइ म्याडामके विरक्त करते चाइ न। उनि मत्तर बाहिरे दोतेइ आमार चालित ले याबे। भाई-बोन निये आमि पथे बसब। कि के करव किछु चुक्ते पाराहि ना।'

'आमि एकटा प्रामार्श देहि?

'दिन।'

'मने कबून आपनि हात्तेर माझाधाने नोका निये आहेन। दूर्घटनाय आपनार हात थेके बैठा पडे गेहे। आपनार नोकार पाल छाडा बिछु नेहि। एই अवस्थाय आपनार धक्कान करत्या हज्जे हात्तेग पाढी देया। कोधार गिये ठेक्वे दोता बडू कर्हा नय। हात्तेग पाढी देया बडू कर्हा। आपनाके ये दिके हाओरा सेदिके पाल दिये हवे। आपनार म्याडाम हज्जेन हाओरा, हाओरा येदिके बिहेहि देहि दिके पाल तुले दिन।'

'आपनाके विये करतेक बल्वेन?'

'ता बल्हि ना। खालार सब कधार याय दिये शेव पर्षत्प विहिये याबेन। वियेर पिट्ठिते वसे हठां बल्वेन — एकटू बाखरम्ये मतेहे हवे। एই बले पालर पाल।'

'रसिकता कराहि?'

'मोटौटै रसिकता कराहि ना। विये निये एकटा पातानो खेळा खेलते आमि राजि आहि।'

तामाना उठे नोडाते नोडाते बलू, 'आपनाके फोन किछुते राजिओ हतेहे न, अराजिओ हतेहे न।' आमि यदेष्टे बुझिती एकटा मेये। आमार समसारास समाधान सबसम्य आमि निजे कराहि, एथेने ताई करव।'

'हि आज्ञा!'

'आपनि त्थु दया करे एखन आपनार सहे येसब कथा हल ता खालाके बल्वेन ना।'

'हि आज्ञा!'

तामाना छान्त उत्तिते चले गेल। हठां लक्ष्य करलाम मेयेटार उपर राग हज्जे।

अधृत राग लागार तो कोन कारण नेहि। आमार अवचेतन मन कि चाहिल — एই देयेटिर सঙ्गे आमार तां होक्त? हसिंठाटा करै बल्लेव कि मनेव एकटि अंश सत्ति सत्ति चाहे ये ताके निये आमि चिन्हिमा उद्याने घाटते तेव हई।

आमार बाबा तां पुत्रेर ज्येष्ठ विविततावे ये उपदेशमाला रेखे गेहेन मेवारे बाबाराव आमारके एकटि बापारेइ सावधान करा हयेहे —

बाबा हिमालय,

हिन्दु नारी संपर्के एकटि बहु प्रचलित लोक-श्लोक आहे —

"पूजन कना।

उडल छाहि।

ठेहेइ कनार।

तुंग गाहि।"

अर्धांकनार दाहकर्य संपदा न हयो वर्षत तां गुरुकीर्तन करा यावे न। मृदुले आग्नेयहुतेऽ तां पा विहलावे पारेन। मे धरा दिते पारे प्रमोत्तनेर फादे। पा राखते पारे तोरावालिते।

एटा श्लोक मेये न, सबार ज्येष्ठ प्रयोज्य। एवं तोमार ज्येष्ठ विशेषतावे प्रयोज्य। माया थेख तात्त्वानि दिवे तथेन तोमाके रक्षा कराऱ्य ज्येष्ठ केतू थावेव न। मायाके माझ बले चिन्तेहे हवे। एই चेनाहि आसल चेन। प्रस्त्रक्रमे तोमाके आरेकांकी श्लोक वाल। श्लोकटि रुदन करेहेन चाक मूर्निं पूजू। तां जनवृत्तन तक्षशिला। तिनि छिसेन महाराजा चन्द्रुष्टेरे प्रामार्शदाता। याहि होक, श्लोकटा ए रकम —

"आहार निपा तां मैतूलानि

समानि तैतानि नूनां पृष्ठनाम।

ज्ञानी नानानामार्धिको विशेषो।"

आहार, निपा, तां येतूलानि तैतानि तां विशिष्टाता।

चालकोरेर एই श्लोक सब मानूवेरे ज्याने प्रयोज्य बिस्तु तोमार ज्येष्ठ नय। पक्ष एवं मानूवेरे तेत्रेर या समतावे विद्यमान तोमाके ता थेके आलादा कराऱ्य चेता आमि कराहि। कठटुकु फक्त हयेहि आमि जानि ना। तवे आमार धारणा — आमार साराजीवनेर साधना विफले यावे ना। तुमि सकाल पावे परम आराध्यारे।

६०

आमार निजेरे धारणा यावार साधना विफलेहि गेहे। तां पूर वर्तमाने परम आरोधारे सद्धान कराहे ना। सद्धान कराहे — इयाकुवर।

आमि हात—मूळ धूते गेलाम। आज अनेकांलि काज करते हवे। बायांचिके खुजै बेव करते हवे। बायांचिके निये त्थु हवे अतियान —

इराहेर of Yakub.

ये कोन अद्युक्तानेहि दूऱ जान थावले ताल हय। विहालये लिहारी एका उठेनी, संक्षे हिल तेविं।

दरजाय टक्कटक शक्त हज्जे। तामाना फिरे एल ना-कि? आमि आधाह निये बलालाम, 'के?'

हुक्तु गुण वेव करलू। मे कोकेव बोतल भर्ति करे चान निये एसेहे।

'कि थवर छक्कु?

'हुक्तु थवर ताल।'

हुक्तु चायेर बोतल नामिये राखलू। परोटा भाऊरी वाढी साजाते बसलू। आज देवि परोटा भाऊरी सहे डिमेर ओमेटे उक्ति दिस्ते। एहिखानेहि शेव ना। आरेकांकी वाढीते खोल जाईयी किंवा। सेथाने मूर्निं डाळावर हाडू चुव दिये आहे। आमि विशित हयेव बलालाम, 'बापार विहे?'

'बापार किंवा ना।'

'हुक्तु देवि राजावादासार यावार निये एसेहिस। कराहेस कि? दूऱ टाका हल आमार नामातर वाजेत। परोटा भाऊरी येवे बाकि सब फिरिये निये या।'

'हुक्तु लक्षित मूळे बलू, 'धान। आहिजेव खाना फिरि।'

'फिरि वेन?'

'आहिज आमि खाओयाइतेहि।'

'ताल। खोलेव मठ ए जिनिस्टा कि?'

'हुक्तु मूर्निं हुक्तु।'

हात—मूळ धूते वेवे बलालाम। परोटा हिडे मूर्निं 'चुपै' तिजिये थाहिः। छुक्तु अनेकांलि चोखे आमाके देवहेहे। गरोटांलि आसन गराव। हुक्तु तिनिस्टा देखते कुसित हलेव वेवे ताल। आमि तृती करे खेळाम। खाओया शेव करे बलालाम, 'येवे आराम प्रेयोहिये हुक्तु। एव्हन बल कि चास? वाट्टेट बलते हवे। या चाहिव ताई पावि। कि चास तुक्तु?'

हुक्तु फालकाल करै ताकिये आहे। बिछु बलते पारहेहे ना। आमि चायेरे काहे चा चालते चालते बलू, 'अशक्य ए रकम एकटा सूयोग मिस करलि। मूळ धूते किंवा चाहिलू।'

हुक्तु मन खारप करै दौडिये आहे। सञ्चवत तां धारणा हयेहे मे विराट सूयोग हेलाया हारिवेहे।

'तेव किंवा चाहिवार नेहि?'

'आज्ञा!'

'मेटा कि?'

'एकटा दोकान दिते इच्छा करै।'

'चायेरे दोकान?'

'स्त्रि ना इटिशन दोकान।'

'स्त्रि दोकानी दोकान?'

'स्त्रि। नानां पावेर वाजे माल थाकव।'

'स्त्रुल करलू, तोरेर ब्याटा थेखन चाहिवार तथेन चाहिलू ना।'

'एव्हन सूयोग आव असाव ना?'

'सूयोग तो बाव बाव आसे ना। हठां हठां आसे —'

मने हज्जे मे बेदेवे येवेहे। कीदूक। मानूष हये थेख ज्योहेहे तथेन कीदूतेते तो हवेहे।

६२

६१



মেসের ম্যানেজার থবর পাঠিয়েছে — কল্টনা কাগজে পেনসিলে লেখা —  
মোটা এ আদর্শী দেখা করতে এসেছে। সিডি তেসে দোভলায় উঠবে না। তার  
ঘরে বসে আছে। লোকটাকে ভাল মনে হচ্ছে না। এখন কি করণীয়?

আমি নিচে নেমে দেবি ব্যাঙ্গাচি। গভীর মনোহোগে বাসি থবরের কাগজ  
পড়ছে। ব্যাঙ্গাচিকে আজ আরো মোটা লাগছে। তার পায়ের শার্ট জ্বরকাল। তার  
নীল ফুল লতা পাতা সাথে খোপ আকা। সাহেবরা হাওয়াই দীপ বেড়াতে গেলে  
এ রকম শার্ট পরে। তারের বগলে থাকে রোগ। পরকাব মেরে। যে সাহেবে যত  
মোটা তার বগলের তরঙ্গী তত্ত্বাই রোগ। রোগ পটকাদের এ রকম শার্ট মানব  
না।

ব্যাঙ্গাচি আমাকে দেখে মুখ ভর্তি করে হাসল। আমি বললাম, নাশতা থেয়ে  
বের হয়েছিন?

হাঁ।

'কি নাশতা? পরোটা ক'টা ছিল?'  
'পরোটা না আটোর কাটি। দেখ পিস কাটি।'  
'বিলিস কি? ক্লাটির সঙ্গে কি?'  
'শেপে ভাজি। আধা কাপ কমলার রস।'  
'বাস আর কিছু না!'  
'দেন্ত আর কিছু না। তোর ভাবী আমাকে খেতে দেয় না। তার ধরণা থেতে  
না দিলে আমি বোধহীন আগের মত হয়ে যাব।'  
'না খেলো তুই ফুলতে থাকবি?'  
'অবশ্যই। এখন একবার ওজন নে। না খাইয়ে সাতদিন একটা ঘরে বন্দি  
করে রাখ। সাত দিন পর ওজন নে, দেখাব ওয়েট এগারো কোণি বেড়ে।'  
'সর্বাশা!'  
'সায়াক্ষণ পেটে ক্ষুধা নিয়ে ঘুরি, দোষ। ক্ষুধা কমে না। আমার জীবনের  
একটা শখ কি জানিস দোষ। একটাই শখ মনের তৃষ্ণিতে একবেলা থাব। কিন্তু

না মেটা পর্যন্ত খেয়েই যাব। মানুবের নানা রকম ভাল ব্যব থাকে — আমার  
এই একটাই ব্যব। জানি না ব্যব সত্যি হবে কিনা।'

'ইনশাল্লাহ হবে।'  
'তুই যদি কৃতি হাজার টাকা পেয়ে যাস তাহলে তাগমত একবেলা  
শাজেবি।'

'অবশ্যই খায়াব।'  
'প্রমিত করছিস তো।'  
'হ্যা, প্রমিত।'  
'তোকে আমি সাহায্য করব। জান দিয়ে সাহায্য করব। এ লোকটাকে খুজে  
বাব করব। পথেঘাটে খুজিসে হবে না। সিটেটেমেটিকালি খুজিতে হবে। প্ল্যান করে  
এস্তে হবে।'

'আয় প্ল্যানটা করিঃ'  
ব্যাঙ্গাচি চোখমুখ উজ্জ্বল করে বলল, 'চল, কোন একটা রেস্টুরেন্টে বসে  
গ্লান করি। তোর চেনা-জানা কোন রেস্টুরেন্ট আছে যেখানে বাকি দেবে?'

আমি বললাম, 'তোর এ রেস্টুরেন্ট যাই — কাটি রসা বেখানে বাস?'  
ব্যাঙ্গাচি মুখ করুণ করে বলল, 'এ বেস্টেন্ট দুপুরের আগে খুলবে না।  
গাচা টাকার একটা নোট পকেটে নিয়ে বে হয়েছিলাম — আরাম করে নাশতা  
করব। তোর ভাবী পকেট সার করে নিয়েছে। পকেটে কফ টেপ মারা এক  
টাকার একটা নেটও নেই। মাঝে মাঝে মনের দৃঢ়বে ভাবি কাক হয়ে কেন  
জ্ঞালাম না।'

'বাক হয়ে জ্ঞালে দাভটা কি হত?'  
'মনের সূর্খে ময়লা হেতুম। দাকা শহরে আর যাই হোক ময়লার অভাব  
নেই।'

ব্যাঙ্গাচি ফুস করে নিঃশ্বাস ফেলল। আমি তাকে নিয়ে গেলাম বিসমিল্লাহ  
রেস্টুরেন্টে ম্যানেজার জোবেদ আলি কোন কারণ হাঢ়াই আমার  
ভক্ত। সে চেয়ার হেডে এশিয়ে এল। আমি বললাম, জোবেদ আলি সাহেব, প্রম  
গবর পরোটা তেজে আমার বক্তুর প্রেটে ফেলতে থাকবেন। পরোটার সঙ্গে কি  
আছে? শেপে ভাজি বাদ দিয়ে যা আছে সবই দিন। যেটা ভাল লাগবে সেটা বেশি  
করে দেব।

রেস্টুরেন্টে মেটামুটি একটা হাঢ়াভিপ পড়ে গেল। ছক্কুর ডিউটি পড়ল  
আমারের খাওয়ানো। ব্যাঙ্গাচি আমার দিকে তাকিয়ে মুঝ গলায় বলল, 'দেন্ত,  
তুই তো সাধারণ মানব না। মহায়ানব। আমি খুশি হয়েছি। যা প্রমিত করলাম —

তোর এ লোক না পাওয়া পর্যন্ত আমি সাড়ি-শোফ ফেলব না। যদি সাড়ি-শোফ ফেলি তাহলে আমি বাপের ঘরের না। আমি বেজন্ম।'

আমি আবারো মৃদু হয়ে বাঙালির খাওয়া দেখছি। তখু আমি না, ছক্ষু এবং জোবেন আলিও মৃদু। এত তৃষ্ণি নিয়ে যে কেউ দেখে পাবে তাই আমার ধীরণা ছিল না। মনে হচ্ছে খাওয়ার ব্যাপারটাকে সে উপসনার পর্যায়ে নিয়ে এসেছে।

'দেস্ত!

'খাওয়া শেষ করে তারপর কথা বল।'

'খেতে খেতেই বলি। খাওয়া শেষ হতে দেরি হবে। তোর এ লোক আগে কোথায় থাকত বললি?'

'অঙ্গীশ সীপকের গোড়।'

'তাহলে আমারের অনসুস্কানের সেন্টার হবে অঙ্গীশ সীপকের গোড়। এ লোক অঙ্গীশ সীপকের গোড়ের রোডের আশপাশেই আছে।'

'বুল্লি কি করে?

'বাড়ি ভাড়া করে যাবা বাস করে তারা বাড়ি বদলালেও সেই অক্ষণেই থাকে, দূরে যাব না। যে বিকালভাবে থাকে কখনো বাড়ি বদলে কলাবাগানে যাব না। বিকালভাবে আশপাশেই ঘূর্ঘন করবে।'

'যুক্তি ভাল।'

'আমাদের খোঁজ করতে হবে মুসিন দোকানে। নাপিটের দোকানে।'

'চায়ের স্টল?'

'না, চায়ের স্টল না। বাড়ির আশপাশের চায়ের স্টলে ত্যু ব্যালোরাবা চা খায়। যার ঘর-সবলা আছে সে বাড়ি পাশে চায়ের দোকানে চা খাবে না। সে উভকে বায়েকে চা বানিয়ে দিতে বলবে।'

'এ লোকের বউ বা সেয়ে আছে বি-না তা তো জানি না।'

'তাহলে একটা সমস্যা হয়ে গেল। যাই হোক অসুবিধা হবে না। বিটের পেষ্টম্যানকে ধরতে হবে। এদের শুভিশক্তি ভাল হয়। নাম বলা মাত্র চিনে ফেলতে পারে।'

'পেষ্টম্যানের কথা আমার একবারও মনে হয়নি।'

'রেখের দেখার উচ্চ গেছে। রেখেন শপ থাকলে সমস্যা হত না। ভাল ভাল জিনিসই দেশ থেকে উচ্চ গেছে।'

বাঙালির খাওয়া শেষ হয়েছে। সে তৃষ্ণি নিঃশ্঵াস ফেলে চা দিতে বলল। তার পেটে নিশ্চয়ই এখনো ক্ষিধে আছে। তবে প্রবল ক্ষিধের সমস্যা মিটেছে তা বোঝা যাব।

'হেঠো খেয়েছি দোস্ত। তোর কাছে অনুরূপ হয়ে গেল। যাই হোক ঘণ শোধ করব, চিতা করিস না। বিষ্ণুটা নিয়ে সিরিয়াস চিতা করিব। অঙ্গীশ সীপকের রোডের পেষ্টম্যান হল আমাদের সার্কেলের কেন্দ্রবিন্দু। তারপর ধীরে ধীরে সার্কেলটা বড় করব। পাট বছর আগে হল লক্ষ্মী থেকে চট করে নেব করে সেৱা যেত। এখন আর যাবে না। ঢাকা শহরে লক্ষ্মী নেই। লোকজন এখন আর খোগাখানায় কাল্পন্ত ধৈর্য নাই।'

'এটা তো লক্ষ্মী করিনি।'

'তোর লক্ষ্মী না করতে হবে। আমি করাই। ব্যাটাকে বুজে বেব করার দায়িত্ব এখন আমার। তোর অনুরূপ শো দিতে হবে। চল উঠি, একশানে নিয়ে চিপ্পি।'

'যে খাওয়া খেয়েছিস হাটতে পারবি তো।'

বাঙালি করুণ গলায় বলল, হাততে পারব না দোস্ত। বিকশা নিতে হবে। এখন হাটতে আবার ক্ষিধে পেঁচে যাবে। অনেকে কষ্টে ক্ষিধেটা চাপা দিয়েছি।

রেন্টেরেন্টে আবার বাকি খাওয়া যায়—বাকিতে রিকশা পাওয়া বাটকর ব্যাপার। সবুজ না বলেই আমার ধীরণ। লিফট পাওয়া মেলে হত। বিদেশে এই সব ক্ষেত্রে বুকু আঙ্গুল ভুলে লোকজন দাঙ্ডিয়ে থাকে। কারোর দয়া হলে ভুলে নেয়। বাল্কনে লিফট পথা চালু হয়নি। কার দায় পড়েছে নিজের কেনা গাড়িতে অনুকে ঢেঢ়ানো।

অপর্ণি এ জাতীয় পরিষিদ্ধিতে গাড়িওয়ালা মানুষের কাছ থেকে মাথে মধ্যে আর উৎসাহহৃষ্ণক সাড়া পেয়েছি। ত্যু উৎসাহহৃষ্ণকে বললে ভুল হবে, খুই উৎসাহহৃষ্ণক। একবার উত্তরার কাছে এক পান-সিগারেটের দোকানের সামনে দাঙ্ডিয়ে আছি। রাত একটাৰ মত বাজে পান-সিগারেটের একটা দোকান খোলা। সেও বৰোক উপক্ষম করছে। হেঁটে হেঁটে ঢাকায় কিৰাতে ইচ্ছা করছে না। একটা মিলিটারী ঝীপ এসে থামল। ঝীপে ড্রাইভার নেমে এল সিগারেট কিনতে। ড্রাইভারের পাশে বিশ্বাসুরে যে অফিসারটি বসে আছেন মনে হয় তাৰ জনো ই সিগারেট কেনা কোন শুরুৰে বুৰুতে পারছি না। এত বিশ্ব কেন তাও বুৰুতে পারছি ন। খুটুক হচ্ছে না বলেই মনে হব বিশ্ব। যুক্ত নেই কাছেই কাছত নেই। আমি এগৈতে গোলায়। তিনি মুখ কিনিয়ে তাকালেন। আমি বললাম, সার আপনার গাড়ির পেছেটা তো ফীক। আপনি কি একজনকে পেছে বসিয়ে ঢাক নিয়ে যাবেন? তাৰ খু উপকাৰ হয়।

অফিসার কিছু বললেন না। একবার আমাকে দেখেই মুখ ঘুরিয়ে নিলেন। ইতিমধ্যে ড্রাইভার সিগারেট নিয়ে ফিরেছে। তিনি সিগারেট নিয়ে প্যাকেট খুলে

৬৬

৬৭

সিগারেট বেব ক্ষতে শুক করেছেন। ড্রাইভার গাড়ি শার্ট দিতে যাচ্ছে। তিনি ড্রাইভারকে নিচু গলায় কি যেন বললেন—ড্রাইভার অত্যন্ত বিশ্বিত হয়ে নেমে এল। ঝীপের ছেঁটার আমাকে খুলে দিল।

আমি উঠে বসলাম। গাড়ি চলতে শুরু করল। সেই অফিসার আমাকে অবাক করে দিয়ে জিজেস কৰলেন, 'আমি সিগারেট নিলাম। তিনি ঝীপের ভাসাবৰোডে কি একটা টিপলেন, ওমনি ক্যাসেটে রবীন্দ্র সংগীত শুন হয়ে যাবে—'

"'বুধ কেন আলে লাল চোখে'

মিলিটারী ঝীপ ইস-হাস করে অনেক সমাই আমার পাশ দিয়ে বেব হয়ে গেছে। সেখান থেকে কখনো রবীন্দ্র সংগীত দেয়ে আসতে ওনিনি। আমার ধীরণ মিলিটারী ঝীপে কাজনো বাজানোর যত্নই থাকে না। আর থাকলেও টাপ্পেট জাতীয় বাজনা বাজবে। রবীন্দ্রনাথ না।

আমি বললাম, স্যার, আমাকে ক্যান্টিমেন্টের কাছাকাছি যে কোন জায়গায় নামিয়ে দিলেই হবে।

বিশ্ব চেচারের ডন্ডোক তার জবাব দিলেন না। মনে হচ্ছে তিনি আপনমনে গন তন্ত্রছ। মিলিটারী গন শোনাও আসুল। মাথা দুর্বল হয়ে গেল। এটাকে পেছে কেটে বুৰুতে পারবে না যানজট কেন হচ্ছে। এক সময় গুজৰ ছাটিয়ে পেঁচে— যানজট হচ্ছে কারণ সামনে মিছিল বেব হয়েছে, গাড়ি ডাঙ্গাত্মক হচ্ছে। বিশ্বসম্মেগ গুজৰ বলেন স্বাই সকল সঙ্গে বিশ্বস করে ফেলবে। পেছেনে গাড়িগুলি ত্বরিত চেঁটা করবে উল্লেখ দিকে মুৰাতে। এই চেঁটার ফলে এমন যানজট হবে যে সারাসিদ্ধের জন্মে নিশ্চিত। রাজশান্তিক নেতৃত্ব খবৰ পালনে মে মিছিল বেব হয়েছে, গাড়ি ডাঙ্গের হচ্ছে। তাঁরা ভাবলেন মেছেতু তাঁরা মিছিল করে কৰবেন।

তিনি ঝীপ থেকে নামলেন। ড্রাইভারকে বললেন, উনাকে তার বাড়িতে গোছে দাও।

আমি বললাম, 'স্যার, কোন দুরকার নেই। আমার হেঁটে অভ্যাস আছে।'

ডন্ডোক বললেন, 'অনেক রাত হয়েছে। আগনাকে বাসায় পৌছে দেবে, কোন সমস্যা নেই।' তিনি আরেকটা সিগারেট নিন। ওয়ান ফর দ্য রোড। আজ, মেখে দিন। প্যাকেটটা মেখে দিন। আমি সিগারেট হেঁটে দেবার চেষ্টা করছি। আজ পোতে পড়ে কিনে ফেলেছি।

ড্রাইভার অবশ্য আমাকে আমার মেস পর্যন্ত নিয়ে গেল না। ক্যান্টিমেন্টে ধোগি বেব করে সামান এগৈতে কঠিন কোঁক করে গাড়ি থামল। তার চেয়ে কঠিনে গলায় বলল, 'নামেন।'

আমি বিশ্বীত ভঙ্গিতে ড্রাইভারকে বললাম, 'তাই সহেব আপনার না আমাকে বাড়ি পর্যন্ত দিয়ে যাবো কথা?'

'নামতে কাছি, নামেন।'

আমি হড়ুমুড় বেব করে নেমে পড়লাম। মিলিটারী মানুষ রেগে শিয়ে চড়-থাপ্পর মেরে ক্ষেত্রে পারে। কি দুর্বল!

কাছেই আমাদের দেশের গাড়িওয়ালাৰা পথচারীদের প্রতি একবাবেই যে দয়া দেখন না, তা না। মাথে মধ্যে দেখন। সেই মাথে মধ্যে আজও হতে পারে। মিছি বধায় চিড়া ভেজে না বলে গাড়িওয়ালাদের মন ভিজে না কেন। গাড়িওয়াল মন এমিনেই খানিকটা ভেজা অবহায় থাকে।

আমি ব্যাঙাঞ্জিক নিয়ে গাড়ির স্থানে বেব হলম। আমাদের টার্ণেট ঝুকুকে নতুন গাড়ি। দামী গাড়ি। পাজুরে টাইপ। চড়বই যখন দামী গাড়িতেই চড়ি।

যেবে গাড়ি পল্ল হয়ে তার কোনটাই দাঙ্ডালেন না— হেস করে চল যাচ্ছে। গাড়িগুলি থামানোর একমাত্র উপায় হচ্ছে, রাস্তার ঠিক মার্গাবনে কান্টেন্টুয়ার মত দু হাত মেলে পড়ালো। আমি আর বাঙালি দুজন হাত ধৰাবধি করে রাস্তা আঠকালে গাড়ি থামতে বাধ্য। প্রথমে একটা থামে তাৰ পেছে আৱেকটা। দেখতে দেখতে ক্ষিপ্ত সিরিয়াস যানজট দেগে যাবে। গাড়িতে গাড়িতে গুটি কেট বুৰুতে পারবে না যানজট কেন হচ্ছে। এক সময় গুজৰ ছাটিয়ে পেঁচে— যানজট হচ্ছে কারণ সামনে মিছিল বেব হয়েছে, গাড়ি ডাঙ্গাত্মক হচ্ছে।

বিশ্বসম্মেগ গুজৰ পেঁচে ত্বরিত ত্বরিত চেঁটা করবে উল্লেখ দিকে মুৰাতে। এই চেঁটার ফলে এমন যানজট হবে যে সারাসিদ্ধের জন্মে নিশ্চিত। রাজশান্তিক নেতৃত্ব খবৰ পালনে মে মিছিল বেব হয়েছে, গাড়ি ডাঙ্গের হচ্ছে। তাঁরা ভাবলেন মেছেতু তাঁরা মিছিল করে কৰবেন।

এবং তখন সভি সভি শুরু হবে গাড়ি ভাসাত্মক।

পুলিশের টিয়ার গ্যাস নিয়ে হেঁটাছুটি। টিয়ার গ্যাসের সেল মারবে কি, মারবে না বুঝতে পারছে না। সরকারী দলের মিছিলে টিয়ার গ্যাসের সেল মারতে খবৰ আছে। এই হাস্পামার মধ্যে কেউ না কেউ মার্যাদা যাবে। নাম পরিচয়হীন সেই

৬৮

৬৯

লাশ নিয়ে পড়ে যাবে কাঢ়াকঢ়ি। একদল বগুবে এই লাশ বিভিন্ন কর্মীর, আবের দল বগুবে আওয়ামী সীপের। অর্থ কেউ জানে ন মৃত মানুষের কেন দল থাকে ন।

আমি ব্যাঙাটিকে আমার সঙ্গে রাস্তার দীড়া করাতে রাজি করতে পারলাম না। সে চোখ কপালে তুলে বলল, 'দেস্ত তুই কি পাল হয়ে গেলি নাকি? গাড়ি আমাকে চাপ দিয়ে চলে যাবে। তুই সেই মুহূর্তে লাঘ নিয়ে পার পাবি। আমি তো লাফও দিয়ে পারি না। নাম ব্যাঙাটি হলে কি হবে লাঘাতে তো পারি না। আমি বরং রাস্তার পাশে দাঢ়াই।'

ব্যাঙাটি চিড়িত রাস্তার পাশে দাঢ়িয়ে রাইল। আমি দ'হাত মেলে রাস্তার মাঝখানে দাঢ়িয়াম। দেখতে দেখতে ফল পেলাম। প্রায় নতুন একটা পাঞ্জোর ঝীপ (আমার খুব পছন্দের গাঢ়ি)। আমার সামনে এসে দাঢ়াল। জ্বাইভারের পাশের সীট থেকে এক সানগ্লাস পরা শোক মাথা বের করে বলল, কি ব্যাপোর?

ভালোকে খুব চেনা চেনা লাগছে। কোথায় দেখেছি বুঝতে পারছি না। সানগ্লাস খুললে হয়ত চিনতে পারব।

'আপনি কি চাহেন?'

'স্যার, আমরা দুই বন্ধু আপনার কাছে লিফট চাচ্ছি। আমাদের অতীশ দীপকের রোগ নামিয়ে দিন।'

'লিফটের জন্যে হাত উচিয়ে গাড়ি থামালেন?'

'হ্যাঁ'

'আসুন, উঠে আসুন। আপনার বন্ধুকেও ডাকুন।'

ব্যাঙাটি গাড়িতে উঠতে উঠতে ফিসফিস করে আমাকে বলল, 'দেস্ত, তোর প্রতিক দেখে আমি মষ্ট। তুই তো মানব না, মহামানব। গাড়িতে লোকজন ন থাকলে আমি তোর পায়ের খুলি নিতাম।'

গাফি অতীশ দীপকের রোগের দিকে গেল না। রমনা থানার সামনে থামল। চশমা পরা ভদ্রলোক বললেন, 'আপনারা নামুন। আমি আপনাদের পুলিশের কাছে হ্যাত্তুর করব।'

আমি অবাক হয়ে বললাম, 'কেন?'

'আমাকে চিনতে পারছেন না?'

'চেনাচেনা লাগছে। আপনি কি বিখ্যাত কেউ?'

'আমি বিখ্যাত কেউ না। আগে একদিন আপনি আমাকে উচ্চাপাস্তা প্রশ্ন করছিলেন। আমি গাড়ির কাছ তুলে দিলাম—আপনি বাইরে থেকে ভেঁচি কঠিলেন। নামন অঙ্গুষ্ঠি করছিলেন। এখন চিনতে পেরেছেন।'

'হ্যাঁ। এখন চিনতে পারছি। চোখে সানগ্লাস থাকায় চিনতে অসুবিধা হচ্ছিল।'

'আজ আবার গাড়ি আটকেছেন। ইউ আব এ পারলিক বুইইসেল। পুলিশের উচিত আপনাদের সম্পর্কে বেঁজবব করব।'

ব্যাঙাটি তখনে গলায় বলল, 'স্যার আপনি কিছু মনে করবেন না। আমরা হেঁটে হেঁটে অতীশ দীপকের রোডে চলে যাব। হাটাটা স্থানের জন্মেও ভাল। আপনি চলে যান, আপনাকে শুধু শুধু দেরি করিয়ে দিলাম। আমরা দুই বন্ধুই আত্মরিক দুর্বিত। আওয়ার গপজি।'

এপ্রজিতে কাজ হল না। রমনা থানার সেকেন্ড অফিসার বিরসমুখে আমাদের হাজতে ঢকিয়ে দিলেন। এছাড়া তার উপায়ও ছিল না। যে ভদ্রলোক আমাদের নিয়ে এসেছেন তিনি এক প্রতিমন্ত্রীর শাল। মন্ত্রীর শালাদের ক্ষমতা মন্ত্রীদের চেয়ে অনেক দেশি থাকে। যদ্বা তার পাঞ্জোর গাড়ি নিয়ে যাত ঘুরেন—তার শালা তার চেয়ে বেশি ঘুরেন। এটাই নিয়ম।

ব্যাঙাটি পুরোপুরি হাতচকিয়ে গেছে। তার করুণ মুখ দেখে মায়া লাগছে। কেন্দ্রেটে ফেরে কিনা বুঝতে পারছি না। সভাবনা একেবারে উড়িয়ে দেয়া যাচ্ছে না। সম্ভবত এটাই তার প্রথম হাজত বাস।

ব্যাঙাটি হাতে পুরোপুরি হাতচকিয়ে গেছে।

আমি হাত তুলতে বললাম, 'সেস্ত, সর্বনাশ হয়ে গেলো তো।'

'তোর তারী যখন অন্তে আমি হাজতে তখন অবহৃটা কি হবে বুঝতে পারছিস না?'

'তারী খুশি হতে পারে। হাজতে থাকা মানে খাওয়া-দাওয়া বন্ধ। তারীর তো খুশি হবাইটি কথা।'

'হাজতে খাওয়া বন্ধ মানে? এরা খেতে দেয় না?'

'পার হেড এক টাকা পৰামো পয়সা বাজেট। এই টাকার কি খাবি? এর আগে একবার হাজতে আমি সারাদিনে একটা কলা খেয়েছিলাম। অবশ্য বেশ বড় সাইজ কলা।'

'তুই কি এর আগেও হাজতে ছিলি নকি?'

'খাকি মাঝে মধ্যে।'

'কি সর্বনাশ বলিস কি? তোর সঙ্গে মেশা, তো ঠিক হয়নি।'

'এবার ছাড়া পাবার পর আর মিলিস না।'

'ছাড়া পাব কিভাবে?'

'আরীয়-বজনের মধ্যে পুলিশের বড় কর্তা, কিংবা মন্ত্রী-প্রতিমন্ত্রী কেউ আছে?'

'না।'  
 'মহী-প্রতিমন্ত্রীর শালাদের কাঠোর সঙ্গে মহীকৃত আছে?'  
 'তোর ভাবীর থাকতে পারে। আমার নেই।'  
 'শেখ হাসিনা, কিংবা বেগম খালেনা জিয়ার সঙ্গে পরিচিত কেউ কি আছে যে তোকে চেনে?'  
 'আমার জন্ম মতে নেই। তবে তোর ভাবীর থাকতে পারে। ওর কানেকশন ভল।'  
 'ভালুে টেলিফোন করে তাবীকে বল। তাবী একটা-কিছু ব্যবস্থা করবে।'  
 'সর্ববাণী তোর ভাবীকে জানানেই যাবে না। আমি হাজারে আছি শুধু কারবলা হয় যাবে। পুলিশ তনেছি যুব খাই। এরা খাবে না।'  
 'প্রতিমন্ত্রীর শালা এসে আমাদের দিয়ে দেয়ে তো—পুলিশ এখন আর যুব খাবে না। তবে আমাদের নিজ ধেয়েই উচিত পান খাওয়ার জন্মে তাদের কিছু দেয়। মারের হাত ধেকে বীচার জন্মেই সিদে দেয়।  
 'ব্যাঙ্গচি আঁকড়ে উঠে বলল, 'মারেবে নাখব।'  
 'মারেবে তো বেচেই। কথা বের করার জন্মে মারেবে। ইন্টারোগেশনের টাইডে হেতু ধোলাই সিদে পারে। তোর সঙ্গে কথা বলছে, কথা বলছে—স্থাতাবিক ভাবেই বলছে, আচরণের পদম করে তলপেটে এক ঘূর্ণ।'  
 'বালিস কিঃ ইন্টারোগেশন করবে হবে?'  
 'ওলি সাহেবের সময় হলোই হবে। যত দেরিতে উন্নার সময় হয় ততই তাল। এত দুর্চিন্তা করে লাগ নেই। ঘুর্মে থাক।'  
 'হিঁ?'  
 'কা?'  
 'দোষ্ট, তুই কিছু মনে করিস না। তোকে একটা সভ্যি কথা বলি। তোর সঙ্গে মেশা আমার ঠিক হয়নি। বিরাট তুল হয়েছে। যেট সিসটেক। তোকে ভাল মানুষের মত দেখালেও তুই আসলে ডেজারাস।'  
 'আর মিলিস না।'  
 'মিলিস না বললেই তো হবে না। তুই আমার বালাবকু।'  
 'বিবরে সময় বাল—বৃক্ষ, বৃক্ষ—বৃক্ষ কেন বাপার না।'  
 'এটাও ঠিক বলেছিস। দোষ্ট, এখানে বাথরুমের কি ব্যবস্থা? আমার দেশানে বাথরুম পেয়ে গেছে।'  
 'ছেট বাথরুম হলে এক কোণে বাসে পড়। হাজতের সেলে ছেট বাথরুম করা যায়। কেউ কিছু বলে না। বড়টা হলে সমস্যা আছে।'

৭২

'ভাইহে তো আপনি আঁচীয়ের মধ্যেই পড়েন। কখনো কন্ডিকশন হয়েছে?'  
 'ছি না। হাজতে ধেয়েই ছাড়া পেয়ে গেছি।'  
 'এইবার পাবেন না। এইবার জেলখানার ল্যাপটপ খাওয়াবার ব্যবস্থা করে দেব।'  
 'কি আঁচ?'  
 'মনে হলে আমার কথা তুমে মজা পাছেন। মজার ইংরেজি জানেন?'  
 'জানি স্যার —ফন।'  
 'এইবার আপনার ফানের ব্যবস্থা করে দেব। গাড়ি ভাস্তে খুব মজা লাগে?'  
 'সার, আপনার সামান তুল হয়ে। আমি গাড়ি ভাসিনি। অতি তদন্তাময় নিষ্ঠাট চেয়েছিলাম। উনি সিফট দেয়ার নাম করে ধানায় দিয়ে এসেছেন।'  
 'তাই রাখিনি?'  
 'ছি স্যার, এটাই ঘটনা। বালাদেশ পেনাল কোডে — কথা দিয়ে কথা না রাখার কি কোন শাস্তি আছে? যদি থাকে তাহলে তার শাস্তি পাওয়া উচিত।'  
 'আপনি কি জিজেকে অতিরিক্ত চালাক হওনেন?'  
 'ছি স্যার, তবি না। তবে স্যার, সভি কথা বলতে কি — আমি যেমন নিজেকে কোন ভালু না — অনাকেও ভালু না।'  
 'আপনি কর গাড়ি ধেয়েছেন সেটা জানেন?'  
 'স্যার, আমি কাঠোর গাড়ি ভাসিনি। তবে যিনি গাড়ি ভাস্তার কথা বলছেন তিনি ক্ষমতাবান মানুষ যদিও শ্যালক। এই তথ্য জানি।'  
 'তিনি এক আই আর করে গেছেন — আপনি এবং আপনার বৃক্ষ মিলে তার গাড়ি ভেঙেছেন। এবং আপে একদিন তাকে ভয় দেখিয়েছেন। থান ইট দিয়ে তার মাথা তেজে নিতে চেয়েছিলেন।'  
 'থান ইট দিয়ে মাথা তেজে দেবার কথাটা সভ্যি না হলেও তব দেখাবার ব্যাপারটা সত্যি।'  
 'তব কিভাবে দেখিয়েছেন?'  
 'ভেঙ্গচি কেটেছি। বাচারা কাউকে ভেঙ্গচি দিলে তব লাগে না। কিন্তু বড় কোন মানুষ ভেঙ্গচি কাটলে বুকে ধাক্কার মত লাগে। কিভাবে ভেঙ্গচি কেটেছিলাম সেটা কি স্যার তেমনস্টেট করে দেখাবা?'  
 'অবশ্যই দেখাবেন। আপনার মত ফাঁতিলদের কি চিকিৎসা আমরা করি সেটা আগে একট ডেমনস্ট্রেট করে দেবাই। প্রথমে আমাদের ডেমনস্ট্রেশন, তারপর আপনারটা।'

৭৩

'কি সমস্যা?'  
 'সেটিকে ডাকতে হবে। তার যদি দয়া হয় বাথরুমে নিয়ে যাবে।'  
 'দয়া না হলো?'  
 'দয়া না হলে দয়া তৈরি করার সিস্টেম আছে। টাকা দিবেই দয়া তৈরি হয়।'  
 'আমাদের সঙ্গে তো টাকা নেই।'  
 'তোর কি বড়টা পেয়েছে?'  
 'হ্যাঁ সকালেবেগা বাটিস ক্লিয়ার হয়েছে— এখন এই টেলশনটায় সিস্টেমে পেস্টি দিব করবে।'  
 'দেখি পেস্টিকে ডাকি।'  
 'যদি রাঞ্জি না হয় দেখি আমার পানির পিপাসা পেয়েছে। এখানে পানি খাবার সিস্টেম কি?'  
 'বাথরুমে যখন নিয়ে যাবে এ সময় পানি দেয়ে নিবি। উটের মত বেশি করে খাবি যাতে জ্বাল করে রাখতে পারিনি। আবার পানি খাবার সুযোগ করব হবে কে জ্বালে।'  
 'ব্যাঙ্গচি করুণ চোখে তাকিয়ে আছে। তার কপাল ঘামছে। টেট শুকিয়ে গেছে। বিড়বিড় করে কি যেন বলছে। মনে হয় কোন দেয়া—টোয়া পড়ছে। নিয়ামুল কোরানে কোন বিপদে কোন দেয়া পড়তে হয় তার বিবরণ আছে। বড়ের সময়ে দেয়ায়, আগত লাগপে দেয়ায়, দামী জিনিস হারিয়ে গেলে খুঁজে পাবার দোয়া... পুলিশের হাতে পরলে কোন দেয়া পড়তে হবে সেটা নেই। থককে জনগণের উপরাক হত।'

ওলি সাহেবের প্রথমে আমাকে ডাকলেন। তাও ঠিক সন্ধ্যার আগে আগে। উদ্ধোরে গভীর প্রক্রিয়। চেহারার মধ্যেই একটা ঘূর্ণ থাই, ঘূর্ণ থাই, ঘূর্ণ থাই, ভাব। মাথারে মাথে জিব বের করে তো টো চাটন। চাটা দেখে মনে হয় টোটে অন্দুশ চিনি মাখানো। জিব দিয়ে সেটি চিনি চেটে নিয়ে মজা করে আছেন।

'আপনার নাম?'  
 'সার, আমার ভাল নাম হিমালয়। ভাল নাম হিমু।'  
 'হাজতে এই প্রথম এসেছেন, না এর আগেও এসেছেন?'  
 'এর আগেও বেশ কয়েকবার এসেছি।'

৭৪

'আপনাদের কর্মকাণ্ড শুরু হবার আগে আমি কি একটা কথা বলতে পারি?'  
 'গুরুলে।'

'আপনার আবেগের মধ্যে আছে যে, আপনাকে আমি তুকুতেই বলেছি, আমি এর আগে বেশ কয়েকবার হাজতে এসেছি। প্রতিবারই ছাড়া পেয়েছি। কোন কন্ডিকশন হয়নি। তা থেকে কি প্রয়োগিত হয় না যে, আমিও ক্ষমতাবান একজন মানুষ। মুরীর শালার তেজেও আমার ক্ষমতা বেশি। কাজেই আপনি যা করবেন তেবেটিকে করবেন। ইংরেজী এ বাক্যটা আশা করি আপনি জানেন —

Look before you leap.

ঝাপ দেবার আগে তাল করে দেখ। একবার ঝাপ দিয়ে ফেললে কিন্তু সমস্যা।

ওলি সাহেবের ভিত্তি চাটা ব্যব করেছেন। সবু চোখে তাকাজেন। তেজের একট যে ধমে পেছেন তা বোবা যাচ্ছে। কাজেই এই সুযোগটা নিতে হবে এবং ওলি সাহেবকে তড়ে নিতে পারে কিল-থাপড় ধেকে আপাতত রক্ষা পাওয়া যাবে।

'আপনি বলতে যাচ্ছেন যে আপনি একজন বিগ শট!'

'ঝি স্যার, আমি অত্যন্ত সুর প্রাণি — ডেরী অল শট। জীবাণু টাইপ। আমার পানের দেশে স্যার, সভি কথা বলতে যাচ্ছেন — এবং পানে জুতা পর্যন্ত নেই। যদি কিছু মনে না করেন — কোরীর একটা সোহা আপনাকে তানতে পারি?'

'কারে কি তুনতে চাচ্ছেন?'

'কোরীর সোহা — কোরীর বলহেন,

হরি নে আপনি আপ ছিপায়।

হরি নে নে নেকজ কর সিখরায়া —

'এর মানে কি?'

'এর মানে হচ্ছে, ইশ্বর আপনাকে আপনি সুকিয়ে রাখেন আবার কি অন্তু সুন্দর করেন না নিজেকে প্রকাশিত করেন।'

'আপনি কি বলতে চাচ্ছেন কিছুই বুঝতে পারছি না। এই যে সাইন দু'টা বলকেন — এর মানে কি?'

'মানে তো আপনাকে বললাম।'

'যাখা করেন।'

'যাখা করতে সময় লাগবে।'

'কত সময় লাগবে?'

'আপনি কি বলতে চাচ্ছেন হাজারে দিনে কিছুই বুঝতে পারছি না। এই যে সাইন দু'টা

বলকেন — এর মানে কি?'

'মানে তো আপনাকে বললাম।'

'যাখা করেন।'

'যাখা করতে সময় লাগবে।'

'কত সময় লাগবে?'

''হ্যাঁ তিন দিন সময় লাগবে। এক কাজ করলেন, আমাকে দুই তিন দিন

হাজারে রেখে দিন। আমি লাইন দু'টা ব্যাখ্যা করব। তবে একটা শর্ত আছে।'

৭৫

'কি শর্ত?'  
 'আমার বস্তুকে ছেড়ে দিতে হবে।'  
 'ও আজ্ঞা।'  
 'ও আজ্ঞা বলার দরকার নেই। মহীর শাপাবাবুর কাছে অপরাধ যা করেছি আমি করেছি। আমার বস্তু করেনি। ওকে ছেড়ে দিন — আপনার সাত হবে।'  
 'কি লাভ হবে?'

'সেটা যথসময়ে দেখবেন। লাড-লোকশান প্রসঙ্গেও কর্তীয়ের একটা সৌহা আছে বলব?'

'সৌহা ফোহা বাদ দিন। খেড়ে কাওন। আপনি কে ঠিক করে বলুন? আপনার যাকে ঘাউড় কি? আপনি করেন কি?'

'আমি স্যার কিছুই করি না। হলুদ পাঞ্জাবী পরে পথে পথে হাট।'

'আপনার চলে কি তাবে?'

'অত বড় একটা শহরে একজন মানুষের বেঁচে থাকা কোন কঠিন ব্যাপার না।'

'পথে পথে ঘুরেন কেন?'

'আমার বাবার জ্যো পথে পথে ঘূরি। আমার বাবার মাথা ছিল খারাপ। বাইবে থেকে কেউ বুবতে পারত না। তার সমস্ত আচার—আচরণ ছিল শাহীবিক মানুষের মত। গুরু তিতু ভাবনা ছিল পাগলের মত।'

'কি রকম?'

'তার ধারণা হল— যদি ইঞ্জিনিয়ারিং স্কুলে পাঠিয়ে ছেলেকে ইঞ্জিনিয়ার বানানো যায়, ডাক্তারী স্কুলে পাঠিয়ে ছেলেকে কেবল মহাপুরুষ বানানো যাবে না।'

'মহাপুরুষ বানানোর স্কুল আছে নাবি?'

'ঙ্গি না, বাবা একটা স্কুল দিয়েছিলেন। তিনিই হিসেন স্কুলের পিলিগ্যাল আর আমি তার ছাত্র। প্রথম এবং শেষ ছাত্র।'

'স্কুলে কি শেখানো হত?'

'নিশ্চিন্ত কোন সিলেবাস ছিল না। পিলিগ্যাল সাহেবের মাথায় যখন যা আসত তাই ছিল পাঠ্যক্রম। একটা উদাহরণ দেই। আমি অক্ষরারে তার পেতাম। সেই ভয় কাটানোর জন্যে তিনি একদিন একবার আমাকে বাগরমে তালাবক্স করে রেখেছিলেন। আমার বয়স তখন সাত।'

'বলেন কি, এ তো পাগলের কভ।'

'আগেই তো বলেছি বাবা পাগল ছিলেন।'

'আপনার মা বাধা দেননি?'

'মা যাতে বাধা দিতে না পারেন সেই জন্যে মাকে মেরে ফেলেছিলেন। বাবার ধারণা মাঝেই মহাপুরুষ হাবার প্রক্রিয়ায় বড় বাধা। মহাপুরুষকে সব রকম বস্তু থেকে মুক্ত হতে হবে। মেহের বস্তু, মায়ার বস্তু, তালবাসার বস্তু।'

'আই সি। বাবার ট্রেনিং এর ফলে আপনি কি মহাপুরুষ হয়েছেন?'

'কি না। মনে হয় পাশ করতে পারিনি। ফেল করেছি। তবে.....'

'তবে আবার কি?'

'গোবৰ্জনদের পানিক্ষেত্র বিভাগ করতে পারি। এটা মহাপুরুষদের একটা লক্ষণ। মহাপুরুষদের কর্মকাণ্ডে সাধারণ মানুষ বিভাগ হয়। সত্তা করে বলুন তো স্যার আপনি কি বিভাগ হননি?'

'আমি বিভাগ হননি!'

'কি হয়েছেন। আপনার মনে সন্দেহ চূকে শেষ। আপনি ভাবছেন — হলুদ পাঞ্জাবী পরা এই স্কোট মহাপুরুষ হলেও তো হতে পারে। আপনার মন দুর্বল বলেই সন্দেহটা প্রবল।'

'আমার মন দুর্বল?'

'কি না। মনে হয় পাশ করতে পারিনি।'

'আই সি।'

'আপনি কি স্যার দয়া করে আমার বস্তুকে ছেড়ে দেবেন?'

ওপি সাহেবের বেশ কিছুক্ষণ খিম ধরে রইলেন। এক সময় তার যিম কাটল। তিনি নিশ্চিন্ত তিনেক পা নাচালেন। মানুষ সাধারণত একটা পা নাচায় — উনি দুটা পা এক সঙ্গে নাচাচ্ছেন। দেখতে ভাল লাগছে। পা নাচানো ধামল। ওপি সাহেবের গশ্তির গলায় বললেন, 'আজ্ঞা ঠিক আছে যান — আপনার বস্তুকে আমি ছেড়ে দিছি। আপনি কিস্ত আছেন?'

'অবশ্যই আছি। আপনাকে কর্তীয়ের দুই পাইনের ব্যাখ্যা না দিয়ে আমি যাব না।'

'চা খাবেন?'

'কি চা খাব এবং একটা নিগারেট খাব। স্যার আরেকটা কথা, হাজতে চুকানোর পর কি একটা টেলিফোন করার স্বয়ংগ পাওয়া যায় না। আজীব্য — হজনকে জানানো যে, দয়া কর, দৃষ্টিতা কর — আমি হজতে আছি।'

'টেলিফোন করতে চান?'

'কি চাই।'

'কাকে ফোন করবেন, প্রধানমন্ত্রীকে?'

'ছি না সার, আমি আপনাকে আশেই বলেছি যে আমি অত্যন্ত সুন্দর ঘটি। জীবাণু টাইপ। জীবাণুর চেয়েও হেট-ভাইরাস বলতে পারেন।'

'ভাইরাস মাঝে মাঝে ভোকের হয়।'

'ছি সার, তা হয়।'

'নাথার ব্লুন আমি লাগিয়ে দিছি।'

'মহী সাহেবের শালার সঙ্গে কথা বলতে চাও। উনার টেলিফোন নাথার তো আপনি রেখে দিয়েছেন। তাই না?'

'টেলিফোনে কি করবেন?'

'সেটা এখনো ঠিক করিন। বাংলাদেশ আইডে আমি হাজত থেকে একটা টেলিফোনের সুযোগ পাই। সেই সুযোগ ব্যবহার করতে চাও।'

'আজ্ঞা দেবি — উনি কথা বলতে চান কিনা কে জানে।'

ওসি সাহেবের নিচু গলায় ভদ্রলোকের সঙ্গে আগে কিছুক্ষণ কথা বললেন। আমার সপ্তর্ক বিছু বললেন বোধহয়। তারপর টেলিফোনে আমার নিকে এগিয়ে দিলেন। আমি আনন্দিত গলায় বললাম—'কেমন আছেন তাই। আমি হিমু।

'কি চান আমার কাছে?'

'আমি আজ্ঞাহার কাছেই কিছু চাই না, আর আপনার কাছে কি চাইব?'

'বড় বড় কথা নিয়েছেন। মুখের চেয়ে জিহ্বা বড়। জিহ্বা এখন সাইজ মত কাটা গৃহণ।'

'সার আপনার বুকের বাধাটার খবর কি ভর হয়েছে?'

'তার মানে?'

'আমি একজন মহাপুরুষ টাইপ ভিনিস। আপনি আমার নামে মিথ্যা ডাইরী করেছেন। তার শান্তি হিসেবে আপনার বুকে ব্যাথা ওর হ্বার কথা। এখনো হচ্ছে না সেন বুঝতে পারিন না।'

'চিঠিয়ে দাত রেখে দেব হারামজাদা।'

'সার, ব্যাথাটা খুব বেশি হলে দেরি না করে সোহরাওয়াদী হাসপাতালে চলে যাবেন। এনকিষ্ট ট্যাবলেটে অনিয়ে রাখুন। জিতের নিচে দিতে হবে।'

টেলিফোনের ওপাশে ভদ্রলোক রাগে ঘর ঘর করে ক্ষিপছেন। ভদ্রলোককে দেখা না গোলেও বোধ যাচ্ছে। আমি তার রাগ সম্পূর্ণ অধ্যায় করে হাসিমুর বললাম, 'আমার নামে মিথ্যা এফ আই আর করিয়েছেন— এটা ঠিক হনিন। বুকের ব্যাথা উটামাত থানায় ওসি সাহেবকে সত্তি কথাটা জানাবেন। ব্যাথা করে

হাবে। আপনার দুলভাই মিথ্যা বললে কেন সমস্যা না, তিনি মহী মানুষ। মিথ্যা তিনি বলবেন না তো কে বলবে তিনি সত্তি কথা বললেই সমস্যা।'

'সত্তি কথা বললে সমস্যা মানে?'

'জীবীরা মিথ্যা বলেন এটা ধরে নিয়েই আমরা চলি। এতে সিষ্টেম অভ্যন্তর হয়ে গেছে। কাজেই হঠাত একজন মহী যদি সত্তি কথা বলা শুরু করেন তাহলে সমস্যা হবে না।'

'ফর ইর ইনফরমেশন — আমার দুলভাই কখনেই মিথ্যা বলেন না। এমপিরা ট্যাঙ্ক পাড়ি পায় আপনি বোধহয় জানেন। সঙ্গে সব এমপিরা কেন বিষয়েই একত্ব হন না, শুধু ট্যাঙ্ক পাড়ির বিষয় ছাড়া। সেখানে আমার দুলভাই ট্যাঙ্ক পাড়ি নেননি।'

'আমি যে গাড়িতে চড়তে চাইলাম সেটা তাহলে কার?'

'আমার।'

'সার আপনি কি করবেন?'

'যাবো।'

'গার্মেন্টস?'

'চিঠি ধরেছেন।'

'আপনারের গার্মেন্টসে কি হলুদ পাঞ্জাবী হয়? আমাদের দু'টা হলুদ পাঞ্জাবী দিতে পারবেন? একটা আমার জন্যে, একটা ওসি সাহেবের জন্যে। আমার সাইজ টেলিফোন। ওসি সাহেবের হ্বারিশ। একটা লার্জ কিনলেই হবে।'

ঝটক করে শব্দ হল। ভদ্রলোক টেলিফোন নামিয়ে রাখলেন। ওসি সাহেব চিত্তত এবং বিরক্তমুখে বললেন, আপনি শুধু যে নিজে বিপদে পড়েছেন তা না। আপনি তো মনে হয় আমাকে বিপদে পড়েছেন। অনেক টারা-প্রসন্ন ব্যবচ করে ঢাকার পোষ্টিং নিয়েছি— বিয়ট ইনভেস্টিমেন্ট। ইনভেস্টিমেন্টের দশ ডাগের এক ডাগও এখনে ভুগতে পারিনি। এব মধ্যে যদি বদলি করে দেয় তাহলে আম-ছালা সবই হাবে। শুধু গড়ে থাকবে আমের আটি। ভাল কথা, ভদ্রলোকের বুক লি সত্তি ব্যাথ উঠবে?

'ছি উঠবে। আমার আধ্যাত্মিক ক্ষমতার জন্যে না। এমিটেই উঠবে! মানসিক ভাবে দুর্বল তো তার জন্যে মনে একটা চাপ আছে। এ চাপ শরীরে চাপ ফেলবে। বুকে তীব্র ব্যাথা হবে। এও হতে পারে — ব্যাথ ট্যাঙ্ক কিছু হল না, কিন্তু মনে হবে ব্যাথা হচ্ছে। স্যার, আমার বস্তুকে ছাড়ার ব্যবস্থা করবেন না?'

'করছি। সিগারেট খাবেন?'

'ছি ব্যাব।'

ব্যাঙ্গাচি বিশ্বাসই করছে না যে তাকে ছেড়ে দিছে। সে একই সঙ্গে অনন্বিত এবং দুর্ঘটিত। তাকে ছেড়ে দিছে এই আনন্দ তার রাখার জারগা নেই। আবার আমাকে আটকে রেখেছে এই দুর্ঘটণা সে আসলেই বিপর্যস্ত।

'দেষ্ট তোকে রেখে চলে যেতে খুবই খারাপ লাগেছে।'

'আমাকে তো রেখে যেতেই হবে। আমি দোষ করেছি শিষ্টি পার্টি। তুই তো দোষ করিবানি!'

'তা ঠিক। তোর ভাবীর অনেক বড় বড় আর্থী—জ্ঞন আছে। তাদের ধরণেই তোর বিলিজের ব্যবস্থা হয়ে যাবে। কিন্তু তোর ভাবীকে কিছুই বলা যাবে না। বুঝিবাড়ী দেয়ে তো, তোর কথা বলেছেই সে বলবে — তোমার বৃক্ষ হাজার সেই খবর তোমাকে কে দিল? আমি তার জোরের মুখে পড়ে শীকার করে ফেলব যে আমিও হাজারে ছিলাম। দাবানল লেগে যাবে, বুকলি!'

'বুকতে পারিছি!'

'পোষ দোষ। তুই আশা ছাড়িস না, আমি ধর্মীয় লাইনে ঢেক্টা করব। আমাদের বাস্তির পাশেই এক হাফেজ সাবের আছে। এক হাফেজ টাকায় কোমান খত্ম দেন। আর্জেন্ট খবরহাতও আছে। খুব ইমার্জেন্সি হলে মাদ্রাসার তালেবুল এলেমদের নিয়ে চার ঘণ্টায় খত্ম শেষ করে দেয়া করে দেন। দেষ্ট তোর জন্যে একটা বি দিয়ে আর্জেন্ট দেয়া করাব। ইনশেল্লাই আমি কথা দিলাম। আমি আজ এসে তোর খোজখবর করব। চিফিন কেরিয়ারে করে খাজোয়া নিয়ে আসব। প্রিজ্জি!'

'কিছু আজতে হবে না!'

'অবশালি আনতে হবে। তুই না থেঁয়ে থাকবি? দোষ মনে ভরসা রাখ—কাল সকালের মধ্যে খত্ম স্টার্ট হবে। ইনশেল্লাই'

আমাদের হাজারে থাকতে হল তিনিদিন। ওসি সাহেবের সঙ্গে এই তিনিদিন আমার কথা হল না। কিনি অস্ত্র ব্যস্ত। কেনন একটা ঝামেলা হয়েছে — নিয়াত চর্বিশ ঘটাটাই তাকে হোচ্ছুটি করতে হচ্ছে। এই তিনিদিনে ব্যাঙ্গাচির কেন খোজ নেই। তার চিফিন কেরিয়ার নিয়ে আসব কথা।

চতুর্থ দিন সকালে ওসি সাহেব আমাকে ছেড়ে দিয়ে ক্লাস্টমুখে বলনেন, যান, চলে যান।

'চলে যাব?'

'হ্যাঁ, চলে যাবেন। গত পরাগুই আপনাকে ছেড়ে দেবার কথা। আমি অপারেশনে যাবার আগে সেকেও অফিসারকে বলে গিয়েছিলাম আপনাকে ছেড়ে দিতে। সে ভুলে দেছে। কিছু মনে করবেন না — দু'দিন একটা হাজারবাস হল।'

'আপনাকে কবীরের দোহার বাল্যাটা তো বলা হল না।'

'বাল্যা বাদ দেন। আমার জন নিয়ে টানাটানি। খুব সমস্যায় আছি। এক কাপ চা থাকে — চা থেঁয়ে চলে যান। মনে কোন কষ্ট পূরে রাখবেন না। প্রতিমহীর শাল টেলিফোন করে আমাকে বলেছে যে, তিনি দুর্ঘটিত — এই খবরটা যেন আপনাকে দেয়া হয়। আমি নিলাম। কাজেই আমার দায়িত্ব শেষ।'

'উন্নার কি ব্যাখ্যা উঠেছিল?'

'ব্যবহার হবের জন্য নি। উঠেছে তো বটেই। হাসপাতাল থেকে টেলিফোন হয়েছে। গলা চিপ্টি করছে। আপনি ইন্টারেক্টিং কারেটের।'

'খুবই যুক্তি।'

আমি ওসি সাহেবের সঙ্গে চা খেলাম। ওসি সাহেব দুর্ঘটিত গলায় বলনেন, মনটা খুবই খারাপ। মনে হয় আমাকে বদলি করে খাগড়াছাড়ি-টারির দিকে পাঠাবে। শালি বাহিনীর ডলা থাব।

'শাপ্তি চূক্তি তো হয়ে গেছে, এখন আর কিসের ডলা?'

'এব্যক্তির ডলা হবে আপনের ডলা। শাপ্তি শাপ্তি তাবে হাসতে হাসতে ডলা। যাই হোক, বাদ দেন। চায়ের সঙ্গে কিছু খাবেন।'

'একটা সিগারেটে থাব।'

ওসি সাহেব সিগারেট দিলেন। লাইটার জ্বালিয়ে সিগারেট ধরাতে এসেছেন। বাতাসের জন্যে ধরাতে পারছেন না। বাতাসে লাইটারের আগন নিতে যাচ্ছে। তিনি যাব বিকল। আমি ওসি সাহেবের কলাম, একটা মজার কথা কি জানেন ওসি সাহেবে? ছোট আঙ্গনের শিখা বাতাসে নিতে যাব। কিছু বিশাল যে আগন, যেমন মনে করুন দাবানল, বাতাস পেনে ফুলে-ফৈপে উঠে।

ওসি সাহেব বলেন, এটাও কি কবীরের দোহা?

'কি না, এটা হিমুর দোহা।'

'হিমুটা কে?'

'অমিই হিমু।'

'ও আছে, আপনি হিমু। একবার বলেছিলেন। ভুলে পিয়েছি। কিছু মনে থাকে না। এমন এক বিপদে আছি যা বলার না। কাবো সঙ্গে প্রয়ার্মৰ্শও করতে পারছি না। এটা এমনই এক সেমসেটিং ইন্সু যে প্রয়ার্মৰ্শও করা যাচ্ছে না। ইয়ে তাল কথা, আপনি প্রয়ার্মৰ্শ কেমন দেন?'

'খুবই খারাপ প্রয়ার্মৰ্শ দেই। আমার প্রয়ার্মৰ্শ যে ওনবে তার অবস্থা কাহিল।'

'ওনি আপনার প্রয়ার্মৰ্শটা।'

'ঘটনা মা ওনে প্রয়ার্মৰ্শ দেব কিভাবে।'

ଓসি সাহেবের গলা নামিয়ে ফিসফিস করে বলবেন, একটা রেপ হয়েছে। অর্থ বায়োনী একটা মেয়েকে তার শামীর সামনে তিন মস্তান রেপ করেছে। মস্তান তিনটার আবার স্বত্ব তাল পরিচিকালে কানেকশন আছে। মেয়ে এবং মেয়ের শামী এদের বিকল্পে মামলা করেছে।

'আপনাকে টাপ দেয়া হচ্ছে মামলা ভুল করে দিতে?'\*

'এটা করালে তো তালই হল। মামলা নষ্ট করা কেন বাপারই না। আমাকে বলা হচ্ছে এই তিনজনের জায়গায় অন্য তিনজনের নাম চুকিয়ে দিতে। এটা কি করে সংক্ষিপ্ত বলবে?'

'স্বত্ব না দেন? মেয়ে যে তিন নাম বলছে সেই তিন নাম না দিখে আপনি লিখবেন অন্য তিন নাম। এ তিনজনকে ধরে এনে রায় হচ্ছা। বাটা তোমা বেল রেপ করলি না? অন্যারা রেপ করে চলে গেল তোমা হিঁড়ি কোথায়?'

'বাসিকতা করেছেন তো কাজ? করেন। আমরা নষ্ট হয়ে পেছি। আমদের নিয়ে তো বাসিকতা করবেনই। যারা আমদের নষ্ট করল তাদের নিয়ে বাসিকতা করার সাথে আছে নেতৃত্বে হাত থেকে দেশটাকে বের করে এনে সাধারণ মানবের হাতে দেন — তারপর ...'

ওসি সাহেব হাত করে মেঝে।

আমি বলবাবা, ওসি সাহেব একটা কাজ করলে কেমন হয়?

ওসি সাহেব চুক্তি করবেন, কি কাজ?

'আপনি সত্ত্ব আসামীদের ধরে সেই ভাই ভেবেই কেইস সাজিয়ে দিন। নিরপরাধ তিনজনকে শাস্তি দেবেন সেটা যেমন কৰা'

ওসি সাহেব বিবৃত গলায় বলবেন, পানদের মত কথা বলবেন না। দেশের পরিষ্ঠিতি বিচার করে কথা বলবেন। হাই লেভেল থেকে মেটা চাওয়া হয় সেটাই করতে হচ্ছে।

'আপনি যখন সত্ত্ব কাজটা করবেন তখন আপনি হাই নেতৃত্বে চলে যাবেন। বাকি সবাই চলে যাবে লোকেলে।'

'আপনি দিয়ে হোন। নিন এ সিগারেটের প্যাকেটটা যেখে দিন। যুবের টকায় কেন। স্বত্ববিধি নেই তো?'

'কেন স্বত্ববিধি নেই!'

আমি ধৰ্ম ধানা থেকে বের হলাম। ওসি সাহেবও আমার সঙ্গে সঙ্গে বাইরে এলেন। তাকে যুব চিত্তিত লাগছে। তার চেহারা থেকে যুব থাই, যুব থাই ভাবটা চলে গেছে।



বৰ্ক দৱজায় হেলন দিয়ে তামান্নার জন্যে অপেক্ষা করতে পারি। সেটা ঠিক হবে বিঃ খাল কেটে হাত্তের নিয়ে আসা হবে না তো। ফ্লাটবার্ডিগুলিতে অধিবারিতাবে বিঃ খাল নিষ্কর্ম বড় বিভূতির ধারে। তার কানের শালা, কানের খালাতে ভাই। এদের ধখান কাজ ফ্লাটবার্ডির পরিবহতা বক্ষ করা। কোন হেলে কোন মেরের সঙ্গে ইন্টা-পিটিন করে কিনা তা লক্ষ রাখ, সমেহভাজন কেউ ঘূর ঘূর করছে কিনা তাও নজরে রাখা। বৰ্ক দৱজায় হেলন দিয়ে বসে থাকা অবস্থাই সমেহজনক কর্মকারের ভেত্তা পড়ে। তামান্নার মা-বাবাই জানালা দিয়ে হাত ইশারা করে কাউকে ডাকিয়ে আনতে পারেন।

পানির ডুবা চক্রবৃত্তিহাসে বাঢ়ছে। কলিবেল টিপ্পে পানি থেতে চাইলে কেমন হয় একবার পানি চাইলে দেজ খুলতেই হবে। তৃষ্ণার্তকে পানি দেবে না এমন বাঞ্ছিল মেরার এখনে জন্ম হয়নি। রোজহাশের মেদানে সূর্য চলে আসের মাথার এবং হাত উপরে। তৃষ্ণার তখন বুকের ছাতি মেঝে চাইলে। তখন পুরুষ তাদেরকেই পানি পান করানো হবে যারা তৃষ্ণার্তকে পানি পান করিবে।

আমি কলিবেলে হাত রাখলাম। তার ধায় সঙ্গে সঙ্গেই বড় বিড়ার উপরিত হলেন। মনে হচ্ছে তাকে খবর দিয়ে আনন্দে হয়েছে। স্বত্ববত তামান্নার মা পেছেনের বারান্দা থেকে পাশের ফ্লাটের মহিলার সঙ্গে কথা বলেছেন। কারণ বড় বিড়ার শীতল গলায় বলল, ব্রাদার একটু নিচে আসেন।

কুক্কে।

এইসব ক্ষেত্রে কোন রকম তর্কবিত্তকে যাওয়া ঠিক না। আমি হাসি মুখ বড় বিভূতিয়ের সঙ্গে নিচে নেমে এস্ব। সেনামে আসো কয়েকজন অপেক্ষা করছে। অপেক্ষমান এক শুটকা যুবকই মনে হয় বড় বিভূতিদের সীতার। সে জানি টাইপ যুব করে চেয়ারে বসে পা নাচাচ্ছে। মুখে সিগারেট। তবে সিগারেটে আগুন নেই। হাতে লাইটার আছে। সিগারেট এখনো ধৰানো হয়নি। শুটকা তরুণ শাইটারটা এক হাত থেকে আরেক হাতে লোহাফুঁটি করছে।

৮২

৮৩

নিশ্চয়ই ডিসিআরে এমন কোন ছবি দেখেছে সেখানে নায়ক এইভাবে চেয়ারে বসে পা নাচায়, ঠোঁটে থাকে সিগারেট। সে হাতে লাইটার দিয়ে সিগারেট ধারান্তরে দাখিল করে আবার দুর্শিত ধৰান্তরে আগুন নিয়ে আগুন আগুন।

বড় বিভূতির শটকার দিকে তাকিয়ে বলল, মন ভাই এই চোখ আনলে বলসে উঠল। সে মুখে সুরক্ষা টানার মত শব্দ করল। বুকতে পোরাই আমার কাটা খাল দিয়ে হাতের চুকে পচেছে। হাতের হাত থেকে পুরুষ তামান্নাই আমাকে বাঁচাতে পারে। আমি গলা বাঁকার দিয়ে বললাম, মন ভাই, আমি বিচার যা করার তামান্না এলে করবেন। আপাতত দড়ি দিয়ে আমাকে বেঁচে রাখুন।

‘পঁচি দিয়ে বেঁধে রাখ’।

‘কু সেটাই ভাই হবে। শুধু একটা রিকোয়েট। কাউকে দিয়ে এক জগ ঠাড়া পানি আনে দিন।’

মন ভাই বলল, ‘তুমি জাহাই মানুষ পানি ধাবে? তোমার জন্যে সরবতের ব্যবস্থা করি। ঠাড়া সরবত’।

আমি বিনিয়ি ভরিতে বললাম, ‘কু আজ্ঞা।’

চারদিকে হাসাহাসি পড়ে গেল।

আমি ছাড়া পেলাম বাত এগারোটায়। তামান্না তার এক অসুব বাস্ফুরীকে দেখতে দিয়ে ফিরতে দেরি করছে। যে করবেন আমার বিকিজ অর্ডারেও দেরি হল। তামান্না আমাকে রিক্ষায় তুল দিল এবং গঙ্গার ভঙ্গিতে বলল, ‘আপনি দয়া করে আমি কুক্কে এবং বাঁচিয়ে আসবেন না। আপনার সঙ্গে আমার বিয়ের কথা হচ্ছে না।’

আমি বললাম, ‘তামান্না, রিক্ষা ভাড়া দিয়ে দিচ্ছি। দয়া করে আমাকে তুমি করে তাকবেন না।’

তামান্না বলল, ‘রিক্ষা ভাড়া দিয়ে দিচ্ছি। দয়া করে আমাকে তুমি করে তাকবেন না।’

ঘৰে চুকে চিঠি পেলাম। দুঁটা চিঠি। ফাতেমা খালার ম্যানেজারের লিখেছেন এবং ব্যাঙ্গালি লিখেছে। প্রথম পেলাম ম্যানেজারের চিঠি।

ইন্দু সাহেব,

গত তিন দিনে আমি চারবার আপনার কৌজ করেছি।

আপনি বেখার আবেদন মেট বলতে পারছেন না। আপনাদের

মেরের ম্যানেজারের বলল, হাঁ ও উধাও হয়ে যাওয়া নাকি আপনার

পুরুষের মেঝে। গত বছর একনাগাড়ে তিন মাস আপনার কৌজ

বৌজ হিল হিল।

‘কি নাম?’  
‘হিমু।’  
‘এখানে কার কাছে?’  
‘তামান্নার কাছে।’

‘কিছু হয় না তাহলে এসেছেন কেন?’  
‘এখানে কিছু হয় না তবে বিবিষ্যতে হচ্ছে পারে।’

‘তার মানে কি?’  
‘তামান্নার সঙ্গে আমার বিয়ের কথা চলেছে।’

মন ভাই সঙ্গে পা নাচানো বন্ধ করল। লাইটার দিয়ে সিগারেট ধৰাল। সে মনে হচ্ছে খানিকটা হকচিয়ে গিয়েছে। হকচিয়ে যাবার কারণে সিগারেট ধৰান্তরে দাখান জমান।

‘প্রেমের বিয়ে ন এরেনভ ম্যারেজ?’  
‘এরেনভ ম্যারেজ। কথাৰ্বার্তা হচ্ছে।’

‘কথাৰ্বার্তা কি পাকা হয়ে গেছে?’  
‘এখনো পাকেনি। বিয়ে পাকতে একটু সময় লাগে।’

‘স্টেইট কথা জিজেস কৰছি, স্টেইট জৰাৰ দেবেন।’  
‘কু আজ্ঞা।’

মন ভাই বড় বিভূতি চেয়ের ইশারায় কাছে ভাকল। তাদের সঙ্গে কানে দিয়ে কিছু কথা হল। বড় বিভূতির অতি মুক্ত চলে গেল। সে হিঁড়ে না আসা পর্যবেক্ষণ করাক হচ্ছে। মনাভাই আবারো লাইটার দিয়ে লোকলুমি করবেন। আমি দেখছি ইতিমধ্যে আবো কিছু উৎসাহী দৰ্শক উপহিত হয়েছে। মজাদার কিছু দেখাব আবার দৰ্শকৰা চৰক কৰবে। এই ফ্লাটবার্ডিতে মন ভাই এর কারণে প্রায়ই মনে হয় মজাদার কিছু হয়।

আমি খুবই চিন্তিত বোধ করছি। কারণ যাড়াবের সিল্পপুরে  
যাওয়া অত্যন্ত জরুরী। তিনি আপনার সঙ্গে কথা না বলে মেটে  
গোছেন না। সিল্পপুর এবার লাইনের টিকিট কাটা আছে, কিন্তু  
আপনার কারণে কন্ধর্ম করা যাচ্ছে না।

যাই হোক, এই চিঠি আপনার হাতে মেলিন আপনে দয়া  
করে সেন্সর যাড়াবের সঙ্গে যোগাযোগ করবেন।

বিনোদ  
রক্ষণ ইসলাম।

ব্যাঙ্গালির চিঠিটির অর্থেক বল পয়েন্টে লেখা। কয়েক লাইন বল পয়েন্টের  
কালি ফুরিবে যাওয়ায় বিনা কলিতে লেখা। তারপর লেখা পেলিসে।

দোষ,

আমার উপর রাগ নিশ্চিহ্ন করেছিস। দোষ কি করব বল—  
থাণার মেতে সাহস কুরায়নি। তবে তোর জন্যে কোরান মজিদ  
খতম দিয়েছি। জুয়াবের ইয়াম সহেবকে বলে স্পেশাল দোয়া  
করিয়ে দিয়েছি। তুই যে হাজারতে আহিস মেই কথা বলিনি। শুধু  
বিপদগত মহিন মুল্লামা। হাজারত আহিস অন্তে মুছিয়েনে  
কেউ কেউ অন্য বিছু তেবে বসতে পারে। বিপদগত মহিন  
মুল্লামারে জন্যে সেয়েতে কেউ আপাতি করবে না।

যাই হোক, এখন আসল ঘবর হল তোর ইয়াকুব সহেবের  
সঙ্গান দের করেছি। তার পিতার নাম সুরেমান — তার কিছীনা,  
(এইখানে করেক লাইন বিনা কলিতে লেখা)।

তোকে বাসা চিনিয়ে দেব। ভজনের মাই ডিয়ার টাইপের।  
অভিযোগ কথা বলেন। পেয়ার জোড়াইয়ী। মন্ত্রত্ব জানে।  
কবিয়াজী চিকিৎসাও করে। তিনি বলেছেন ইউনানী শারে মেন—  
তুচ্ছি কোন যাপাগ না। তোর সাথে আলোচনা করে উনাকে দিয়ে  
চিকিৎসা করব বিনা মেই বিয়ে সিঙ্গার দেব।

দোষ এখন বল তোর হৌজুবর না নেয়ার জন্যে তুই রাগ  
করিস নাই। বালাবুর অপারাধ নিজ হাতে করে দে।

ইতি তোর বালাবুর  
আরিফুল আশম জোয়ারি।

ফাতেমা খালার সঙ্গে টেলিফোনে আলাপ করলাম। ফাতেমা খালা বিহিত  
হয়ে বললেন, 'তুই কোথে কে? এতদিন ছিলি কোথায়?'  
'এতদিন না খালা, যাও তিনি নিন।'

৪৬

ন।

‘আমি ম্যানেজারকে বলে দেব—তোকে যেন ক্যাশ দেয়। কাশ দেয়ার  
সিস্টেম অবশ্যি আমারে নেই। আমারের সব টানজেকশন হয় চেকে। চেকে  
টানজেকশনের বড় সুবিধা হল — একটা ডকুমেন্ট থাকে। যাই হোক, তোর  
জন্যে স্পেশাল ব্যবস্থা হবে। হিমি লোকটাকে তুই ডিটেকটিভের মত স্টার্টি  
করিবি; আজ্ঞা লোকটা যারিবি নাকি?’

‘খালা, আমি এখনে জানি না। আপনি সিঙ্গাপুর থেকে ঘুরে আসুন।  
ইতিমধ্যে আমি হৌজুবর নিয়ে রাখব।’

ফাতেমা খালা আনন্দিত গলায় বললেন, ‘তুই আমাকে খুশী করেছিস —  
দেখিস আমিও তোকে খুশী করিবো দেব।’

‘তামামাকে ভজিয়ে ভজিয়ে আমার সঙ্গে বিয়ে দিয়ে দেবে?’  
'দিতেও পারি।'

খালার গলার ঘরে রহস্যের মিলিক।

‘তোর জন্যে আমার সব আটকা পড়ে আছে। হোটেল রিজার্ভেশন করিয়ে  
ছিলাম লাগ্ট মোমেন্ট তা ও কানসেল করালাম।’

‘এখন আবার রিজার্ভেশন করাও।’

‘ইয়াকুবের সংস্থান পাওয়া গোছে?’

‘স্থা, পাওয়া গোছে।’

‘আসল লোক তো? ফলস না?’

‘না ফলস না।’

‘তোর খালুক চিনতে পারল?’

‘এখনো তার সঙ্গে কথা হয়নি।’

‘কথা না বলে ভাল করেছিস। আগবাড়িয়ে বর্বর্দার তুই কিছু জিজ্ঞেস করবি  
না। আগে তার দিবি। দুরকার হলে গোজ যাবি। তাকে ইন কনফিডেন্স নিয়ে  
নিবি। পারিবি না?’

‘পারবি।’

‘লোকটা দেখতে কেমন?’

‘এখনো দেখিনি। শুধু সুরক্ষা বের করেছি।’

‘আমি জানতাম তুই পারবি। গতকালই তামামাকে বলছিলাম যদি কেউ  
ইয়াকুবের হৌজুব-ঘবর করবে তারে পারে হিমুই পারবে। ভাল কথা, লোকটা কি  
করবে?’

‘কবিরাজ।’

‘কবিরাজ মানে কি?’

‘অসুখ—বিসুখ হলে কবিরাজ মতে চিকিত্সা করে। তোমার গ্যাসের জন্যে  
এখন আর সিল্পপুরে যেতে হবে না। তাকে বলেলেই বাসক পাতার রস, তুলসি  
পাতার রস, হিলিঙ্গ গাছের শিকড়—শিকড় মিলিয়ে এখন ভিনিস বালিয়ে দেবে  
যে এক ডোজ খেলেই গ্যাস হজম।’

‘তুই বুঝতে পারছিস না হিমু। আমার অবস্থা ভয়াবহ। এমন গ্যাস হচ্ছে যে  
মাথে মাথে ডয় হয়, গ্যাস বেলুনের মত উপরে উঠে যাই কিম। সিল্পপুরে যে  
যাছি শখ করে তো যাই না।’

‘যাই করবে?’

‘যত তামান্তাতি যাওয়া যায় ততই ভাল। ভাল তো পারব না, দেখি পরত  
যেতে পারব কিম। এর মধ্যে তুই বাসায় এসে বিশ হাজার টাকা নিয়ে যা। তোর  
কি ব্যাকে একাউন্ট আছে?’

৪৭

ন।

‘আমি ম্যানেজারকে বলে দেব—তোকে যেন ক্যাশ দেয়। কাশ দেয়ার  
সিস্টেম অবশ্যি আমারে নেই। আমারের সব টানজেকশন হয় চেকে। চেকে

টানজেকশনের বড় সুবিধা হল — একটা ডকুমেন্ট থাকে। যাই হোক, তোর  
জন্যে স্পেশাল ব্যবস্থা হবে। হিমি লোকটাকে তুই ডিটেকটিভের মত স্টার্টি

করিবি; আজ্ঞা লোকটা যারিবি নাকি?’

‘খালা, আমি এখনে জানি না। আপনি সিঙ্গাপুর থেকে ঘুরে আসুন।  
ইতিমধ্যে আমি হৌজুবর নিয়ে রাখব।’

ফাতেমা খালা আনন্দিত গলায় বললেন, ‘তুই আমাকে খুশী করেছিস —  
দেখিস আমিও তোকে খুশী করিবো দেব।’

‘দিতেও পারি।’

খালার গলার ঘরে রহস্যের মিলিক।

কুড়ি হাজার টাকা পাওয়া গেল।

একশ টাকার দু টা বার্ডল। সবই চকচকা নোট। নাকের কাছে ধরলে নেশার  
মত লাগে। সারাক্ষে ধরে রাখতে ইচ্ছা করে।

ম্যানেজার সাহেবের বললেন, টাকাটা ওনে নিন।

আমি সঙ্গে সঙ্গে ঝন্টে বসলাম। নতুন টাকা ওনতেও আনন্দ। কিছুক্ষণ  
গোনার পর হিসেবে গভৰ্নেল হয়ে একান্ন না সাতান্ন সমস্যা দেখা দেয়। আবার  
নতুন করে গোনা। অন্ধবাধি তৈরি যে সে বিরক্ত হতে খুবই অগ্রহ করে। সে আনন্দিত  
হতে পছন্দ করে, রাখতে পছন্দ করে, কিন্তু বিরক্ত হতে পছন্দ করে না। গোন  
মিলিককে ক্রমাগত বিরক্ত করতে থাকলে হয় সে বিরক্তিকে রাগে নিয়ে  
যাবে, কিন্তু এমন কোন ব্যবস্থা করবে যাতে বিরক্তিকর ঘটনাটিয়ে সে মজা  
পাব।

‘হিমু সাহেবের টাকা গোনা এখনো হল না।’

‘ওঁ না। পরাশ ক্রশ করার পরই বেড়াহেড়া হয়ে যাচ্ছে।’

‘আমার কাছে দিন ভানুদি। আপনি বাং চা খান।’

‘কুড়ি আজ্ঞা।’

‘কুড়ি হাজার টাকা দিয়ে কি করবেন?’

‘তারবিহি একটা পাথর কিনব।’

‘ভাণ্ড বন্দনামের পাথর কু স্যাক্ষায়ার?’

‘ওঁ না, সাধারণ পাথর। তেমনি রেল লাইনে দেয়, কিংবা বাড়ির  
ফাউন্ডেশনে ব্যবহার করে সেই পাথর।’

৪৮

৪৯

'পাথরটার দাম কুড়ি হাজার টাকা?'  
 'কিংতু বিক্রি করবে তা তো জানি না। কুড়ি হাজার হচ্ছে আমার লাষ্ট অফার। দিলে দেবে, না দিলে নাই।'  
 যানেজার সাহেব টাকা গোনা বক্স করে আমার দিকে তাকালেন। গভীর গলায় বললেন, 'পাথরটার বিশেষত কি?'  
 'বিশেষত কিছুই নেই। পাথরের আবার বিশেষত কি?'  
 'তাহলে কুড়ি হাজার টাকায় কিনছেন কেন?'  
 'আবে জ্যো কিনছি। কিনতে পারব কিনা তাও জানি না। যার পাথর সেও শখ করে রাখছে।'  
 'পাথরের মালিক কে?'  
 'আলিকের নাম মেছকালৰ মিয়া। সে পেশায় একজন ডিস্কুন্ট।'  
 'আজই বিস্তুনেন?'  
 'হ্যাঁ।'  
 'যদি কিছু মনে না করেন আমি কি আগনার সঙ্গে আসতে পারিন?'  
 'অবশ্যই পারবে।'  
 'কুড়ি হাজার টাকার পাথর দেখাব লোত হচ্ছে।'  
 'চুন যাই।'  
 যানেজার সাহেব টাকা গোনায় সমস্যা হচ্ছে। ধূব সঙ্গে তার মাথার পাথর চেপে বসেছে।  
 ডিস্কুন্ট মেছকালৰ মিয়া আগের জায়গাটেই আছে। পাথরটাও ঠিক আগের জায়গায়। আমাদের দেবে এক চোখ ঘিট ঘিট করে তাকালো। আমি বললাম, 'মেছকালৰ মিয়া আমাতে চিনতে পারছেন?'  
 যেহেতু মিয়া জবাব দিল না। তার দৃষ্টি হির হয়ে গেল। আমি বললাম, 'মনে নেই এ যে আগনার পাথর ধাঢ়া খেয়ে আঁঞ্চলে ব্যথা পেলাম।'  
 'ক্ষে মনে আছে।'  
 'আজ ক'জন ব্যাথা পেয়েছে?'  
 'তা দিয়া আফনের কি প্রয়োজন?'  
 'গ্যাজেন বিছু নেই। হৌতুহল। তুমি বলবে না, তাই না?'  
 মেছকালৰ জবাব দিল না। সে এবং যানেজার দু'জনই এখন তাকিয়ে আছে পাথরের দিকে। আমি বললাম, মেছকালৰ মিয়া তুমি কি এই পাথরটা আমার কাছে বিক্রি করবে? কি দাম চাও বল।

৯০

মেছকালৰ আবার আমার দিকে তাকালো। তার দৃষ্টিতে ভয় এবং সন্দেহ। আমি আবার বললাম, বল কত চাও?  
 মেছকালৰ বিড় বিড় করে বলল, পাথর বেচুম না।  
 আমি বললাম, সাধারণ একটা পার। এটা তো কেবিন্স না। আমি তাল দাম দেব।  
 'ছি না সাব। পাথর বেচুম না। যত দামই দেন বেচুম না।'  
 'আমি নগদ টাকা সাধে করে নিয়ে এসেছি। একবার হ্যাঁ বল, আমি পাথর নিয়ে বাড়ি চলে যাই।'  
 'এক কথা ক'বার ক্ষম্য। আমি পাথর নেচুম না।'  
 'বেল বেচবে না।'  
 'আমি পাথরের দোকানদারী করি না। আমি করি তিক্ষা।'  
 'শেন মেছকালৰ। কুড়ি হাজার টাকা আমার শেষ অফার। কুড়ি হাজার টাকা থেকে এক ঘয়সা বেশি দিতে পারব না। তুমি বিবেচনা করে দেখ। ধর, সিগারেটা ধরাও। সিগারেট টান দিয়ে ঠাণ্ডা মাথায় বিবেচনা কর।'  
 মেছকালৰ সিগারেট নিল। আমিই দেয়াশ্লাই দিয়ে সিগারেট ধরিয়ে দিলাম। মেছকালৰ এগিয়ে গেল পাথরের দিকে। আমি বললাম, 'কি মেছকালৰ বেচবে?'  
 'ক্ষেন।'  
 'আমি কিস্তু চুলে যাব, পেছন থেকে ডাকলে লাভ হবে না।'  
 'মেছকালৰ চোখ-মুখ শক্ত করে বলল, 'লাখ টাকা দিলেও পাথর বেচুম ন।'  
 আমি যানেজারকে নিয়ে হাঁটা দিলাম। কিছুদূর নিয়ে ফিরে তাকালাম—  
 মেছকালৰ পাথরের উপর বসে আছে। সিগারেট টানছে।  
 যানেজার সাহেব বললেন, 'ঐ গাঢ়া বেধহয় কুড়ি হাজার টাকা মানে কত টাকা সেটোই জানে ন।'  
 আমি বললাম, 'হচ্ছে পারে। একশ পর্যন্ত সে হয়তো গুনতেই জানে না।  
 কুড়িতে আটকে আছে। তার কাছে একশ হল পাঁচ কুড়ি।'  
 'বিহুবা এও হচ্ছে পারে গাধাটা তেরেচে এটা অনেক দামী জিনিস। ফাঁকি দিয়ে তার কাছ থেকে সন্তান নিয়ে যাওয়া হচ্ছে।'  
 'এটাও হচ্ছে পারে।'  
 যানেজার সাহেব বললেন, 'আগনি কেন কুড়ি হাজার টাকায় এই পাথর

৯১

কিনতে চাহেন?’

আমি গভীর গলায় বললাম, ‘এটা সাধারণ পাথর না। বুরই রহস্যময় পাথর।’

‘বি রহস্য?’

‘সেটা তো মানেজার সাহেবে বলা যাবে না। গৃহ বিদ্যা বা বাতেনী জ্ঞান সর্ব সাধারণের জন্যে।’

‘ভিক্ষুক মেছকদর মিয়া কি পাথরের রহস্যের কথা জানে?’

‘জনতেও পারে। ন জানলে সে তার ডেরায় ফেরার সময় এমন একটা ভারী পাথর বলে নিয়ে যায় কেন? মানেজার সাহেবে শিখারেই থাবেন?’

‘ষষ্ঠি না, আমি ধূমপান করি না।’

‘আপনাকে বুরই বিচ্ছিন্ন মনে হচ্ছে। শরীরে কিছু কাফিন চুকলে নার্ত শান্ত হতে পারে।’

ম্যানেজার সাহেবে সিগারেট নিলেন। সিগারেট ধরালেন। প্রথম টান দিলেন। তার নার্ত শান্ত হচ্ছে বলে মনে হচ্ছে না। ঘাঢ়ের রং ফুসো উঠছে। চোখ-মুখ শক্ত।



তদলোকের বয়স চতুর্থশত হতে পারে, আবার পঞ্চাশ পাঁচ পঞ্চাশও হতে পারে। রোদে ঝুলে যাওয়া চেহারা। মনে হয় দীর্ঘদিন ক্যানভাসেরে চাকরি করেছেন— রোদে মোদে ঘুরেছেন। ক্যানভাসেরদের মতই ধূর্ত চোখ। সারাক্ষণই ইন্দুরের মত চোখের মধ্যে নড়ছে। চোখই বলে দিছে, মানুষটা অহিংস প্রকৃতির। গলার ঘর ভারী। আমার ধূমী, মে ঘরে উনি এখন কথা বলছেন সেই স্বরটা আসল না, নকল। বিশেষ বিশেষ কথা কোনো সময় ভদ্রলোক সম্ভবত গলার ঘর বলছেন।

তিনি আমার দিকে খনিকটা ঘুঁকে এলেন। গলার ভারী ঘর আরো ভারী করালেন। প্রায় ফ্যাস্কেটে গলায় বললেন, ‘বুরলেন ভাই সাহেবে, আপনাকে একজন জন্মাক জোগাড় করতে হবে। তাকে দিয়ে সোকালয়ের বাইরে অমাবশ্যক রাঙ্গিতে একটা লাউঙারের বিছি পুতুতে হবে। বিচি শোভার সঙ্গে সঙ্গে মাটিতে ছাঁড়িয়ে দিতে হবে কুমারী কন্যার খতুকালীন নষ্ট রক্ত। সেই কুমারী কন্যাকেও হতে হবে জন্মাক।’

আমি হাই তুলতে বললাম, ‘আপনার দেখি জন্মাকেরই কারবার।’

ভদ্রলোক আহত গলায় বললেন, ‘আমাকে কথা শেষ করতে দিন। মাঝখানে কথা বললে হবে কিভাবেও। আপনার যদি কিছু বলার ঘাকে আমি কথা শেষ করি তারপর করবেন।’

আমি আবারো হাই তুলতে তুলতে বললাম, ‘ছি আছা।’

আমার এবারের হাইটা ছিল নকল। ভদ্রলোককে বুকিয়ে দেবার চেষ্টা যে তাঁর জন্মাক বিষয়ক গর শনতে ইচ্ছা করছে না। ভদ্রলোক এই সহজ সত্ত্ব ধরতে পরাবেন না। তিনি গল্প শুনিয়ে ছাড়বেন।

‘এরপর আপনাকে যা করতে হবে তা হচ্ছে প্রতিদিন খালি পায়ে সোতবিশী নদী থেকে মাটির পাতে এক পাতে করে পানি আনতে হবে। পানি আনার কাজটা করতে হবে মধ্যবাতে।’

‘ও আছা।’

'পানি আনতে হবে উলঙ্গ অবস্থায়। তখন গায়ে কোন কাগজ থাকলে চলবে না। সেই পানি দিয়ে প্রতি রাতেই লাট গাছের বীজ মে জায়গায় পুঁতেছেন, সেই জায়গাটা তিজিয়ে দিতে হবে। যতদিন না বীজ থেকে অঙ্কুরোদগম না হচ্ছে।'

আমি আগহশূন্য গলায় বললাম, 'ইন্টারেক্টিং।'

তদনোকের আরো আবিকটা ঘটে এলেন। আমি লক্ষ্য করলাম, তদনোকের গলা অন্য মানুষদের গলার ত্বের লক্ষ। তাঁর শরীরটা আগের জ্যোগাতেই আছে কিন্তু গলা লক্ষের কারণে মাখাটা এগিয়ে এসেছে।

'অঙ্কুরোদগমের পর থেকে লাউগাছে প্রথম ফুল আসা পর্যন্ত আপনাকে ঠিক সহজেবে হ্যারত মূল আলায়হেস সালামের মাঝের সতেজেটা নাম পড়ে গাছে ফুলিতে হবে।'

'সতেজেটা নাম আমি পাব কোথায়?'

'আপনাকে আমি লিখে দিছি। এক্ষুনি লিখে দিছি।'

'থাক, দরকার নেই।'

'দরকার নেই সেন।'

'কাগজ আমি রাখব কোথায়? আমার পাঞ্জাবীর পকেটে নেই।'

তদনোক আহত গলায় বললেন, 'আপনি মনে হয় আমার কথা বিশ্বাস করতে পারবেন না। যদি ঘন হাই ভূমেছেন। অবশ্যি বিশ্বাস করা বাধ্য।'

আমি হাসিমুখে বললাম, 'বিশ্বাস করছি। প্রতিটি শব্দ বিশ্বাস করছি। কারণ বিশ্বাসে মিলায় বস্তু — তর্কে বহুল।'

'মহত্ত্বের কথা আমি কাটকে বলি না। মানুষের মনে তুকে গেছে অবিশ্বাস। অবিশ্বাসীদের এইসব বলে লাত নেই। আপনাকে আমার পছন্দ হয়েছে বলে বলছি। তাছাড়া আমি মেলিমিন বাচব না। সারাজীবনের সঙ্গে কিছু মন্ত্র-তত্ত্ব কাটকে দিয়ে মেতে চাই। আরেক কাপ চা খাবেন?'

'ফ্রিলা।'

'খন, আরেক কাপ থান। চায়ের সঙ্গে কোন নাশতা দেব? মৃত্তি আছে? মৃত্তি মেখে দিতে বলি?'

'ক্ষম।'

তদনোক বাড়ির তেতর তুকে গেলেন। আমি বসে আছি অক্ষকারে। আমার সামনে একক্ষণ একটা হারিকেন ছিল। তদনোক তেতরে ঢেকার সময় হারিকেন নিয়ে গেছেন। ঢাকায বিশ্বাস লেও মেডিং শুরু হয়েছে। দু'ঘটার আগে ইলেক্ট্রিসিটি আসবে না। এখন শীতকাল গরম লাগার কথা না। কিন্তু গরমে শরীর যেমে গেছে। ইলেক্ট্রিসিটি এলেও এই গরমের হাত থেকে বাচা যাবে না।

কারণ বসার ঘরে ফ্যান নেই। তদনোক গুরু করার সময় প্রবলবেগে হাওয়া করছিলেন। তিনি তেতরে ঢেকার সময় হারিকেনের সঙ্গে হাতপাথাও নিয়ে গেছেন।

তদনোকের আচার-আচরণের মধ্যে কিছু মজার ব্যাপার আছে— তেতরের বাড়িতে চুকলে সহজে বের হতে চান না। মৃত্তির কথা বলে তেতরে চুকেছেন, আর বের হচ্ছেন না। কখন বের হচ্ছেন কে জানে।

ইনিই আমাদের মুহাম্মদ ইয়াকুব। বাবা—সুলায়মান, ধাম— নিশাখালি, জেলা— নেতৃকোন। তদনোক কবিয়াজ হলেও কথাবার্তায় মনে হচ্ছে মন্ত্র-তত্ত্ব যাদ-টেনার ব্যাপারে বিশেষ।

ইয়াকুব সাহেব আমাকে বালিকটা পছন্দ করেছেন বলে মনে হচ্ছে। আজ নিয়ে তাঁর সঙ্গে আমার তৃতীয় দফা সাক্ষৎ। এর মধ্যেই তিনি আমাকে অন্দৃশ্য হবার মন্ত্র শেখাচ্ছেন। অবশ্যি একটা তাঁর কোন একটা বৌশলা হতে পাবে। ধূর্ত মানুষদের নানান ধরনের বৌশলা থাকে। মন্ত্র-তত্ত্বের কথা বলে আমাকে অভিভূত করার চেষ্টা করছে। আমি অভিভূত হচ্ছি না। এ ব্যাপারটা সহজে তদনোকের মনোবেদনের কারণ হয়ে দাঢ়াচ্ছে।

ইয়াকুব সাহেব এক হাতে মৃত্তির বাটি এবং হারিকেন অন্য হাতে কাপড়ের ব্যাপ নিয়ে চুকলেন।

'ইলেক্ট্রিসিটি আজ বোধহয় আসবেই না। নিন, মৃত্তি থান। খেয়ে অবশ্যি আরাম পাবেন না— মৃত্তি নাজন্তু হয়ে গেছে। টিন ভাল করে বস্তু করেনি। বাতাস চুকে মৃত্তি মরা হয়ে গেছে।'

আমি গঁজার গলায় বললাম, যেরা মৃত্তি জীবিত করার কোন মন্ত্র নেই? মন্ত্র পড়ে তিনবার ফুঁ দিলেন, মৃত্তি তাজা হয়ে গেল।

তদনোক দুঃখিত চেখে তাকিয়ে রইলেন। আমি মৃত্তি চাবাতে চাবাতে বললাম, 'ঠাট্টা করেছিলাম।'

ইয়াকুব সাহেব শীতল গলায় বললেন, 'মন্ত্র বিশ্বাস করা—না—করা আপনার ইচ্ছা। কিন্তু মন্ত্র নিয়ে ঠাট্টা করবেন না। মন্ত্র হল বিচিত্র ধৰ্মের কিছু শব্দ। শব্দ তুচ্ছ করার বিষয় নয়। অদিতে কিছুই ছিল না। অদিতে ছিল মহাশূন্য। তাপম একটা শব্দ হল— "বিগ বেং।" তৈরি হল বিশ্বরক্ষাত। কাজেই সৃষ্টির মূলে আছে শব্দ।

আমি বললাম, 'আপনার কাপড়ের ব্যাপে কি?'

'আপনাকে একটা ভিনিস দেখবার জন্যে এনেছিলাম— মানুষের একটা কঙাল, নরমসু।'

'দেখন।'

'আপনি অবিধানী টাইপ মানুষ। আপনাকে দেখানো না—দেখানো সমান।  
সত্যকর কোন জহুরীর হাতে পড়লে সে লাখিয়ে উঠত।'

'বিশেষ ধরনের নরমত্ত?'

'খুব লক্ষ্য করে দেখুন, আপনার কাছে বিশেষ ধরনের মনে হয়, নাকি  
সাধারণ মনে হয়।'

আমি বিশেষ কিছু দেখলাম না। সাইজে ছেট একটা নরমত্ত। কাল সাদা  
থাকে। এটা একটু কালতে হয়ে আছে— মনে হয় অনেকদিনের পুরানো।

'বিশেষ কিছু বুঝতে পারছেন না?'

'ছিন্ন।'

'অফিকেটুর দু'টা থাকে— এর যে তিনটা সেটা বুঝছেন?'

আমি দেখলাম কপালে একটা ফুটো। সেই ফুটোকে অফিকেটুর মনে  
করার কারণ নেই। হয়ত অন্য কোন কারণে ফুটো হয়েছে। কপালে গুলি থেকে  
কপাল ফুটো হওয়ার কথা।

'আপনি বলতে চাচ্ছেন জীবিত অবস্থা এই মানবটার তিনটা চোখ ছিল?'

ইয়াকুব সাহেব নরমত্ত থলিতে ভরতে ভরতে বললেন, 'সব মানুহেরই  
তিনটা চোখ থাকে। দু'টা দৃশ্যমান, একটা অনৃশ্য।'

'ও আছ!'

ইলেক্ট্রোসিটি চল এসেছে। আমি বললাম, 'ইয়াকুব সাহেব, আমি উঠ।'

ইয়াকুব সাহেব আমাকে রাস্তা পর্যন্ত এগিয়ে দিলেন। অতি বিনোদ তঙ্গিতে  
বললেন, 'একদিন এসে আমার সাথে চারটা খানা খান। দরিদ্র মানুষ বেশি কিছু  
খাওয়াতে পারব না। মটরগুটি দিয়ে শিং মাহের খোল আর তাত। কবে থাবেন  
কুন্ন।'

'আগামী সপ্তাহে আসি।'

'ভি আছে, আসুন।' আপনার মোটা বুকুকেও নিয়ে আসবেন। উনার জন্মে  
একটা অস্ত্র বানিয়ে রাখব। খেলে ক্ষুধা করে যাবে। অতি সুখান্দোও অরুচি হবে।

'টেবলেট জাতীয় কিছু?'

'ছি। ফার্মেসির টাবলেট না— বড় জাতীয়। সকাল-বিকাল দু'বেলা দেবা।'  
'বড় খেলে কিছুবে লাগবে না!'

'ছিন্ন।'

'এই ক্ষুধা মুক্তি টাবলেট তো সারা বাংলাদেশের মানুহের জন্মে দরকার।  
তৈরি আছে? থাকলে দু'টা দিন নিয়ে যাই— টাই করে দেখি।'

'ছি না, তৈরি নেই।'

'তৈরি করে গাধুন। টেবলেটের নাম কি?'

'কোন নাম দেইনি।'

'নাম দিন ইয়াকুবের ক্ষুধামুক্তি বড়ি।'

'আপনি আমার কথা বিশ্বাস করছেন না। তাই না?'

আমি জবাব না দিয়ে হাঁটা দ্রলাম। ফাতেমা খালা সিঙ্গাপুর থেকে  
ফিরেছেন কিনা ব্যর সেয়া দরকার।

খালা বাড়িতে নেই। তিনি তার অর্বিটেটের কাছে গিয়েছেন। বাড়িতে যে  
সোয়ানা বসন্তে তার তিজাইন নিয়ে কথা বলবেন। পুরোনো তিজাইন তার পছন্দ  
হচ্ছে না। ফলস সিলিং অনেকে উচ্চতে হয়েছে। আরো নিচু হওয়া দরকার।  
সোয়ানার ঘরে দরবন্ধ দরবন্ধ ভাবটা আসে। তামানা আমাকে বসতে দিল। তার  
আচার-আচারণ স্বাভাবিক। মনে হচ্ছে আজই তার সঙ্গে আমার প্রথম দেখা।  
আমি চাইবার আগেই লম্ব গ্লাস ভর্জ রঙের কি এক সরবরত এনে দিল।  
সরবরতের গ্লাসে বরফের কণ ভাসছে। আমি চুমুক নিতে নিতে বললাম, 'জামান  
ভাল আছে?'

জামান বিহিত হয়ে বলল, 'জামান কে?'

'আপনার হাঁট ভাই রিকশা থেকে পড়ে যে ব্যাথা পেয়েছিল।'

'ও আছে। হ্যাঁ, জামান ভাল আছে। তার রিকশা থেকে পড়ে ব্যাথা পাওয়ার  
কথা আপনাকে কে বলেছে?'

'আপনার ম্যাজাম বলেছেন।'

'যে আপনাকে যা বলে ভাই আপনি মনের ভেতর চুকিয়ে রেখে দেন?'

'সবাই ভাই করে।'

'সবাই ভাই করে না। আপনি অন্য সবার মত না।'

'আমি আলাদা?'

'হ্যাঁ আলাদা, তবে ভাল অর্থে আলাদা না, মন অর্থে আলাদা। আপনার  
সমস্ত জীবন এবং কর্মকাণ্ড জুড়ে আছে তান। মিথ্যা রহস্যের ধেয়া সৃষ্টি করে  
আপনি তার মধ্যে বাস ব্যরতে ভালবাসেন। কুড়ি হজার টাকা দিয়ে আপনি  
পাথর কিনতে পিয়েছিলেন। যাননি?'

'হ্যাঁ।'

'হ্যাঁ পাথর সে বিক্রি করল না, কারণ আপনি এমনই এক রহস্যের কুয়াশা  
তার সামনে তৈরি করলেন যে সে তাবল না জানি এটা কি পাথর। কাজটা

আপনি করলেন ম্যানেজার সাহেবের সামনে কারণ আপনি একই সঙ্গে তাকেও ভৱিত্ব দিলে চেয়েছেন— তাই না।'

'হ্যাঁ। উনি কি ভাড়কেছেন?'

'যথেষ্ট ভাড়কেছেন। গতকাল অনেকক্ষণ তিনি আমার সঙ্গে খুলিবলি করলেছেন পারটা দেখে আসার জন্য।'

'আপনি কি দেখে এসেছেন?'

'হ্যাঁ।'

আমি আধা দিয়ে জিজ্ঞেস করলাম, 'পারটা হাত দিয়ে ছুঁয়েছেন?'

'হাত দিয়ে ছুঁয়ে কেন?'

'হাত দিয়ে ছুঁয়ে একটা ইন্টারেক্শন ব্যাপার হত। ইলেক্ট্রনিক শকের মত একটা শক দেখেন।' নেকষ্ট টাইম যখন যাবেন হাত দিয়ে ছুঁয়ে দেখবেন।'

তামাঙ্গু একটিতে আমার দিকে তাছিম আছে। আমি আরাম করে সরবত্ত থাছিঁ। সরবত্তে কেমন লজেস লজেস গুরু অভিভিত মিষ্টি। অভিভিত মিষ্টিটা মনে হয় এই সরবত্তের জন্যে প্রয়োজন। মিষ্টি কর হলে ভাল লাগত না।

'হিঁড়ু সাহেব!'

'হ্যাঁ!'

'পারটা হাত দিয়ে ছুঁয়ে দিলে আমি চারশ ভাস্টের শক থাব?'

'চারশ ভোক্টের শক থাবেন না— মুদ্র ধাক্কার মত থাগবে।'

'আপনি আমাকে নিয়েও রহস্য তৈরি করবেন না। শীঘ্ৰ। সরবত্ত থাছেন— খান। আমি হ্যাঁ দৃঢ়কক্ষে মানুষ হয়েছি। যারা দৃঢ়কক্ষে মানুষ হয় তারা এত সহজে বিশ্রান্ত হয় না। বিঠায় কথা হচ্ছে মানুষ হিসেবে আমি কথনো বোকা ছিলাম না।'

আমি সরবত্তের প্লাস লভ ছুঁক দিয়ে বললাম, 'ফাতেমা খালার ফিরতে মনে হব দেবি হবে। আমি উঠি!'

তামাঙ্গু কঠিন প্লাস বলল, 'না আপনি উঠবেন না। ম্যাডাম আমাকে বলে গেছেন আপনি যদি আসেন আপনাকে যেন আটকে রাখা হয়। লাইবেরী ঘরে গিয়ে বসতে পারেন— বইটা শুধু সময় কাটবে।'

আমি বললাম, আপনির ম্যাডাম নিশ্চয়ই আপনাকে বলেননি আমাকে লাইবেরী ঘরে নিয়ে বসতে। আমার ধারণা তিনি আপনাকে বলে গেছেন আমার সঙ্গে গঞ্জ-গুজৰ করতে। তাই না!

'হ্যাঁ তাই। বেশ আপনি গুরু করুন, আমি শুনছি।'

'কৃপকথা শুনবেন?'

'হ্যাঁ শুনবেন তাই শুনব।'

আমি বেশ কাবাদা করে গুরু শুরু করলাম। যে কোন কাবাগেই হোক তামাঙ্গু মেয়েটি আমার টপৰ অসম্ভব বিৱৰণ। বিৱৰিটা এই পৰ্যায়ে যে সে আমার দিকে তাৰকাতেও পাৰছে না। সে গুৰু শুনছে খুবই অনাধিক এবং অনিষ্টয়।

তিনি জেলে গিয়েছে মাছ মারতে। সাগৰে জাল ফেলেছে; জালে ধৰা পড়ল এক মৎস্যকল্যা, মারমেইড। মৎস্য কল্যা বলল, 'তোমাদের আঢ়াহিৰ দোহাই লাগে তোমোৱা আমাকে মেৰ না। আমাকে সাগৰে ফেলে দাও, তাৰ বদলে তোমাদের পঠতাৰে একটা কৰে ইচ্ছা আমি পূৰ্ণ কৰিব। তাৰে আমি তো আৱ আলাদানোৱা মত ক্ষমতাৰান না— আমাৰ ক্ষমতা সীমিত। আমি টাকা পয়তাৱ বন্দোগত নিচে পাৰব না।'

পৰ্যায়ে জেলে, 'আচ্ছা ঠিক আছে, তুমি আমাৰ বুদ্ধি বাড়িয়ে দাও। এখন যে বুদ্ধি আমাৰ আছে তা তাৰল কৰে দাও।'

মৎস্য কল্যা বলল, 'ভাবল কৰা হল।'

পৰ্যায়ে জেলে সঙ্গে শুবল তাৰ বুদ্ধি বেড়েছে।

হিঠিয়া জেলে বলল, 'অকজন যখন বুদ্ধি নিয়েছে তখন আমিও বুদ্ধিই নেব। তবে তাৰল না আমাৰ বুদ্ধি তিনগুণ কৰে দাও।' মৎস্য কল্যা বলল, 'তিনগুণ কৰা হল।'

তৃতীয় জেলে বলল, 'আমিও বুদ্ধিই চাই তাৰে চাই দশগুণ।'

মৎস্যকল্যা বলল, 'বৰ্দৰৰ, এইটি কৰবেন না। দশগুণ বুদ্ধি তোমাকে দেয়া হলে তুমি বিগড়ে গড়বে।'

'বিগড়ে গড়া না গড়া আমাৰ ব্যাপার। তোমার কাছে দশগুণ বুদ্ধি চেমোহি, তুমি বুদ্ধি দাও।'

'এখনো সময় আছে ভেবে দেখ।'

'তাৰভাৱিৰ কিছু নই।'

মৎস্যকল্যা নৈরানিধীস ফেলে বলল, 'আচ্ছা যাও, তোমাকে দশগুণ বুদ্ধি দেয়া হল। আৱ সঙ্গে সঙ্গে তৃতীয় জেলে একটা মেয়ে হয়ে গেল।'

তামাঙ্গু বলল, 'আপনি বলতে চাহেন যে মেয়েদেৱ বুদ্ধি পুৰুষদেৱ চেয়ে দশগুণ বেশি।'

'হ্যাঁ।'

'এই গুৰুটা কি আপনি আমাকে খুশি কৰার জন্যে বললেন?'

'আপনাকে খুশি করার একটা প্রচলন ইচ্ছা আমার ছিল তবে গুরুটা আমি বিশ্বাস করি।'

তামান্না নড়ে চড়ে বসল। এবং আমাকে ইঠাং খুবই বিশ্বিত করে দিয়ে বলল, 'হিমু সাহেব, অনুন। যাড়জম চলে আসের আগে আপনাকে খুব জরুরী কিছি করা বলি, দয়া করে মন দিয়ে উন্মুক্ত। আপনার বুকিও মেয়েদের মতই দশঙ্গ দেশি। তবে এই বুকিতে কাজ হবে না। আমি আপনাকে পছন্দ করি না। আমি যাদেরকে পছন্দ করি না। আপনার সে বাপগুরটা বুকিতে দেই না। বরং এমন ভাব করি যাতে তারা বিভ্রান্ত হন। তারা মনে করেন আমি তাদের খুবই পছন্দ করি। আপনার বেশ ব্যক্তিগত করলাম। আমি যে আপনাকে অপছন্দ করি সেটা জানিবে সিলাম।'

'কেন?'

'আপনার সঙ্গে অশ্পষ্টতা রাখলাম না।'

'আপনি আপনার যাড়জমকে খুবই অপছন্দ করেন তাই না?'

'হ্যাঁ উনাকে অপছন্দ করি। দেখা মানুষ আমার পছন্দ না। আপনার খালি মেরে হয়েও বেক। মত্যাক্ষুণ্ণার গুর আপনার খালির ক্ষেত্রে কাজ করছে না। যে কারণে আমার অপছন্দের বাপগুরটা উনাকে জানতে দেইনি। কারণ উনার সাহায্য আমার দরকার। আমি বিশাল সংসার নিয়ে বিপদে পড়ে গেছি।'

তামান্না বেশ সহজ এবং স্বাক্ষরিতে আমার সামনে বসে আছে দুজন দুজনের দিকে তাকিছে। আমি তাকে সামনে অনুশৃঙ্খ একটা দাবার সেট। দাবা শেলা হচ্ছে। আমি তাকে বিশ্বিত দিয়েছে। যোড়ার কিছি। এক সঙ্গে বাজা এবং মন্ত্রী ধূরা পড়েছে। বাজা বাঁচাতে হলে আমাকে মন্ত্রী বিসর্জন দিতে হবে। বাজা না বাঁচিয়ে মন্ত্রী বাঁচাতে কেমন হয়। বেগ সেব হয়ে যাব। তাতে কি, একবার মত শক্তিশালী ঘুটি তে বেঁচে রইল। আমি বাজা বিসর্জন দেবার বাবস্থা বললাম। কোমল গলায় বললাম, 'তামান্না, আপনি বোধহয় জানেন না, আমি আপনাকে খুবই পছন্দ করি। আপনার মত পছন্দ এই জীবনে আরেকটি মেয়েকে করেছিলাম তার নাম কলা।'

তামান্না আমার কথায় মোটেই চমকাল না। সে কঠিন মুখে বলল, 'শীঘ্ৰ আপনি মিথ্যা কথা বলবেন না। আপনি এই সীৰ্প জীবনে কাউকে পছন্দ করেননি। ভবিষ্যতেও কাউকে পছন্দ করবেন বলে মনে হয় না। পৃথিবীতে কিছু কিছু খুব দুর্ভাগ্য মানুষ জন্মাবৎ থাকে। তারা কাউকে তালবাসতে পারে না। আপনি সেই সব দুর্ভাগ্য মানুষদের একজন।'

আমি বললাম, 'ও আছে।'

'আপনি মহাশূণ্যে সেজে পথে পথে হাঁটোন — সেটাই আপনার জন্মে তাল।' আমি আবাবো বললাম, 'ও আছে।'

তামান্না সীৰ্প কোন বক্তৃতা জন্মে তৈরি হাঁচিল — নিজেকে সামলে নিল কারণ ফাতেমা খাল এসে পড়েছে। তাতে খুবই উৎকৌতুক মনে হচ্ছে।

হাপাতে হাপাতে বললেন, 'কেমন আছিস হিমু!'

'ভাল।'

'আরো আপে চলে আসতাম, বুলবুল পাথরটার কথা বলল। ভাবলাম ঠিক আছে দেইই যাই। পথে দেখে এসেছি।'

'হাত দিয়ে ঝুঁয়েছ?'

'হ্যাঁ তুই বললে নিখিস করবি না — হাত দিয়ে ছৌয়ামাত ইলেক্ট্রিক শকের মত শুষ খেলাম। মনে হল পাথরটা জীবন্ত। আমার গায়ের সব গোম খাড়া হয়ে গেল।'

আমি তামান্নার সিকে তাকালাম। তামান্না আমার দৃষ্টি সম্পূর্ণ অপ্রাপ্য করে বিজ্ঞাপনের মত ইচ্ছাটে গলাল, 'যাড়জম, আপনি একা গিয়ে দেখে এলেন আপনাকে নিলেন না। আমিও পাথরটা হৃতে দেখতাম।'

ফাতেমা খাল বললেন, 'পাথর গিয়ে দেখার দরকার নেই। পাথরটা আমি বিলব। যত টাকা লাগে বিলব। গাড়িতে আসতে আসতে মন হিৱ করেছি। হিমু, তোৱ উপৰ দায়িত্ব হচ্ছে পাথরটা কেনাৰ বাবস্থা কৰা। তোকে আমি তার জন্মে আলাদা কৰিবলাক দেব। কেনে বাবস্থা কৰতে পাৰবি না?'

'পুৰুষ।'

'বুলবুল বলছিল তুই নাকি এই পাথরটার বিষয়ে জানিস। পাথরটার ক্ষমতা কি বল দেবি।'

'বালা এটা হল ইচ্ছাপূৰণ পাথর। পাথরে হাত দিয়ে যা চাইবে তাই পাবে।'

'সত্তি কৰছিস, ন ঠাট্টা কৰছিস।'

'সত্তি কৰণি।'

'তোৱ মুখ দেখে মনে হচ্ছে তুই ঠাট্টা কৰছিস। ঠাট্টা কৰলেও কিছু যায় আসে না — পাথরটা আমার দরকার। তুই এক কাজ কর এক্ষুনি যা পাথরটা নিয়ে আয়। পাতেৱো গাড়িটা নিয়ে যা — মালিক শুল্ক নিয়ে আসবি। পাথরের দাম যা ঠিক হয় আমি দিয়ে দেব।'

'ইয়াকুব সাহেবের সঙ্গে দেখা হচ্ছে। আমি এক কাজ কৰি, গাঢ়ি কৰে না হয় ইয়াকুব সাহেবেকে নিয়ে আসি। পাথর আরেকদিন আসব।'

'ইয়াকুব পালিয়ে যাচ্ছে ন। তুই পাথর আপে নিয়ে আয়। পাথরের সত্তি সত্তি ক্ষমতা আছে কিনা সেটা আজ রাতেই টেষ্ট কৰবি।'

আমি আড়তোকে তামান্নার দিকে তাকালাম। তার স্টোরের কোণায়  
মোনলিসা ষাইল হাসি।

খালা তামান্নাকে বললেন, 'তামান্না তুমি একটু এই ঘর থেকে যাও। আমি  
হিস্কে কিছু পার্সোনাল কথা বলব।'

তামান্না চলে গেল। খালা গলার স্বর খাদে নামিয়ে বললেন, 'মেয়েটাকে  
ইচ্ছা করে নেবে নিয়েছিসম যাতে দু'জনের মধ্যে পরিচয়টা গাঢ় হয়। মেয়েটাকে  
কেমন লাগছে?'

'সুন্দরী।'

'কি রকম সরল মেয়ে দেখেছিস? জগতের কোন জটিলতা এই মেয়ে ধরতে  
পাবে না। আর আমাকে যে কি পছন্দ করে। আমার নিতের কোন মেয়ে থাকলে  
সেও আমাকে এত পছন্দ করত না। এই যে অমি তাকে ছাড়া পাথর দেখে  
এসেছি তার জন্ম' সে কেমন মন খারাপ করে দেখেছিস? আর একটু হলে কেবল  
ফেলত। তাই না?'

'হ্যাঁ।'

'চোখ ছল ছল করছিল কিন্তু তুই বল।'

'ছল ছল মানে আরেকটু হলেন টপটপাতি পানি পাড়া শুরু হত।'

'আমি যদি এখন তাকে বলি, তামান্না আমি চাই তুমি হিমুকে বিয়ে কর,  
সে কোনদিকে তাকাবে না, তুই যে একটা প্রথম প্রেমীর জাগাবত, চাকরি  
বাবরি নেই, রাস্তায় ঘূরে বেড়াস এইসব নিয়েও ভাববে না। চোখ বন্ধ  
করে বিয়ে করবে।'

'তাহলে বলে ফেল। ফেলছ না কেন? 'ধর তজ্জ মার পেরেক' কামেলা শেষ  
করে দাও।'

'আমি বলব না। আমি চাই মেয়েটা যেন নিজ থেকে তোর প্রতি আকৃষ্ট হয়।  
সে নিজেই যদি তোকে পছন্দ করে ফেলে তাহলে আর আমাকে পরে দোষ  
দিতে পারবে না। আমি অবশ্যি তামান্নার বেইন ওয়াস করে ফেলেছি— তোর  
সবক্ষেত্রে তোর সপর্কে বাসিয়ে বাসিয়ে অনেকে মিথ্যা কথা বলি।'

'খালা মেনি থ্যাঙ্কস।'

'তুই একটা কাজ করবি, মেয়েটাকে নিয়ে তাল কেন রেষ্টুরেন্টে থেকে  
যাবি। আমি খরচা দেব। মেয়েরা রেষ্টুরেন্টে থেকে পছন্দ করে।'

'তাল কেন রেষ্টুরেন্টে তো খালি পায়ে আমাকে কুকভেই দেবে না।'

'সাধার মত কথা বলিস না তো, তোকে স্যাডেল, পাঞ্জাবী এইসব কিনে  
দিয়েছি ন। ফিটফট হয়ে যাবি। আরেকটা কথা, রেষ্টুরেন্টের বয় বার্চুর সঙ্গে

বসিকতা করবি না। নোয়ার লেভেলের লোকজনদের সঙ্গে বসিকতা মেয়েরা  
একদম পছন্দ করে না।'

'কোথায় পড়েছ রিভার্স ডাইজেস্টে?'

'মানে নেই কোথায় পড়েছি। তুই এক কাজ কর — আগামীকালই যা।  
গুলশানে একটা রেষ্টুরেন্টে আছে তলুরী খুব ভাল করে। আমার কাছে ওদের  
কার্ড আছে, তাকে দিবিছি। একটু বেস কার্ডটা নিয়ে আসি।'

'কার্ডটা কাল নেই।'

'কাল ভুল যাব। আজও নিয়ে যা।'

আমি তসুর হাউসের কার্ড এবং গাজেরো গাড়ি নিয়ে বের হলাম। ডিস্ক্রু  
মেছকানৰ সাহেবেতো পাওয়া গেল না। পাজেরো ডাইভারকে বললাম, 'চলুন  
শহরে ঘূরে বেড়াই। ডিস্ক্রু খুঁজে বেড়াই।'

পাজেরো ডাইভার খুবই বিরক্ত হল। পুরো দু'ফটা শহরে ঘূরলাম। তারপর  
গোলাম শহরের বাইরে। সাতার শৃঙ্খলোধ দেখে এলাম। শৃঙ্খলোধ দেখা হবার  
পর ডাইভার বলল, 'আর কোথায় যাবেন?'

আমি বললাম, 'জাপান বাল্লাদেশ মৈত্রী সেচ্ছতে চল। সেচ্ছটা দেখা হয়নি।'

'গাড়িতে তেল নেই। তেল নিতে হবে। ফুর্মেরে কাঠি মাঝামাঝি জাপান  
আছে, সে বলছে তেল নেই। আমি মধুর গলায় বললাম, 'তেল ছাড়াই গাড়ি  
লাবে। আমি সাধু মানুষ, মন্ত্র পড়ে ফু দিয়ে নিষ্ঠি। বিনা তেলেই গাড়ি চলবে।  
তুমি তেল বিষয়ক কেন চিন্তাই কামায় হ্যান দিও না।'

'আপনি সত্তি সত্তি জাপান-বাল্লাদেশ সেচ্ছ দেখতে যাবেন?'

'অবশ্যই। পকিস্তান-বাল্লাদেশ বৈরী সেচ্ছ থাকলে তাল হত। সেটাও দেখে  
আসতাম। নাই যখন জাপান-বাল্লাদেশ মৈত্রী সেচ্ছ সই।'

'চোলন।'

আমি চোখ বন্ধ করে গহীর উদ্বিগ্নে পিছুক্ষণ বিড় বিড় করে গাড়ির  
ডেসোর্কে দু'টা ফু দিয়ে নিলাম। ডাইভারের নিশ্চয়ই পিতি ভুলে গেল।

জাপান-বাল্লাদেশ মৈত্রী সেচ্ছ দেখে ফিরতে ফিরতে রাত দশটা বেজে  
গেল। গাড়ি যখন সঙ্গে আছে বাণাঙ্চির বাসা খুঁজে বের করলে কেমন হয়।  
ডাইভারকে বললাম বাসাবের দিকে যেত। জীপের ডাইভার ভয়ংকর দৃষ্টিতে  
আমার দিকে তাকাচ্ছে। তার পাশের সীটে বসে না থেকে আমি যদি রাস্তায়  
থাকতাম সে নির্ধার আমাকে চাপা দিত।

'ডাইভার!

ফু।'

'তেল ছাড়া শুধু ফুঁয়ের উপর গাড়ি কেমন চলছে দেখেছে?'

'রিজার্টে সামান তেল ছিল তাই দিয়ে চলেছে। আর চলবে না।'  
'চলবে না মানে? আবারো ফুল দিয়ে দেব — আবারো চলবে, ময়মনসিংহ  
থেকে ঘুরে আসতে পারব।'

'ময়মনসিংহ যাবেন?

'ফুল'

'ময়মনসিংহ কি?

'বিছু না। আমার ফুলের জোর পরীক্ষা করা।'

ডাইভার গাঁথুর হয়ে গেল। আমি খুঁজে বাঙাটির বাড়ি বের করলাম।  
হেট একত্বা বাড়ি। গাছপালায় ভর্তি। আমি পাজেরো ডাইভারকে বললাম,  
'বেশিক্ষণ না। আমি ঘটা খানিক থাকব — তারপর ময়মনসিংহ। তাই অপেক্ষা  
কর। আমার সঙ্গে টাকা পরসা থাকে না, কাঞ্জেই চা খাওয়ার টাকা দিতে পারছি  
ন। পেটেল বেতে চা নাপাত করতে পার। নমস্কা নেই।'

বাঙাটি বাসায় ছিল না। তার ছীন খুবই কৌতুহলী হয়ে আমাকে কিছুক্ষণ  
দেখলেন। তারপর সহজ গলায় বললেন, 'তেতরে এসে বসুন। ও এসে পড়বে।'

তদ্বারাই অসভ্য গোলা। তার চোখ ঝুল ঝুল করছে শিংবা চশমার কাচ  
ঝুল ঝুল করছে। পক্ষের পাহেসব চেহারা। বয়সকালে কঁপবত্তি হিলেন। সেই কাচ  
পুরোপুরি চলে যাওলি। ভদ্রমহিলার গলার শব্দ খুবই কোমল। তিনি বগলেন,  
'আপনার নাম কি মুঠু?'

'ফুল'

'ও আপনার কথা আমাকে বলেছে। আপনি মাকি ওর ফুল জীবনের বন্ধু। ওর  
কোন বন্ধু-বাবার বাসায় আসে না। আপনাকে দেখে সেই জন্মেই খুব অবাক  
হয়েছি। দাঁড়িয়ে আছেন কেন, কসুন।'

আমি বললাম। ভদ্রমহিলা বগলেন, 'চা দিতে বলি? চায়ে চিনি দুধ খন  
তো?'

'ফুল থাই।'

ভদ্রমহিলা ভেতরে চলে গেলেন এবং সঙ্গে সঙ্গেই চায়ের কাপ হাতে নিয়ে  
চুকলেন। আমার জীবনে কোন বাড়িতে এত স্মৃত কাটুকে চা দিতে দেখিনি।  
ভদ্রমহিলা হাসি মুখে বগলেন, 'আমার দুর ঘন চা খাবার অভাস। ফাঁক্স ভর্তি  
করে চা বানিয়ে রাখি। সেখান থেকেই আপনাকে দিলাম।'

'থাক্ক যু।'

'কিছু মনে করবেন না। আপনাকে শুধু চা দিতে হল। ঘরে কোন খাবার নেই।  
ইচ্ছা করেই খাবার রাখি না। খাবার যেখানেই থাকুক ও খুঁজে বের করে যেয়ে  
চলে।'

আমি কিছু বললাম না। চায়ে চুমুক দিলাম। ফাঁক্সে রাখা চা কখনো খেতে  
তাল হয় না। এই চাটা তাল হয়েছে।

'আপনার বন্ধুর থাই থাই স্বত্বাবের সঙ্গে তো আপনার পরিচয় আছে। আছে  
না!'

'ফুল আছে।'

'ও সবকিছু খেতে পারে। একবার বড় ঘোনে এক প্লাস সোয়াবিন তেল নিয়ে  
লবণ মিশিয়ে খেয়ে ফেলেছিল। ও হচ্ছে বিংশ শতাব্দীর কুস্তকর্ম। কুস্তকর্ম কে  
তা জানেন?'

'ফুল।'

'কুস্তকর্ম হল রাবণের মেঝে তাই। তার মা র নাম কৈকৈয়ী। কুস্তকর্মের  
ক্ষুধা কখনো নিটো না। এমন জিনিস নেই যে সে খেত না। সাধু সন্ধ্যাসী, খৰি  
সবই খেয়ে ফেলতো।'

'ও আছা।'

'তার ফুরগায় অস্থির হয়ে রক্ষা তাকে ঘূর পাড়িয়ে রাখার ব্যবস্থা  
করেছিলেন। সে ছাপ মাপ ধূমাত। তারপর একদিন জাগত। আবার ছ' মাসের অন্তে  
ঘূরিয়ে পড়ত। এই জন্মেই তার নাম কুস্তকর্ম। আপনার বন্ধুকে যদি এইভাবে  
ঘূর পাড়িয়ে রাখা যেত আমি বেঢ়ে যেতাম।'

ভদ্রমহিলা কথা বলতে বলতে উঠে দাঢ়ালেন। আবার বসে পড়লেন। হাতের  
ঘড়ি দেখলেন। দরজার দিকে তাকালেন। স্বামী এখনো ফিরেছে না এটাই বোধ —  
হয়ে অস্থিরত রাখা।

'হিমু সাহেব।'

'ফুল।'

'ও এসে পড়বে। মিষ্টি পান আনতে গেছে। কাজের ছেলেটা গেছে ছুটিতে,  
বাধা হয়ে গোই পাঠাতে হয়েছে। এত দেরি কেন হচ্ছে বুরাতে পারছি না। কোন  
মেইস্টারেন্টে চুক্তে পড়তে কিনা কে জানে।'

'আমি কি আশপাশে খুঁজে আসব?'

'সরকার নেই। আপনি কোথায় খুঁজবেন। তারপর বনুন কেমন আছেন?'

'কিংবা আছি।'

'আরেক কাপ চা খাবেন?'

'ফুল।'

'ওর মেগাটা স্কিপারে য়ে সেটা কি আপনি জানেন।'

'ফুল।'

'আমার সঙ্গে বিয়ের পরগুর সে জার্মানী চলে যায় অটোমোবাইল  
ইঞ্জিনিয়ারিং শিখতে। আমার জন্মে তখন তার খুব মন খারাপ থাকতো। কিছু

তাল লাগত না। শুধু যখন রেস্টুরেন্টে খেতে যেত তখন আমার কথা ভুলতে পারত। আমাকে তেলোর জন্যে খাওয়া ধরেছে। সেই খাওয়াই কাল হয়েছে।

'ভালবাসার মনে শুধুর যোগ আছে।'

'প্রেমিক-প্রেমিককে সব সময় দেখবেন কিছু না কিছু থাক্ষে। এই চট্টপটি, এই আইসোয়াই, এই বাদাম, এই ফুচকা।'

'ও বলছিল আপনি নাকি তার চিকিৎসা করছেন। কি ধরনের চিকিৎসা বলুন তো?'

আমি হকচিয়ে গেলাম। ব্যাঙাচি আমাকে তার চিকিৎসক হিসেবে উপস্থিত করেছে তেন বুরাতে পারছি না। আমাকে সে এই প্রসঙ্গে কিছি বলেনি।

তদ্বারালো সৌর্য নিঃশ্঵াস দেলে বললেন, কেন চিকিৎসায় ওর বিছু হবে না। চিকিৎসা কম করানো হয়নি। সাইকিয়াটিষ্ট দেখানো হয়েছে। ব্যাকেক নিয়ে পেট থেকে এক বালতি চর্চি বের করে ফেলা হয়েছে। অকুণ্ডাচার করানো হয়েছে। একবার একজন বৰল যারা সারাঞ্চ খাই খাই করে গাজা দেলে তাদের শুধু ক্ষেত্র। আমি নিজে গাজা কিনে সিগারেটে ভরে তাকে খাইয়েছি। কিছু হলো। মানুষটা একদিন খেতে খেতে মারা যাবে। কি কুসিত ব্যাপার চিক্তা করে দেখুন তো।

'চিক হয়ে যাবে।'

'কেননাইও চিক হবে না। ওর যখন খুব ক্ষিধে পায় তখন ওর চোখের দিকে তাকাবেন। আপনার মনে হবে ও আপনাকে রাখা করে যেযে ফেলার কথা মনে মনে ভাবছে। আপনি কি দু'টা মিনিট বসবেন, আমি একটা জরুরী টেলিফোন করে আসি।'

আমি বসছি। আপনি টেলিফোন করে আসুন। কাজকর্ম সারুন। আমাকে নিয়ে আসি করতে হবে না।'

আমি প্রাণ এবং ঘোষার মত বসে রইলাম। তদ্বারালো এক সময় বললেন, তাই, কিছু মনে করবেন না, আপনি কি একটু খুঁজে দেখবেন? আশপাশের মেস্টারেন্টগুলিতে দেশেই হবে। ও কেন একটা মেস্টারেন্টে বসে খাওয়া-দাওয়া করছে।

আশপাশের কেন রেস্টুরেন্টে ব্যাঙাচিকে পাওয়া গেল না। ব্যাঙাচি নেই— আমার পাজেরোও নেই। ভাইভার গাড়ি নিয়ে তেগেছে।

আমি হেঁটে হেঁটে মেসে ফিরলাম। ব্যাঙাচিকে যে পাইনি সেই খবরটা ও তার শীরে নিয়ে এলাম ন। বেচুরীর বিষম মুখ দেখতে ইচ্ছা করছেন।



তামামা গায়ে হাত দিয়ে আমাকে ডাকছে, হিমু ভাইয়া। হিমু ভাইয়া। এত আদর করে অনেক দিন দেউ আমাকে ডাকেনি। এটা যে বাস্তব কিছু না, শপ্ত দৃশ্য সঙ্গে বুরু ফেললাম। গায়ে হাত নিয়ে তামামা আমাকে ডাকবে না। এত অবেগে দিয়ে ভাইয়াও ডাকবে না। ভাইয়া সুরাসির উচ্চারণ করছে না— দু'টা চম্পবিন্দু মুক্ত করেছে। আবেগ মিশ্রিত চম্পবিন্দু— হিমু ভাইয়া। হিমু ভাইয়া।

আমি এখন দু'টা জিনিস করতে পারি, যুম না ভাসিয়ে ষপ্রুটাকে লৰা করতে পারি। কিংবা জেসে উঠতে পারি। ঘুমের মধ্যেই দোটিনায় পড়ে গেলাম। তামামা ডেকে দেতে লাগল। হিমু ভাইয়া। হিমু ভাইয়া। পায়ে ধাকার পরিমাণও বাড়তে লাগল। যুম ভাসল। বেগ অনেক হয়েছে, ঘরে ঘোন ঢকে গেছে। বিছানার কাছে মেসের ম্যানেজার সরফরাজ খা পাঁত্তিরে। চিকন গলায় তিনিই এতক্ষণ ডাকাডাকি করাইলেন। তিনি ডাকছেন— হিমু ভাই। আমার মষ্টিক ভাই ডাকটা বদলে ভাইয়া করে ফেলছে।

আমি বিছানায় উঠে বসলাম। যুম ভাস্তার পর পর মানুষ কিছু কান্দকারখানা করে— অত্ময়েড়া ভাসে, হাই ডেকে, চোখ ভলে এবং আবারো ঘুমের স্থ স্থূতি করনা করার জন্যে কিছুক্ষণের জন্য হলেও চোখ বন্ধ করে ফেলে। আমি তার কিছুই না করে মেস ম্যানেজারের দিকে কঠিন দৃষ্টিতে তাকিয়ে বললাম, 'আমাদের সোনার বালো শুশ্রান হতে কত বাকি?'

মেস ম্যানেজার শ্রেণীর মানুষ যাদের প্রধান কাজ দিনে আট ন' ঘণ্টা কাঠের চেয়ের বসে থাকা তারা সাধারণত খব রাজনীতি সচেতন হন। সোনার দেশ কেন শুশ্রান হচ্ছে এই নিয়ে তারা খুব তাৰিখ ধাবেন। সরফরাজ খা সাহেব তার খুলত উনাহৰণ। সোনার বালোর ভবিষ্যৎ নিয়ে তার চেয়ে বেশি চিত্ত। শেখ হাসিনা বিংবা বেগম কিয়া মেট করেন বলে মনে হয় না।

এক দুপুরে ঘামে ডিজে ঝালত হয়ে মেসে ফিরেছি। দেখি চোখ-মুখ শক্ত করে সরফরাজ খা সাহেবের কাঠের চেয়ারে বসে আছেন। তাকে খুবই বিমর্শ এবং

চিহ্নিত মনে হচ্ছে। তিনি চোখের ইশারায় আমাকে ডাকলেন। আমি কাছে গিয়ে দাঁড়াতেই বললেন, 'হিমু সাহেব, সোনার বাংলা যে শুশান হয়ে গেল সেটা জানেন?'

আমি বললাম, 'পুরোটাই কি শুশান হয়ে গেছে না পার্ট বাই পার্ট হচ্ছে?'  
'পুরোটাই শুশান হয়ে গেছে।'

আমি বললাম, 'তাহলে তো হিন্দু ভাইদের জন্যে খুব সুবিধা হল। তারা যেখানে সেখানে মড়া পোড়াতে পরবে। মড়া নিয়ে এখন আমি শুশান ঝুঁজতে হবে না। যে কোন জায়গায় মড়া চিঁৎ করে ঝইয়ে হা করে মুখে আগুন দিয়ে নিলেই হল।'

সরফরাজ খা আহত চোখে কিছুক্ষণ আমার দিকে তাকিয়ে থেকে শাস্ত্রগলায় বললেন, 'ঠিক আছে হিমু সাহেব ঘরে যান। আপনার সঙ্গে কোন আলোচনায় যাওয়াটাই ভুল।'

আমি ডেরেছিলাম সোনার বাংলা শুশান হওয়া সংক্ষত পশ্চ শব্দে আজও তিনি আহত চোখে তাকাবেন। তা করলেন না। মনে হয় আমার পশ্চ তার মাথায় চুকেনি তিনি আমার কানের কাছে মুখ নিয়ে ভীত গলায় ফিসফিস করে বললেন, 'পুলিশ এসেছে। আমিও পুলিশ।'

আমি হাই তুলতে তুলতে বললাম, 'আমাকে আরেষ্ট করতে এসেছে?'  
'সে রকমই মনে হচ্ছে। পুলিশের একটা জীপ দাঁড়িয়ে আছে মেসের সামনে।

পুলিশরা কেউ জীপ থেকে নামেনি। শুধু ওমি সাহেব নেমেছেন। ভয়ংকর রাগী ঢেহরা।'

'উনি কোথায়?'  
'স্নারকে আমার ঘরে বসেয়েছি। চা দিয়েছি। নিমক পরা আনিয়েছি। এক প্যাটেট মেসেন অনিয়ে দিয়েছি।'

'চা—পিগারেট থাক্কে?'  
'এখন কথা বাড়াবেন না। পাঞ্জাবী গায়ে দিয়ে নিচে চুন। আপনাকে নিয়ে খুবই চেনশানে থাকি হিমু সাহেব। সাতটা বাজেনি এর মধ্যে পুলিশ এসে উপস্থিত। করেছেন কি আপনি?'

'মরী এক শালাবাসুকে মুখ তেওঁটি দিয়েছিলাম। সেই যামলাটা তিসমিস হয়ে গেছে জানতাম।'

সরফরাজ খা চিহ্নিত গলায় বললেন, 'এত লোক থাকতে মরীর শালাকে মুখ তেওঁটি দিলেন কেন? বাংলাদেশে কি তেওঁটি দেয়ার লোকের অভাব আছে? তের

কোটি মানুষ। গনেরো হাজার লোক বাদ দিয়ে বাকি বারো কোটি পচাশি লাখ লোককে তেওঁটি দিতে পারেন।

বর্মন থানার ওমি সাহেব ম্যানেজারের চেয়ারে বসে আছেন। তাঁর সামনে মেসেনের পাকেট পড়ে আছে। পাকেট খেলা হচ্ছি। চায়ের কাপও চুক্ক দেয়া। চায়ে সর পড়ে গেছে। ওমি সাহেব প্রাণে অভ্যাস করে জিত দিয়ে ঠোট চাটছেন। তারে দেখে মনে হচ্ছে তারকের বিছু ঘটে গেছে। খৃষ পাওয়া যায় না এমন অঙ্গলে পোষ্টিং হয়ে গেছে— নিমুম ধীপ টিপের দিকে। আমি তাঁর দিকে তাঙ্গিয়ে বললাম, 'স্যার কেমন আছেন?'

ওমি সাহেব আমার প্রদ্রে জবাব না দিয়ে সরফরাজ খা'র দিকে তাকিয়ে বললেন, 'ওমি সাহেব আছেন নাড়িয়ে আছেন কেন?'

সরফরাজ খা চুক্ক ঘর থেকে মের হতে দিয়ে দরজায় পচকত ধাক্কা দেলেন।  
মনে হল দরজা ভেসে পড়ে যাচ্ছে। ওমি সাহেব মহা বিরক্ত হয়ে বললেন, 'এই ইতিবাট কে?'

আমি ওমি সাহেবের সামনের চেয়ারে বসতে বসতে বললাম, 'উনি এই মেসেনের ম্যানেজার সরফরাজ অলি খা। খুব উচ্চ বৎস এবং খাঁটি দেশপ্রেমিক।  
মেশ নিয়ে উনি সর্বশেষ চিত্তা ভাবনা করছেন। গবেষণা করছেন। সোনার বাংলা কেন শুশান হচ্ছে আপনি যদি উনাকে জিজ্ঞেস করেন উনি খুব সুন্দর করে বুঝিয়ে দেবেন।'

'বাজে পাঁচাল পারবেন না। আপনাকে একটা কথা বলতে এসেছি— বলে চলে যাব।'

'কুন্ত।'

'আপনাকে একটা রেপ কেসের কথা বলেছিলাম মনে আছে?'

'মনে আছে।'

'মিথ্যা আসামী দেয়ার কথা ছিল . . . ?'

'দিয়েছেন?'

'হ্যাঁ না, আসল আসামী ধরেছি। ফাইনাল রিপোর্ট দিয়েছি।'

'আপনাকে এখনো নিমুম ধীপ বদলি করেনি।'

'গত অঞ্চল শাস্তি এবা আমাকে দেবে না। আমার জন্যে অনেক বড় শাস্তি অঙ্গের করছে।'

'তার পাঁচেন?'

'তার পাঁচিং না।'

'আমার কাছে এসেছেন কি জন্যে খবরটা দেয়ার জন্যা?'

'না। আমি এসেছি আপনাকে একটা কথা জিজ্ঞেস করার জন্য। ঠিক করে বলুন তো আপনার কি কোন আধাৰিক ক্ষমতা আছে?'

'না।'

'আপনি নিশ্চিত যে আপনার কোন ক্ষমতা নেই?'

'মেট্টামুটি নিশ্চিত।'

'আমার ধৰণ আছে। ঘটনাটা বলি— আমি যিথ্যা আসামীকে ধৰে নিয়ে এসেছিলাম। সারাবাত জেনে মামলা সজিয়েছি। ঘূর্ণতে দেহি ভজরের আজানের পৰে। অনিয়ম করেছি তো, ঘূর্ণ আসছে না। বিমাছি। এপশ-ওপশ কৰছি। হঠৎ তদ্বার মত এল। মনে মনে আপনাকে আমি এত মেহ কৰি আৰ এটা আপনি কি কৰলেন—ওসি সাহেব আপনাকে আমি এত মেহ কৰি আৰ এটা আপনি কি কৰলেন। নিরপেক্ষ কৰেকৰ্তা মানুষকে আপনি এমন এক কৃসিত মামলায় জড়লেন। আপনার জন্যে ভয়াবহ বিপুল কিছু অপেক্ষা কৰৱে। দশ নৰ মহা বিপদ সংকৰে। এখনো সময় আছে। তখন ঘূর্ণটা ডেকে গেল। দেখি যামে শৰীর ভিজে গেছে।'

ওসি সাহেব ঠাণ্ডা সৰ পড়া চায়ের কাপে নিজের ভুলে চূমুক দিয়ে মুখ বিকৃত কৰলেন। আমি বললাম, ওসি সাহেব, আপনার মত জানৰেল লোক স্বপ্ন দেখে বিপ্রান্ত হন কি কৰে? এই স্বপ্নের ব্যাখ্যার জন্যে ক্ষেত্ৰ লাগে না। কুটুম্বিন সিয়া টাইপ মানুষজনও ব্যাখ্যা দিতে পৰাবে। এই জিনিসটা আপনার মাথায় থেকে গেছে বলেই স্বপ্ন।

'তা না।'

'তা না মানে?'

ওসি সাহেব আবার ঠাণ্ডা চায়ের কাপে চূমুক দিলেন আবারো মুখ বিকৃত কৰলেন। কুমাল দিয়ে ঠোট মুছতে মুছতে বললেন, স্বপ্ন দেখে ঘূর্ণ ভজৰ পৰ আপনি যে ব্যাখ্যাটা দিলেন সেই ব্যাখ্যাটা আমার মাথায়ও এল। আমি ঘূর্ণটা মোটেই পাতা দিলাম না। হাত-মুখ ঝুঁতাম। ব্যবহৰে কাগজ হাতে নিয়ে শীনাকে বললাম, শীনা চা নাও। শীনা হল আমার শ্রী। আমি বারান্দায় বসে কাগজ পড়ছি শীনা চায়ের কাপ হাতে নিয়ে চুকল। টেবিলে চায়ের কাপ নাহিয়ে রাখতে রাখতে বলল, এই শোন, আমি শেষ রাতে ভয়াবক একটা দ্রুতগ্রাহ দেখেছি। তুমি চোৱাবালিতে অটুকা পড়েছ। একটু একটু কৰে তুবে যাচ। বাঁচাও বাঁচাও বলে চিৎকাৰ কৰছ কেউ বলছে না। তখন একটা হেলে ছুটে এল। তাৰ গায়ে হৃদয়

ৰঙেৰ পাঞ্জাবী। সে পাঞ্জাবী ঘূলে তোমার দিকে দৰেছে। তুমি পাঞ্জাবী ধৰলে সে তোমাকে টেনে তুলবে। কিন্তু তুমি কিছুতেই পাঞ্জাবী ধৰতে পাৰছ না। যতই ধৰতে চেষ্টা কৰছ ততই চোৱাবালিতে তেবে যাচ।

বুখলেন হিমু সাহেব, শীনার বৰ্বা তৰে আমি সাত হাত পানিৰ নিচে চলে গোলাম। কাৰণ আপনার কথা আমি আমাৰ শ্রীকে কিছু বলিনি। ঘূর্ণটা কি এখন আপনার কাছে বহুলাময় মনে হচ্ছে?

'না।'

'যাই হোক, আমাৰ কাছে মনে হয়েছে। আমাৰ শ্রী তখু তখু কেন স্বপ্নে দেখে আমি চোৱাবালিতে গড়েছি।

'আপনি পুলিশ বিভাগে বিপজ্জনক চাকৰি কৰেন। আপনার শ্রী আপনাকে নিয়ে দৃঢ়ভূত কৰেন কাজেই এ ধৰনেৰ স্বপ্ন দেখা ঘূৰই স্বাভাৱিক। আপনি আপনার শ্রীকে জিজ্ঞেস কৰাতেই জানতে পাৰবেন যে আপনাকে নিয়ে তিনি প্রায়ই দৃঢ়স্বপ্ন দেখেন।'

'আমি হুমুদ পাঞ্জাবীৰ বাপাগৱাটা?'

'হুমুদ পাঞ্জাবীৰ বাপাগৱাটা ঠিক না। স্বপ্ন সব সময় শাদা-কালো হয়। স্বপ্নেৰ আলো হল রাতেৰ আলো। চাঁদেৰ আলোৰ রঙ দেখা যায় না বলে স্বপ্ন শাদা-কালো।'

ওসি সাহেব উঠে দাঁড়াতে দাঁড়াতে বললেন, হিমু সাহেব, এই কাগজটা আপনি রাখবেন?'

'কি কাগজ?'

'এখানে আমাৰ বাসাৰ ঠিকানা লেখা আছে। আপনি চারটা ভাল-ভাত আমাৰ এখানে থাবেন। আমি দেখতে চাই শীনা আপনাকে দেখে চিনতে পাৱে কিনা। স্বপ্নেৰ হৃদয় পাঞ্জাবী পৰা মানুষ আৰ আপনি যে একই বাকি আমাৰ ধৰণ। শীনা সেটা ধৰে ফেলবে।'

'কৰে আসতে বলছেন?'

'আজই আসন। রাতে থান। আমি আপনাকে পাংগোশ মাছ বাওয়াৰ। পাংগোশ মাছ শীনা খুব ভাল রাখতে পাৱে।'

'পাংগোশ মাছ এৰ মধ্যে কোগড় হৰে?'

'তা হৰে।'

'ওসি সাহেব আমি কি কয়েকজন বন্ধুবাঙ্কি নিয়ে আসতে পাৱি? ভাল খাওয়া একা খেয়ে আৱাম পাওয়া যায় না, দলবল নিয়ে থেকে হয়।'

'ক'জন বন্ধু আসবে?'  
'এই ধরন চারজন। আমাকে নিয়ে পাঁচ। পাঁচ হল মাজিক নাথর। এই জনেই পচজন আসতে চাই।'

'আসুন, পাঁচজনই আসুন। পাঁচশ মাছ ছাড়া আর কি মাছ খেতে চান?'

'গুলদা চিটিঙ্গি?'

'আর কিছি?'

'বড় কাতল মাছের মাথা জোগাড় করতে পারবেন?'

'আর কিছি না!'

'বাত আটোর দিকে চলে আসবেন।'

ওসি সাহেবের উঠে দাঢ়িয়েন। তিনি কেমন যেন ইতস্তত করছেন। কিছু বলতে চান, কবতে পারবেন না এমন ভাব। আমি বললাম, 'স্যার কিছু বলবেন?'  
'না, কিছু বলব না। আপনারা আটোর দিকে চলে আসবেন। দেরি করবেন  
না।'

'ঙ্গি আছ। স্যার আপনি সিগারেটের প্যাকেট ফেলে যাচ্ছেন।'

ওসি সাহেবের সিগারেটের প্যাকেট পকেটে ঢুকালেন। অন্যামনক ভঙ্গিতে ঘর থেকে বেজতে গিয়ে অবিকল সরকারজ অলি ঝাঁপ মত কপালে ব্যথা পেলেন। সরহংসজ অলি ঝাঁপ ব্যথা পেয়ে কপালে হাত দিয়ে বনে পড়েছিল, ওসি সাহেবে তা করবলেন না। তিনি শৃঙ্খল শব্দে দরজায় লাধি মারবেন। দরজার উপরের কক্ষা সাতি সতি খুলে দেল।

আমার চারজন বন্ধু নিয়ে ওসি সাহেবের বাসায় যাবার কথা। আমি ঠিক করে রেখেছি চারজন বন্ধু না, শুধু বাণাঞ্জিকে নিয়ে যাব। পাঁচজনের জন্মে রান্না করা থাকলে তার হয়ে যাবার কথা। তারপরও যদি শৰ্ট পরে রীনা ভাবী নিষ্পত্তি দশ বারেটা পরেটা টি টি টি ভেজে নিয়ে দেবে।

মহিলারা ক্ষুধার্ত মানুষের খাইয়ে অনন্দ পায় তবে সেই ক্ষুধার্ত মানুষক হতাহার হলে চলবে না। ভিতরী বারান্দায় খেতে বসে এক পর্যায়ে যদি ক্ষীপ গলায় বলে, আমারী ভাত শেষ, আর চাইরটা ভাত দেন তাহলে গৃহীণী বলবেন, আর ভাত নাই। ভেমার জন্য লংগুরখানা খোলা হয় নাই।

জোবেদ সাহেবের দোকানে গেলাম টেলিফোন করতে। ব্যাঙাটিকে দাঁওয়াতের কথা বলতে হবে। ফাতেমা খালাকেও জনাতে হবে যে পাথর পাওয়া যায়নি। অন্সকান চলছে। যে কোন তৃষ্ণ ব্যাপারে দৃঢ়শিক্ষা করে ফাতেমা খালা অসুখ বৰ্ণিয়ে ফেলেন। পাথর এখনো পাওয়া যায়নি এই চিন্তায় তার ডায়রিয়া হয়ে যাওয়া উচিত।

জোবেদ সাহেবের দোকান যথারীতি খালি। মাছিও উভারে না। তিনি আমাকে দেবে বিস মুখে বললেন, 'হিমু সাহেব আগমনির কাছে অনেক পাওনা হয়ে গেল। আমি হাসি মথে বললাম, টাকা দেয়েছি। কুড়ি হাজার টাকা, এইবার আগমনির পাওনা মিটিয়ে দেব। টাকা আনতে তুলে দেছি।'

'আজকালের মধ্যে পেলে সুবিধা হত।'

'আজই পাবেন। রাতে আমার এক জায়গায় দাওয়াত আছে। যাওয়ার পথে দিয়ে যাব। টেলিফোনটা কি ঠিক আছে?'

জোবেদ সাহেবের নিতান্ত অনিষ্টের বললেন, 'ঠিক আছে। আমি তার পাওনা মিটিয়ে দেব এই কথা তিনি বিশ্বাস করেননি। কোন পাওনাদার যখন দিনক্ষণ উল্লেখ করে বলে বনে টাকা দিয়ে দেব তখন অবধারিতভাবে জানতে হবে টাকাটা পাওয়া যাচ্ছে না।'

'চা খাবেন হিমু সাহেব?'

'ছিল।'

'আপনাকে এই নিয়ে মোট কতকাপ চা খাইয়েছি জানেন?'

'ছিলনা।'

'আজকেরটা নিয়ে নয়শ আঠারো কাপ।'

'আপনি আমাকে ক'কাপ চা খাওয়াছেন তারও হিসাব রাখছেন?'

জোবেদ সাহেবের হেট করে নিষ্ঠাস ফেলে বললেন, দোকানদার মানুষ, হিসাব করা হচ্ছে আমার ভঙ্গ। তাইডু ব্যবসাগতি নাই, কাজ কর্ম নাই।

ব্যবসা নিয়ে ব্যস্ত থাকলে চারের কাপে চুরুক দিতে দিতে আমি টেলিফোনে কথা

বলছি। ব্যাঙাটিকে পাওয়া যায়নি, কথা বললে মহিলা ব্যাঙাটি।

'ভাবী আমাকে কি চিনতে পারছেন? আমি... ?'

'হ্যাঁ চিনতে পারছি। আপনি গতরাতে এসেছিলেন। আপনি চলে যাবার তিন-চার মিনিটের মাথায় ও এসেছে। এসে যেই শুনেছে আপনি ওর রোজ করতে বের হয়েছেন ওমি সে আবার বের হয়েছে। ফিরেছে রাত একটায়।'

'জেন কি?'

'ভাল মানুষের মত হেরেনি, মারধর খেয়ে ফিরেছে।'

'সেকি, মারধর কে করেছে?'

'হাইজ্যাকেরা ধরেছিল। টাকা পয়সা না পেয়ে চড় থালের মেরেছে। চরিওয়ালা মানুষ — মারলে আরাম লাগে। ওরা মনের সুখে মেরেছে। তাও ভাল চড় থালের উপর দিয়ে গিয়েছে। পেটে ক্ষুর বসিয়ে দিলে পারত। পারত না!

'অবশ্যই পারত। তারী, তকি আশপাশে আছে?'

'হ্যাঁ আছে। ঘূর্ণেছে খুব ভয় পেয়েছিলাম। রাতে ঘুম হয়নি। সূর্য উঠার পর ঘুর্ণতে গেছে। ওকে কি ডাকব?'

'না, ডাকার ন্যূনতা নেই। ঘূর্ণক ওকে শুধু বলবেন রাত আটটার আগে খালি চেটে মেন আমার মেসে চলে আসে। ওর চিকিৎসা শুরু করেছি—প্রথম জেজাটা আজ পড়বে।'

'কি ধরনের চিকিৎসা করছেন?'

'জ্বালাইটি টাইপ। টেটকা অন্তর্মন্ত্র মিলিয়ে একটা চিকিৎসা।'

'আপনার কি ধরণের কাজ হবে?'

'অবশ্যই কাজ হবে।'

'আমি তাকে অবশ্যই আটটার আগে পাঠায়ে দেব।'

'বিকেলে যেন নাশতা চাসতা কিছু না খায়। দুশুরে খেতে পারে কিন্তু সূর্য তেবার পর কিছু মুখ্য দেয়া যাবে না।'

'আমি বলে দেবো। তাতে লাত হবে কিনা জানি না। আমি চোখের আড়াল হচ্ছেই কিছু না কিছু যাবে। সোনাবিন তেল যে খেতে পারে সে সবকিছুই খেতে পারে। যাকে মাথে আমার কি মনে হয় জানেন যাকে মাথে মনে হয় — কেউ যদি আমাকে কেটে কেটে ঝুঁটে রীতি। পাল দিয়ে তালমত কবিয়ে একটা বড় জামবাটিতে ও সামনে দিয়ে বলত, এটা হল তোমার রান্না করা স্তু। আপনার বস্তু কিছু তালমত যেমন ফেলত।'

আমি হা হা করে হাসলাম। তবে আমার হাসি তেমন জমল না। শব্দটা ঠোঁটে হল। এবং ঠোঁটেই ঘূর্ণে রইল। আমার মনে হচ্ছে মহিলার কথা ভুল না। ব্যঙ্গটি ঠিকই জামবাটি শেষ করে নিচু গলায় বলবে, তরকারি কি আয়ো আছে? রান্নার গোশত পাওয়া যাবে?

নয়শ উনিশ নম্বর চায়ের কাপে ঘূর্ণক লিতে লিতে ফাতেমা খালার সঙ্গে কথা হল। খালা এইভাবেই উত্তোলিত থাকেন আজ তার উত্তেজনা সীমাহীন। তালমত কথাই বলতে পারছেন না, কথা গলায় আটকে যাচ্ছে। একসঙ্গে অনেকগুলি কথা বলতে চাচ্ছেন পারছেন না। যানুবৰ্যের মণ্ডিত এক সঙ্গে অনেকগুলি কথা তৈরি করতে পারে কিন্তু মুখে বলতে পারে না। কথা বলার জন্যে দু'টা মুখ থাকলে তাল হত বোধহয়। একটা মুখ থাকবে শুধু সত্ত্ব কথা বলার জন্যে। আরেকটা মুখ সত্ত্ব-মিথ্যা সবই বলবে। আদলতে সাক্ষী দেবার জন্যে সত্যবাদী মুখ ব্যবহার করতে হবে। অন্যান্য কথনোই ব্যবহার করা যাবে না!

ফাতেমা খালা হড়বড় করে কথা বলে যাচ্ছেন। আমি রিসিভার কানে লাগিয়ে নয়শ উনিশ নম্বর চায়ের কাপে চুম্বক দিচ্ছি। চা তাল হয়েছে। আজ মনে হয় নয়শ বিশ পূর্ণ করতে হবে।

'তোর জন্যে একটা মারাত্মক খবর আছে রে হিমু। তুই বিশাসও করতে পারবি না কত মারাত্মক। তামান্নাকে শেষ পর্যন্ত বিয়ের কথা বললাম। সে রাজি হয়েছে। আমার আশংকা ছিল বেধবায় রাজি হবে না। তুই শাঢ়ির পোবর হলেও তোর মধ্যে কিছু জবাব আছে। তামান্না বৃক্ষিমতী মেয়ে তো, সে ব্যাপারটা ধরেছে। তবে তামান্না যে বক্তব্যেই রাজি হবে যাবে তাৰিখি। আমি তামান্নার মা'র সঙ্গেও কথা বলেছি। তিনি বলেনেন, তামান্নার আপনি মা তো আমি না, আপনি যা বলবেন তাই হবে। আপনি যদি পথ থেকে কেন কুঠুরোগী ধরে নিয়ে এসে বলেন, এর সঙ্গে তামান্নাৰ বিয়ো। আমি তখনও বলব, তত্ত্ব আলহামদুলিঙ্গাহ।'

আমি খালার কথার স্বীকৃত বাধা দিয়ে বললাম, 'কুঠ নিরাময় কেন্দ্র থেকে ইয়াং দেখে একটা কুঠ রেগী দের নিয়ে আসব?'

খালা ধূমক দিলেন, 'আমের কাজলামী করেছিস আর না। শোন হিমু, তোদের বিয়ের সন্ধি শপিং আমি। বিয়ের শপিং করতে আমার সব সময় ভাল নাগে। তাবাহি কোলকাতাতে চল যাব। শাঢ়ি-গহনা কোলকাতা থেকে কেনাই ভাল। তচে দাদারা ঘুব ঠগবাজ। একবার যদি টের পেয়ে যাব আমি বাংলাদেশের নিসি, তাহলে সর্বনাশ। মোলায়েম করে চামড়া ছিলে ফেলবে। এত মোলায়েম করে চামড়া ছিলবে যে যোৱাই যাবে না চামড়া ছিলছে, বৰং মনে হবে গো যাসাজ করে দিলে।'

'কোলকাতা করে যাচ্ছ?'

'সামনের সঞ্চার যাব। ইচ্ছা করলে তুই আমার সঙ্গে যেতে পারিস। তবে না যাগ্যাই ভাল। বিয়ের শপিংও ঘুু যামীর থাকতে নেই।'

'টিক আছ, তুমইয়ে যাও।'

'বটকে কোথায় রাখবি, কি বাওয়াবি এইসব নিয়ে তুই একেবারেই ভাববি না। প্রথম এক বছর আমার সঙ্গে থাকবে। তিনিটা ঘর তোকে আমি আলাদা করে দিয়ে দেব।'

'এসি দেয়া ঘর তো খালা।'

'ছাগলের মত কথা বলিস কেন? আমার কেন ঘর কি আছে এসি ছাড়া?'

'তাও তো ঠিক।'

'তোর সঙ্গে বক বক করতে পিয়ে আসল কথাই ভুলে গেছি। পাথর কিনেছিস?'

'না'

খালি হতভব হয়ে বললেন, 'না মানো কি বস্তিস তুই?'

আমি কচুণ গলায় বললাম, 'মেছকান্দ যিয়া পাথর নিয়ে নিরাদেশ হয়ে গেছে!'

'কী সর্বাশ!'

'সর্বনাশ মানে মহা সর্বনাশ। আমি হাল ছাড়িনি। ঢাকা শহর চে বেড়াচ্ছি।'

'গাড়ি লাগবে?'

'না, গাড়ি লাগবে না। পাজেরো জীপে করে তিকুক ঝোঁ যায় না। তাছাড়া তোমার পাজেরো জীপের ড্রাইভার আমাকে পছন্দ করে না।'

'পছন্দ করবে কিওবে, তুই তাকে এক বাড়ির সামনে দোড়া করিয়ে উঠাও হয়ে দেলি। চোরা রাত সাড়ে তিনটা পর্যন্ত তোর জন্যে অপেক্ষা করছে। এসব উচ্চটা কান্তকারবানা কেন করিস? এই বেচারাকে রাত তিনটা পর্যন্ত শুধু শুধু বসিয়ে রাখিছি।'

'আর রাখব না। গাড়িটা তুমি পাঠিয়ে দিও।'

'একটা আগে না বলিলি গাড়ি লাগবে না।'

'এখন মনে হচ্ছে লাগবে। খালি গাড়িটা তুমি সারাবাটের জন্যে দিও। তিকুকদের ঝোঁ মের করার উত্তম সময় হচ্ছে রাত।'

'পাথরটা হাতছাড়া হয়ে গেছে বুঝতে পারিনি। রাগে আমার গা জ্বলে যাচ্ছে।'

'পাথর তুমি পাবে। একশ পারসেন্ট গ্যারান্টি।'

'পাথরটার দাহে যা চাওয়া যাব তাই পাওয়া যায়।'

'অবশ্যই। তবে সামান্য কিছু আছে।'

'কিছু আরও কি?'

'মাধ্যকিস প' গৱাটা জান না খাব— ঐ যে একটা বাদের থাবা ছিল, এ থাবাটার কাহে যা চাওয়া যেত তাই পাওয়া যেত। সমস্যা একটাই— ইচ্ছা পূর্ণ হাবার পর পরই ত্যাকর বিপদ হত।'

'বলিস কি? এত খাল কেটে কুমুর আনা।'

'পাথর প্রজেক্ট বাস দিয়ে দিও।'

১১৬

'না না। আমার পাথর লাগবে। পাথর ছাড়া চলবে না। বিবাট ভুল করেছি— অসমে এই দিনই কিমে ফেলা উচিত ছিল।'

'ইয়াকুব প্রজেক্ট কি বাদ?'

'আজ্ঞা আপনি কি আমাকে চিনতে পারছেন? অর্ধাৎ আগে কখনো দেখেছেন?'

তুমহিলা নিচু গলায় বললেন, ত্বি না।

'বাপ্পোও দেখেননি?'

খালি বিরক্ত গলায় বললেন, 'ইয়াকুব তো পালিয়ে যাচ্ছে না। তুই পাথরটা আপে খোগাব কর।'

'পাথর তোমার চাই-ই?'

'অবশ্যই চাই।'

'মনে হচ্ছে কিছু খরচাপাতি করতে হবে।'

'খরচাপাতি তো করবাই। ন করেছি? এখন কত লাগবে বল, ড্রাইভারের সঙ্গে পাঠাইবো দি।'

'এখন লাগবে না। প্রজেক্ট শেষ হোক। তারপর তোমার নামে বিল করব।'

রাত আটটার ওসি সাহেবের বাসায় যাবার কথা। আমরা আটটার আগেই উপস্থিত হলাম। ওসি সাহেবের খালির সঙ্গে লাগোয়া সরকারী বাসায় থাকেন বলে দেনেছি— এই বাড়িটা তা না। কলাবাগানে এলাপোর্টমেন্ট হাউস। কলিংবেল টিপেছোই রোগ একজন মহিলা দুজনা বুললেন। তাকে দেখে মনে হচ্ছে তিকুকণ আগে একটা ভয়ের সপ্ত মেরে তার ঘুম দেবেছে। তয় এখনো কাটেনি। আমাদের দু'জনকে দেখে তার আগে মেন বাড়ি।

আমি বললাম, ওসি সাহেব কি বাসায় আছেন?

মহিলা শক্তিপূর্ণ গলায় বললেন, ত্বি না। আপনার নাম কি হিমু?

ত্বি।

'ত্বি না, তবে ও আপনার কথা বলেছে। পাইজন আসার কথা না।'

'আমার বাস্তুকে নিয়ে এসেছি। ও একাই চারজন— আর আমি এক পাঁচ।'

আমার বসিকতায় কাজ হল না। তুমহিলা তীত গলায় বললেন, ওর আসতে একটা দেরি হবে। কি একটা কাজে আটকা পড়ে গেছে। আপনারা বসুন।

আমরা বসলাম। তুমহিলা বললেন, তা নিতে বলি?

১১৭

'টেলিফোন আছে। দু'দিন ধরে ডায়ালটেল নেই। আমার এক ভাইকে থানায় হোঁক নিতে পাঠিয়েছি। আমরা দয়া করে পায়েস ধান।'

আমি পুরোপুরি পায়েস একাই খেয়ে ফেললাম। ব্যাঙ্গটি খেল না, সে ক্ষুধা নষ্ট করবে না। সে ফিল্মফিল্ম করে একবার বলল, 'বারোটা পাঁচশ বাজে হোটেল তো সব বক হয়ে যাচ্ছে।'

আমি বললাম, 'তুই হোটেল বন্ধ নিয়ে দুশ্চিন্তা করিস না। ওসি সাহেবের কাজ করবেন না। তিনি খাবারের অর্ডার আগেই দিয়ে রেখবেন।'

রাত একটায় শীর্ণ ভালীর ভাই থানার বকের নিমে ফিরলৈ। ওসি সাহেবের ক্ষেত্ৰে মত হয়েছে। তাকে সোহৃদাওয়ার্দিতে নেয়া হয়েছে। অবস্থা ভাল না।

ওসি সাহেবের শ্রী চিংকার করে কীদাছেন। আর ঘরে বসে থাক যায় না। আমি ব্যাঙ্গটিকে নিয়ে বের হয়ে এলাম। ব্যাঙ্গটি ফিল্মফিল্ম করে বলল, 'পায়েসটা না খাওয়া বিবাট বোকামী হয়েছে।'

ব্যাঙ্গটি চিপ্পিত ঢেকে আমার দিকে তাকাচ্ছে। যে অতিথি ডিনারের নিম্নস্তরে এসেছে তা নিতে পাইজন আতি একটা ভড়কে যাবেই। আমি বললাম, ওসি সাহেবের আমাদের ডিনারের দায়াত্মক করেছিসেন।

'ত্বি, আমি জানি। ও কোন বাজার করেনি। খুব জরুরী কি একটা কাজে আটকা পড়েছে। ও রেইন্সেন্ট থেকে খাবার নিয়ে আসবে। আপনাদের বসতে অব্যাহত।'

'আমরা বস্তি।'

'চা দেব?'

'দিতে পারেন।'

অনেকবার অপেক্ষা করার পর কাহের একটি মেয়ে দু'কাপ চা এবং পিরিচে করে খানিকটা চানাচুর দিয়ে গেল।

ব্যাঙ্গটি ফিল্মফিল্ম করে বলল, 'চানাচুর খাওয়া ঠিক হবে না। কিন্তু নষ্ট হবে।'

আমি বললাম, 'বেছে বেছে দু'একটা বাসাম খেতে পারিস।'

ব্যাঙ্গটি চারদিকে তাকাতে তাকাতে বলল, 'বিহেলে কিছু না খাওয়ায় ক্ষিপ্তে নাইটে নাইটে হয়ে যাবে। যাই দেখেছি তাই যে মেয়ে মেয়ে ফেলতে ইচ্ছা করছে।'

'সোফা দেয়ার ছাড়া তো এই ঘরে কিছু নেই। সোফা খাবিবি?

ব্যাঙ্গটি কিছু বলল না। যেতাবে সোফার সিকে তাকাচ্ছে তাতে মনে হয় সোফা খাবার ব্যাপারটা সে বিশেচনায় রেখেছে। একেবারেই যে অধ্যায় করছে তা না।

রাত এগারোটা বেজে গেল। ওসি সাহেবের শ্রী বড় বাটিতে করে এক বাটি পায়েস এবং পিরিচ চামচ দিয়ে দেলেন। আগের মতই শীত গলায় বললেন, 'ও এতো দেবি করছে কেন বুঝতে পারিবি না: কখনো এ বকম করে না। দয়া করে আর কিছুক্ষম বন্দন। আপনাদের নিশ্চয়ই ক্ষিদে পেয়েছে, পায়েস খান। ঘরে বাসানো। কাঠনের চাউলের পায়েস।'

আমি বললাম, 'আমাদের জন্যে ব্যত হবেন না। আমরা অপেক্ষা করব। আপনার মনে হয় শৰীর ভাল না। আপনি বিশ্রাম করুন।'

'আমার শৰীর আসলেই বেশ খারাপ। গায়ে জ্বর আছে। আপনাদের একা বসিয়ে রাখতে খুব খারাপ লাগছে— কিছু উপায় নেই।'

ব্যাঙ্গটি বলল, 'বাসায় টেলিফোন নেই।'

১১৮

১১৯



আজকাল মনে হয় চাইনীজ রেষ্টুরেন্টগুলির ব্যবসা খারাপ যাচ্ছে— খালি পয়ে আমাকে চুক্তে দিতে আপত্তি করল না। রেষ্টুরেন্টের বেয়ারা আমার নগ্নপদ্ধতির সিলে তাকাল। ঘূর্ণ বিশিষ্ট হল বলেও মনে হল না। কিন্তু কে জানে তার হয়ত বিশিষ্ট হবার ক্ষমতা চলে গোছে।

চাইনীজ রেষ্টুরেন্ট কলনেই অস্বকার কোণা ঝুঁজে বসতে ইচ্ছা করে। চট করে কেউ দেখতে পারবে না। আর দেখলেও চিনবে না। আলো থাকবে কম— কি বাছি তাও পরিষ্কার দেখা যাবে না। ভাতের মাড়ের মত ঘন এক বক্স এনে দিয়ে বলবে সুপ। চামচ দিয়ে সেই সুপ মুখে তুলতে বলতে হবে এই রেষ্টুরেন্টের চেয়ে ঐ রেষ্টুরেন্ট সুপটা ভাল বানায়। এই কথা থেকে অন্যান্য ধরণগুলি করে নেবে যে এই লোক নতিস কেউ না, চাইনীজ রেষ্টুরেন্ট সে চৰে ভেঙায়।

আমাদেরকে (আমাদের বলছি কারণ তামান্না আছে) ফাতেমা খালি আমাদের দু'জনকে চাইনীজ খেতে পাঠিয়েছেন। চাইনীজ খাবারের মাধ্যমে বিবাহ পূর্ণ শেষ গজাবে এই বেংবহয় তার ধরণগুলি। এক টেবিলের দু'দিকে দু'টা চেয়ার। সব চাইনীজ রেষ্টুরেন্টে একটা অংশ থাকে প্রেমিক-প্রেমিকদের জন্য।

তারা আসে দুপুর বেলা। অতি সামান্য খাবারের অর্ডার নিয়ে এলি ঘরে দেসে থাকে সর্বাঙ্গ পর্যন্ত। মেয়েটি সারাঙ্গশ অভিমান করতে থাকে। হেলেন্টির প্রধান কাজ হয় অভিমান ভঙ্গানো। হেলেন্টা হয়ত আয়েশ করে সিগারেট ধরিয়েছে মেয়েটা মুখ অস্বকার করে বলবে, ‘তুমি না বললে সিগারেট হেডে দেবে?’

হেলেন্টা বলবে, ‘বলেছি নাকি?’  
‘কি বলেছ তাও ভুলে গেছ? আমার নাম মনে আছে তো। নাকি নামটাও ভুলে গোছ?’  
‘হ্যাঁ, কি মেন তোমার নাম?’

‘তোমাকে আমি এমন চিমটি দেব?’

‘ও আজ্ঞা, তোমার নাম মনে পড়েছে— তোমার নাম চিমটি যানী।’

‘একি! তুমি আমাকে ভুলিয়ে—ভালিয়ে সিগারেট ধরিয়ে ফেলেছ? তোমার শয়তানী বুকি দেখ আমি অবাক হচ্ছি। ফেল বললাম সিগারেট।’

হেলেন্টা তৎক্ষণাত এসেপ্রেট সিগারেট ফেলে দেবে। মেয়েটা চোখ বড় বড় করে বলবে, ‘দেবি সিগারেটের প্যাকেট আমার কাছে দাও। দাও বললাম।’

সিগারেটের প্যাকেট দেয়া হবে। মেয়েটা সেই প্যাকেট তার ব্যাগে রাখতে রাখতে বলবে, ‘এখন খেকে তোমার যদি সিগারেট খেতে ইচ্ছা করে আমার কাছে চাইবে। আমি যদি দেই তবেই সিগারেট খাবে। না সিলে না।

‘ও-কে?’

‘আজ্ঞা যাও, আজ চাইনীজ খাওয়া উপলক্ষে তোমাকে একটা সিগারেট খাবার অনুমতি দেয়া হল। পুরোটা খেতে পারবে না। হাফ খাবে।’

‘ও-কে?’

‘একটা পর পর ও-কে ও-কে করছ কেন?’

স্টার্ট খানিক এই প্রসঙ্গ নিয়েই কথা চলবে। কথার অভাব কখনো হবে না।

তামান্নাকে নিয়ে প্রেমিক-প্রেমিকদের জন্য সরাফিত আসনে বসেছি। আরো কিছু জোড়া দেখা যাবে যারা সমানে কথা বলে যাবে। আমি কথা ঝুঁজে পাওছি না। তামান্না ঘূর্বই গভীর হয়ে আছে। তার বোধহয় ঘূর্ব তাড়াও আছে। সে একটু পর পর ঘূড়ি দেখছে। আমি অবস্থা স্থানান্তরিক করার জন্য বললাম, ‘তামান্না তুমি কি খাবে?’

তামান্না অবাক হয়ে বলল, ‘তুমি কি খাবে মানে? আমাকে তুমি করে বললেন কেন?’

‘দু’দিন পর দিয়ে হবে, এখন তুমি বলতে অসুবিধা কি? খালা বলেছেন তুমি আজি।’

‘আমি বিয়েতে রাজি এমন কথা কথনো বলিনি। আমি হ্যাঁ-না কিছুই বলিনি।’

‘খালা তোমাকে বিয়ে না দিয়ে ছাড়বে বলে মনে হয় না। তুমি তাকে অবস্থাও করতে পারবে না। চাকরি চলে যাবে।’

‘চাকরি চলে গেলে চলে যাবে। চাকরির জন্যে আমি যাকে তাকে বিয়ে করবো?’

‘সেটাও একটা কথা। বিয়ের মত একটা বড় ব্যাপার — সামান্য চাকরির জন্যে তোমায় বিয়ে করা ঠিক হবে না।’

'আশৰ্য কান্ত এখনো তুমি তুমি কৰছেন। আপনি কি জানেন আপনি খুবই  
নির্ভজ ধৰণের মানুষ।'

'এত রেগে যাচ্ছ কেন? তোমার চেচামেটি ঘনে সবাই আমাদের দিকে  
আগাছে—তারা তাৰাছ আমৰা বোধহয়, প্ৰেমিক-প্ৰেমিকা না। শামী-শৰী।  
এমন চেচামেটি শামী-শৰীৱাই কৰে।'

'প্ৰীতি আৰ কথা বলবেন না। খাৰারেৱ অৰ্ডাৰ দিন। বেংচে চলে যাই। সুপ  
অৰ্ডাৰ দেবেন না। আমি থাই না।'

'টাকা এসেলেন তো?'

তামান্না বিশ্বিত হয়ে বলল, 'আপনি কি সত্ত্বি সত্ত্বি টাকা আনেননি?  
না!'

তামান্না গভীৰ গলায় বলল, 'আমাৰ কাছে টাকা আছে। আপনি খাৰারেৱ  
অৰ্ডাৰ দিন।'

'তুমিই নাও। তোমাৰ কাছে কৰ টাকা আছে তা তো জানি না। টাকা বুৰে  
অৰ্ডাৰ দিতে হৈব। কাপড় দিসেব কৰে জৰাবা বানাতে হৈব। অৱে হকশনটোৱে  
মত কাপড়, তুমি বানিয়ে বসলে ফুল হাত সাৰ্ট, তাৰল পকেট তা হবে না।'

তামান্না ভুৰু ঝুঁচকে বলল, 'কেন আপনি অকাৱেণ কথা বলছেন? আপনাৰ  
নিজেৰ ধাৰণা আপনি খুব মজা কৰে কথা বলছেন—আসলে তাও না। পুৱানো  
সব কথা অন্তে খুবই বিৰাঙ্গি লাগছে।'

'কথা বলব না?'

'না'

'একেবোৱেই না? তুমি প্ৰশ্ন কৰলে উত্তৰ দেব না—কি তাৰ দেব না?'

তামান্না জবাৰ দিল না। সে বিৰাঙ্গিৰ থায় শেষপ্ৰাণে শৌছে যাচ্ছে। তয়াবহ  
ধৰণেৰ বিৱৰণ মানুষ অস্তৃত সব আচৰণ কৰে। আমাদেৱ ধাৰণা রাগে-দুঃখে  
মানুষ বাদে। বিৱৰণ হয়েও হট মাট কৰে কান্দতে আমি দেখেছি। বিৱৰণেৰ শেষ  
সীমায় নিয়ে নিয়ে আমাৰ দেখতে ইচ্ছা কৰেছে তামান্না কি কৰে। আমাৰ বাবা  
মহাপুৰুষ বানানোৰ বিখ্যাত কাৰিগৰ তাৰ উপদেশমালায় বলে গেছেন—

দুঃখী মানুষেৰ কাছে থাকিও।

শোকধৰ্ম মানুষেৰ কাছে থাকিও।

বাগে অৰু মানুষেৰ কাছে থাকিও।

আনন্দিত মানুষেৰ কাছে থাকিও।

দুঃখ-শোক, বাগ-অনন্দ তোমাৰ তিতৰে আসিতে পাৰিবে না।

কিন্তু কোনো বিৱৰণ মানুষেৰ কাছে থাকিও না।

বিৱৰণ মানুষ ভয়ংকৰে।

তামান্না এখন প্ৰচণ্ড বিৱৰণ কিন্তু তাৰে মোটেই ভয়ংকৰ মনে হচ্ছে না।  
বৱং সুন্দৰ লাগছে। চশমা যেমন কাউকে মানুষ সবাইকে মানায় না,  
বিৱৰণও তেমন কাউকে কাউকে মানায়। তামান্নাকে খুব মনিয়েছে।

আমি খুবই নৰম বললাম, 'তামান্না আমাৰ জন্যে ছেট একটা কাজ  
কৰে দেবে।'

তামান্না কিন্তু বলল না। শুধু তাৰ চোখ জীৱৰ কৰে ফেলল। আমি বললাম,  
'তাৰিয়ে দেব জনাঙ্গীৰ কাছে যে প্ৰেমিক-প্ৰেমিকা যুগল বসেছে তাদেৱ কাছ  
দেক্ষা একটা সিগাৰেট এনে দিতে হৈব। তুমি চাইতেছো দিয়ে দেবে।'

'ওদেৱ কাছ থেকে সিগাৰেট এনে দিতে হৈব?'

'আমি চাইতেছো। তবে আমি চাইলৈ নাও দিতে পাৰে। তোমাৰ মত সুন্দৰী  
কোন যোগ যদি সিগাৰেট ভিক্ষা চায় সে ভিক্ষা পাৰেই।'

তামান্না তাৰ বাগ খুলে একশ টাকাৰ একটা নোট বেৰ কৰে বেহাৱাকে  
সিগাৰেট আনতে পাঠাল। এক প্যাকেট সিগাৰেট একটা দেয়াশলাই। আমি  
বললাম, 'ঘাসকস।'

তামান্না বলল, 'থ্যাংকস থ্যাংকস কিন্তু দিতে হৈব না। আপনি দয়া কৰে  
আৱ একটা কথাও বলবেন না।'

আমি বললাম, 'আছা।'

আমাৰ নিজেদেৱ খাওয়া শেষ কৰলাম। খাওয়াৰ সময় তামান্না একবাৰ  
জিজেস কৰল, 'দেবে বাবা তো ভালই, তাই না?' আমি হাঁ সূচক মাথা  
নাড়লাড়ি অনহৃ লাগাই। ম্যাডামেৰ পাথৰটা জেগাড় হয়নি কেন?

মেছকান্দিৰ মিয়াকে পাওয়া যাচ্ছে না। মনে হচ্ছে পাথৰ নিয়ে এক জায়গা  
থেকে আৱেক জায়গায় পালিয়ে বেড়াচ্ছে। কোহিনুৰ হীৱাৰ আদি মালিককে  
যেনেন এক দেশ থেকে আৱেক দেশে পালিয়ে নেড়তে হয়েছে মেছকান্দিৰ  
অবস্থা সে রকম হয়েছে। সে তাৰ কোহিনুৰ মতই দার্মি?

'আপনাৰ ধাৰণা পাথৰটা কোহিনুৰেৰ মতই দার্মি?'  
'কোহিনুৰেৰ দেখেও দার্মি। কোহিনুৰেৰ ইচ্ছাপূৰণ ক্ষমতা ছিল না। এৱ  
আছে।'

'ক' টা ইচ্ছা এই পাথৰ পূৰণ কৰে? একটা না তিনটা?'

'লে ইচ্ছা পূরণ করতেই থাকে। এর ক্ষমতা এক এবং তিনে সীমাবদ্ধ নয়।'

'তিক্ষু মেছকান্দর মিয়ার ক'টি ইচ্ছা এই পাথর পূর্ণ করেছে!'

'মেছকান্দর মিয়া কখনো কিছু চায় না বলে তার ইচ্ছা পূর্ণ হয়নি। তিক্ষুকরা নিজের জন্যে কিছু চায় না। শুধুই অনের জন্যে চায়। ডিকা কবার সময় এরা বি বলে দয়া করে মন দিয়ে ঘূর্ণবেন। এরা বলে, 'আগ্না আপনার ভাল করব ব্যাব। ধনে জনে বরবরত দিব।' এরা কখনো বলে না, 'আগ্না তুমি আমার ভাল কর, আমাকে ধন জন দাও।'

'আপনাকে শুনিয়ে না বললেও আড়ালে যে বলে না, তো কি করে জানেন?'

'আড়ালেও বলে না। এরা ধনেই নিয়েছে এই জাতীয় চাঞ্চল্য সূচারীন। তাদের মত অভজনের ইচ্ছা পূর্ণ হবার নয়। কাজেই ইচ্ছা ব্যাপারটাই এদের জীবন থেকে চলে গেছে।'

'আপনি মনে হচ্ছে একজন তিক্ষু বিশেষজ্ঞ?'

'হ্যাঁ। প্রায়ই আমাকে যেহেতু তিক্ষা করতে হয় ওদের সাইকলজি আমি জানি।'

'আপনাকে প্রায়ই তিক্ষা করতে হয়.'

'হ্যাঁ করতে হয়।'

'বাস্তায় কখনো হাত পেতে তিক্ষা করেছেন?'

'করেছি। এক শবেবরাতের রাতে তিক্ষা করে তিনশ একশ টাকা পেয়েছিলাম। খরচ—ট্রেচ দিয়ে হাতে ক্যাশ ছিল দু'শ দশ টাকা।'

'খরচ—ট্রেচ মানে কি? কিসের খরচ?'

'তিক্ষুর জন্যে জায়গাটা খুব ইস্পটেক। কোথায় দাঢ়িয়ে তিক্ষা করা হবে তার উপর অনেক কিন্তু নির্ভর করে। ভাল জায়গায় দখলের জন্যে টাকা খাওয়াতে হয়। জায়গা বুক করার জন্যে টাকা তো লাগেই— তিক্ষা করে যে টাকা আর হয় তার উপর কমিশনও দিতে হয়।'

'আপনি কি সব সময় বিনিয়ে বিনিয়ে কথা বলেন?'

'মাঝে মাঝে বলি। সব সময় বলি না।'

'আমার তো ধরণা আপনি সব সময়ই মিথ্যা কথা বলেন। আপনি একজন প্যারলজিকেল লায়ার। এবং আমি নিশ্চিত আপনার কোন একটা মানসিক ব্যবি হয়েছে। যে কারণে আপনি সত্ত্ব কথা বলতেই পারেন না।'

'হচ্ছে পারে।'

'আপনি কি আমার একটা উপদেশ দয়া করে শুনবেন?'

'অবশ্যই অনুব।'

'আপনি একজন সাইকিয়ামিট্টের সঙ্গে কথা বলুন। আপনার চিকিৎসা নৰকৰ।'

আমি বললাম, 'আচ্ছা।'

'আপনি যে একজন মানসিক রোগী তা কি জানেন?'

জরুরি।'

তামাঙ্গা উঠে দৌড়াতে বলল, 'জানবেই ভাল। বেশিরভাগ মানসিক রোগীই জানে না যে তারা রোগী। সুস্থ মনুষের মত তারা ঘুরে বেড়ায়। খায়দায় ঘুমায়।'

আমি বললাম, 'তুমি কি আমাকে গোটা পঞ্চাশেক টাকা দিতে পারবে। ফাতেমা খালা পাথর তো পাওয়া গেল না—তারই একটা ফলস পাথর কিনে নেব।'

'ফলস পাথর?'

'হ্যাঁ, দু'নবরী পাথর। বর্তমান ঘৃণ্টাই হচ্ছে দু'নবরীর। কাজেই দু'নবরী পাথরই ভাল করবে।'

তামাঙ্গা গঁউতু ভঙ্গিতে একশ টাকার একটা নোট বের করে দিল। আমি বিকশা নিয়ে রওনা হলাম। গবাতলী থেকে এই সাইজের একটা পাথর আনতে হবে। সিলেটের জাফলং থেকে নোকা এবং বার্জ ভর্তি পাথর আনে গবাতলীতে। সেই সব পাথর ভেদে খোয়া বনানো হয়। সেই খোয়া বাঢ়িয়ার তৈরিতে ব্যবহার হয়। সুন্দর একটা পাথর গবাতলী থেকে জেগাড় করা করিন হবে না। পাথরটা ধূমে মুছে পরিষ্কার করতে হবে, শিরীর মারতে হবে। হাইড্রোজেন পারঅকাইড দিয়ে একটা ঘোশ দিতে পারলে ভাল হবে। দাগটাপ থাকলে উঠে যাবে।

ওপি সাহেবকে দেখার জন্যে হাসপাতালে যাওয়া দরকার। হসপাতালে তার দিনকাল নিশ্চয়ই ভাল কাটছে না। ক্ষমতাবান মানুষদের জন্যে হাসপাতাল খুব খারাপ জায়গা। হাসপাতালের অপরিসর বিছানায় শুয়ে থাকতে থাকতে ক্ষমতাবান মানুষেরা এক সময় হঠাতে দুর্বলতে পারেন— ক্ষমতা ব্যাপারটা অসমে তুষ্য। মানুষকে কমনোই কোন ক্ষমতা দেয়া হয়নি।

'এইটাই সেই পাথর?'

ফাতেমা খালা মুঝ হয়ে তাকিয়ে আছেন? এমন মুঝ দৃষ্টিতে নাদির শাহ কোহিনুর পাথরের দিকে তাকিয়েছেন বলে মনে হয় না। তাঁর চেবে প্রদর্শক পড়েছে না। তেজুলের আচার দেখলে কিশোরীর মুখভূতি লালা এসে যায়। খালা মুখেও লালা জয়মচে।

'পাথরটার ওজন কত রে?'

'চার্টিল হাজার ক্যারোটের মত।'

'কত কেজি বল? ক্যারোটে বলছিস কেন?'

'সামী ভিনিস তো খালা— এই জন্মেই ক্যারোটে হিসেব হচ্ছে।'

'গাথৰ জোগাড় করতে খরচ কত গড়ল?'

'খরচ তালুই পড়েছে তবে তুম এই মুরুর্জে খরচ নিয়ে চিন্তা করবে না।

আগে নিশ্চিত হয়ে নাও যে পাথরটা কাজ করে। যদি দেখা যায় এটা ফালতু রাস্তার পাথর তাহলে শুধু শুধু এর পছনে এত টাকা খরচ করব কেন?

'গাথৰ দেবৰত নেবে?'

'অবশ্যই দেবৰত নেবে। তুমি আগে ব্যবহার করে দেখ ভিনিসটা কেমন?'

'ব্যবহারের নিয়ম কি?'

'নিয়ম জটিল না। গোধূলীগুলো পাক-পৰিবত হয়ে পদ্মাসনে বসতে হয়। পাথরটা রাখতে হয় কোলে। বসতে হয় উত্তরমুখী হয়ে। পাথরটাটা উপর প্রথম ডান হাতে রাখতে হয়। ডান হাতের উপর ধাকবে বী হাত। আঙুলগুলি ধাকবে ৯০ ডিগ্রী একেবে। মিনিট দশের চুম্বাপ বসে থেকে যা চাইবার তা চাইতে হয়। ও আসল কথা বলতে ভুলে গেছি। পাথরটা কোলে বসাবার আগে পরিষ্কার পানিদে তিনবার ধূমে নিতে হবে। মনে ইচ্ছা কোলে পর পাথরটা বড় এক বালতি পানিতে ভুবিয়ে রাখবে। ইচ্ছাপূর্ণ হবার পর পাথরটা পানি থেকে তুলতে হবে। যে পানিতে পাথর ভুবিয়ে রাখা হয়েছিল সেই পানি কিন্তু নষ্ট করা যাবে না বা ফেলে দেয়া যাবে না।'

'এক বালতি পানি কি করব?'

'পানিটা ফুটিয়ে বাল করে বাতাসে মিলিয়ে দিতে হবে।'

'জটিল কিছু না। আমার তো মনে হচ্ছে অত্যন্ত জটিল। তুই কাগজে লিখে দে তো। তাঁর কথা— যে বালতিতে পাথরটা রাখব সেই বালতি কিসের হবে? প্রাণিদের বালতিতে চলবে?'

'প্রাণিদের বালতিতে চলবে, সবচে তাঁর হয় ঝুপার বালতিতে রাখবে। অমৃত যেমন মাটির হাতিতে রাখা যায় না, শৰ্ষ তাঁতে রাখতে হয় সে রকম আর কি?'

'ঝুপার বালতি কিনবে?'

'বাস দাও। পাথর কাজ করে কি করে না— আগেই ঝুপার বালতি।'

বালা বললেন, ঝুপার বালতিতে আর কত খরচ পড়বে? তুই ম্যানেজারকে নিয়ে যা তো— মেডিমেড ঝুপার বালতি পাবি বলে তো মনে হয় না। একটা অর্ডার দিয়ে আয়। খাবুক একটা ঝুপার বালতি।

ম্যানেজার দ্বলব্ল সাহেবের খুব বিষণ্ণ লাগছে। আজ তিনি চকচকে লাল রঙের টাই পরেছেন। লাল টাইও তাঁর বিষণ্ণতা দূর করতে পারবে না। বৰং আরো খানিকটা বাঁচিয়ে দিয়েছে। ম্যানেজার সাহেব বললেন, 'আপনার ভাগাটা তাল।'

আমি হস্তাম। ভাগ্য যে তাঁ তা শীকার করে নিলাম।

ম্যানেজার সাহেবে হাঁট করে নিষ্ঠাস কেলে বললেন, 'আপনাকে আমি ঈর্ষা কৰি।'

আমি বললাম, 'আমি নিজেও নিজেকে ঈর্ষা করি।'

'ইদমীং আমার প্রাই ইচ্ছা করে স্যুট-টাই কেলে দিয়ে আপনার মত বের হয়ে পড়ি। তবে খালি পায়ে না। ঢাকার পথে খালি পায়ে হাঁটা খুবই আন-হাইজিনিক।'

'ঠিক বলেছো!'

'হ্যাঁ সাহেব আপনাকে তো কনপ্রাচেশন জানানো হয়নি — কনপ্রাচুলেশন।'

'কি জন্মে পাথর খুঁজে পেয়েছি এই জন্মে?'

'তামান্নার সঙে আপনার বিয়ে হচ্ছে এই জন্মে। অত্যন্ত তাঁ মেয়ে। কিপ আর গুণ তেল জলের মত। হাজার ঝাককেও মিশে না। তামান্নার ক্ষেত্রে এই মিশ্রণটা ঘটেছে। আপনি অসম্ভব ভাগ্যবান একজন মানুষ।'

'ধন্যবাদ। তামান্নাকে কি আপনার খুব পছন্দ!'

'উনার মধ্যে পছন্দ না হবার কিছু নেই। এক সঙ্গে কাজ করি তো। কাছ  
ফেরে দেখেছি।'

'বিয়ে এখনো ফাইল হয়নি। কথাবাত্তি হচ্ছে।'

'আমি যতদূর জানি সব ফাইল হয়েছে। তারিখ পর্যন্ত হয়েছে। ম্যাডাম  
আপনাকে সারপ্রাইজ দেয়ার জন্যে কিছু বলছেন না। একদিন বিশেষ কাঠ ছাপিয়ে  
আপনার হাতে ধরিয়ে দিয়ে আপনাকে সারপ্রাইজ দেবেন। ম্যাডামের মধ্যে  
এইসব ছেলেমানুষী আছে।'

'কার্ডের টাকাটা জলে যাবে। আমান্না শেষ পর্যন্ত রাজি হবে না।'

'একটা খবর আগনি জানেন না, আমি জানি — তামান্না আপনাকে খুবই  
পছন্দ করেন। পাগলশ্রেণীর মানুষদের জন্যে মেয়েদের বিশেষ কিছু মর্মতা থাকে।  
আপনাকে পাগলশ্রেণীর বলায় আশা করি কিছু মনে করছেন না।'

'কিন্তু না, মনে করছি না।'

আমি কপাল বালতির অর্ডার দিলাম। ম্যানেজার সাহেব বললেন, 'চলুন  
আপনাকে কিছু কাপড়-চোগড় কিনে দেই। আপনাকে প্রেজেন্টেবল করার দায়িত্ব  
ম্যাডাম আমাকে দিয়েছেন।'

আমি বললাম, 'জ্বান।'

'স্মৃট কখনো পরেছেন?'

'কিন্তু না।'

'চলুন একটা স্মৃট বালিয়ে দেই।'

'জ্বান।'

ম্যানেজার সাহেব কিছুক্ষণ চপচাপ থেকে হাঁটাঁ বললেন, 'আপনাকে একটা  
কথা জিজেস করি হিমু সাহেব, দয়া করে সত্যি জরাবর দেবেন।'

'অব্যাহৃত সত্যি জরাবর দেব?'

'মে পাথরটা আপনি ম্যাডামকে দিয়েছেন — সত্যি কি তার ইচ্ছা পূরণ  
ক্ষমতা আছে?'

'এখনো জানি না। আপনি টেষ্ট করে দেখুন না। পাথর তো আপনার  
হেফাজতেই থাকবে।'

'একটা সিগারেট দিন তো হিমু সাহেব, সিগারেট থেতে ইচ্ছা করছে।'

'সিগারেট সঙ্গে নেই। কিন্তে হবে। পঞ্জাবীর পকেট নেই তো — সিগারেট  
কেবার্য রাখতে ভেবে কেনা হয় না।'

'অসুস্থ আজ আপনাকে গোটা তিনেক পকেটওয়ালা পঞ্জাবীও কিনে দেই।

'কিন্তু না, অসুবিধা নেই।'



সুন্দরী মেয়েদের হাতের লেখা সুন্দর হয়। এটা হল নিপাতনে সিক।  
সুন্দরীরা মনে প্রাণে জানে তারা সুন্দর। তাদের চেষ্টাই থাকে তাদের যিরে যা  
থাকবে সবই সুন্দর হবে।

আমি তামান্নার চিঠি হাতের নিয়ে প্রথমেই হাতের লেখার তারিখ করলাম।  
সুন্দর হাতের লেখার একটা সমস্যা হচ্ছে — তুল বানান খব চোখে গড়ে।  
তামান্নার চিঠি প্রতি বানান তুল এখনো চোখে গড়ছে না — মেজাজ খোপ  
হচ্ছে। দীর্ঘ একটা চিঠিতে সে বানান তুল কেবল করবে না। সে কি চলতিকা  
সামনে নিয়ে চিঠি লিখতে বসেছে। চিঠি পড়ে তাও তো মনে হচ্ছে না।  
ডিকশনারী সামনে নিয়ে লেখা চিঠি ভারিকী ধরনের হয়, এই চিঠি ভারিকী না।  
বরং মজার ভঙ্গিতে লেখা।

হিমু সাহেব,

আপনাকে একটা জজার খবর দেয়ার জন্যে চিঠি লিখতে বসেছি।  
আপনাকে তো টেলিফোনে পাওয়া সুব্রহ্মণ্য। কাছেই অফিস পিন্ডেরে বাসে  
দিয়েছি সে মেল সূর্য উঁচার আগে আপনার মেসে উপস্থিত হয়। আমাদের এই  
পিন্ডে যোকা টাইপের। তাকে যা বলা হয় যোকাটোর অত তাই সে করে।  
কাছেই আমার ধরণী তোর পাঁচটায় ঘূম ভাসিয়ে সে আপনাকে আমার চিঠি  
দিয়েছে।

মজার খবরটা এখন দিছি। ম্যাডামের বক্তুল ধরণী হয়েছে যে,  
আপনার পাথরটা কাজ করবে। তিনি পাথরের কাছে প্রথম যে ভিনিস্টা  
চেয়েছেন তা হল — রাতের ঘূম। পাথর তার ইচ্ছা পূর্ণ করবে। পত চার রাত  
ধরে ম্যাডাম কোন রকম ঘূমের অধ্যুৎ ছাড়াই ঘূমছেন। রাত এগারোটার  
দিকে ঘূর্ণতে যান — তোর ন' টার আগে গুঠেন না। ম্যাডাম পাথরের ক্ষমতা  
দেখে বিস্মিত। আমি আপনার মানুষকে বিচ্ছিন্ন করার ক্ষমতা দেখে বিস্মিত।

য্যাডাম যে হারে লোকজনের কাছে পাথরের গুরু করছেন তাতে মনে হয় কিছুদিনের মধ্যেই পরিকা অফিস থেকে লোকজন এসে পাথরের ছবি তুলে নিয়ে যাবে। টেলিভিশনের কোন যাগাজিন অনুষ্ঠানেও য্যাডামকে পাথরসহ দেখা যাবে।

হিংসারে, বলুন তো আপনি এই পাথর দিয়ে নি প্রমাণ করতে চাহেন? কিছুদিন ধরেই আমার মনে হচ্ছে কেন বিশেষ উদ্দেশ্য ছাড়া আপনি কিছু করেন না। সেই উদ্দেশ্যটা আমি আনন্দে ধরতে পারছি না।

যাই হোক, এখন আপনি আমার বিয়ের প্রসঙ্গে আসি। আপনি নিষ্কাশন এর মধ্যে খবর পেয়ে গেছেন যে বিয়ের তারিখ হয়েছে যার্টের ১৫ তারিখ অক্টোবর। দাওয়াজের কার্ড ছাপ হচ্ছে। বিয়ের নামান কর্মকাণ্ড নিয়ে যাজ্ঞামের সিমাইন ব্যঙ্গতা। আমার হাত-পা কাঁপছে। য্যাডাম এত আনন্দ নিয়ে ছোঁচুটি করছেন—আমি কি করে তাকে বর যে আমার পক্ষে আপনাকে দিয়ে করা কিছুতেই সম্ভব না।

একমাত্র আমাকে এই বিপদ থেকে উত্তোলন করতে পারেন। আপনি কি দয়া করে বিয়েটা সেবে? তাতেও আমি আমার মত চাকরি করে যেতে পারি। সব টিক্টার্টা মত চলতে থাকে। বিয়ে ভাসার কারণে য্যাডাম যদি আপনার উপর রাগ করে তাহলে আপনার কিছুই যাবে আসবে না। কিন্তু আমার যাবে আসবে। আমার পক্ষে চাকরি হচ্ছে দেখা কিছুতেই সম্ভব না। আপনি আমার জন্মে কিছু না করলে আমাকে নিতান্তই বাধা হয়ে আপনাকে বিয়ে করতে হবে। তার ফল আপনার বা আমার কানো জন্মেই শুভ হবে না।

আমি আপনার কাছে হাত হোড় করছি, আপনি আমাকে এই মহাবিপদ থেকে উত্তোলন করুন।

বিনীতা  
তামাঙ্গা।

ঠিক শেষ করে খুশি খুশি লাগছে। এক ভুল বানান পাওয়া গেছে সীমান্তারের সী লিখেছে ইসাইকার দিয়ে। অবশিষ্ট সীর্পই নাও হতে পারে। আধুনিককালের বানান তো সব পাস্টে যাচ্ছে। শাঢ়ী বাড়ী এখন লেখা হচ্ছে ইসাইকার দিয়ে। সূর্য লেখার সময় আগে রেফের পরে য-ফলা লাগত। এখন লাগে না—সূর্যের তেজ কর্মে গেছে। তার জন্যে বাড়তি য-ফলা এখন দরকার চেঁটি।



ফাতেমা খালার বসার ঘরের এক কোণায় খালার ম্যানেজার বসে আছেন। ম্যানেজার মুখ গভীর। চোখ বিষণ্ণ। বসার তাঙ্গও বিষণ্ণ। হালকা সবৃজ স্যুট এবং চকচকে লাল টাই এ বিষণ্ণতা দ্বারা করছে না। ফাইজার অবৃথ কোশ্পনি এখন তাকে দিয়ে বিজ্ঞাপন করতে পারে। তার একটা ছবি ছিল নিচে ক্যাপশন—

ক্যাপ্টন এলটি ব্যাথি।

ম্যানেজার আমার দিকে তাকালেন—অপরিচিত মানুষের দিকে যে দৃষ্টিতে তাকানো হয় অবিকল সেই দৃষ্টি। আমি হাসিমুরে বললাম, 'ম্যানেজার সাহেব, আপনার বি বিষণ্ণতা ব্যাথি হয়েছে?' ম্যানেজার চট করে উঠে দাঁড়িয়ে বললেন, 'তামাঙ্গা ম্যাজামের সঙ্গে আছে'।

ভদ্রলোক আমি কি বলেছি না তখনই জবাব দিয়েছেন। লক্ষণ মোটাই তার মনে হচ্ছে না। আমি বললাম, 'আপনি তাল আছেন?'

‘হ্যাঁ’

‘কোন কারণে কি মন খারাপ?’

‘হ্যাঁ না, মন তাল। তামাঙ্গা ম্যাজামের সঙ্গে আছেন।’

‘তামাঙ্গার কথা কিছু জানতে চাইনি। আপনার কি হয়েছে বলুন তো?’

‘শরীর তাল যাচ্ছে না। যুমের সামান্য সমস্যা হচ্ছে।’

‘ইছামতুর পাথরে হাত দিয়ে যুম চাইলেই হয়। যুমের অবৃথ তো আপনার হাতের কাছে। হাত বাড়ালেই পাথর!’

ম্যানেজার সাহেব বসে পড়েছেন। এখন তার দৃষ্টি ঘরের কার্বেটে। কার্বেটের নকশার সৌন্দর্যে তার বিষণ্ণতা আরো বাড়ছে। আমি খালার সকানে তেতুরে চুক্কে গেলাম। এ বাড়িতে এখন আমার অবাধ গতি— যে কোন ঘরে চুক্কে যেতে পারি। কাজের মেয়েগুলি চাপা রাগ নিয়ে তাকায় কিছু বলে না।

খালাকে তার শোবার ঘরে পাওয়া গেল। তিনি পা ছড়িয়ে বিছানায় বসে আছেন। একটা কাজের মেয়ে তার চুলের পোড়ায় তেল ডলে ডলে দিচ্ছে। পতিনী যথেষ্টই জটিল। এক পোছা চুল আলাদা করে তুলে ধরা হয়। চুলের পোড়া মাঝারি করা হয়। সেই চুলের পোছা ধরে পূর্ণ-পশ্চিম, উত্তর-পশ্চিম কিছুগুলি কিছুগুলি টানাটিনি করা হয়।

খালা ইশ্বরার খাটের উপরে আমাকে বসতে বললেন। এবং ইশ্বরাতেই কাজের মেয়েটিকে চলে যেতে বললেন। অতিরিক্ত ধনবামের ইশ্বরা বিশারদ হয়ে যায়। এমনিতে সামাজিক কথা কিন্তু আদেশ জারির ক্ষেত্রে চোখের বাহতের ইশ্বর।

‘যাথার চুল সব পড়ে যাচ্ছে বে হিমু! খুব দৃশ্যমান আছি!'

‘দৃশ্যমান কি আছে? পাথরের কাছে চুল চাও!'

‘সামন্য জিনিস চাইতে ইষ্টা করে না। বড় কিছু হোক তখন চাইব। পাথর তো ঘরেই আছে। পালিয়ে যাচ্ছে না তো।'

‘পাথর তোমার মনে ধরেছে?’

খালা সঙ্গে সঙ্গে গলার ঘর নামিয়ে বললেন, ‘পাথর নিয়ে পুরুতে তোর একটা কথাও আমি বিশ্বাস করিনি। বাধাহার করে আমি হততো!'

‘কেন সাইড এফেক্ট নেই তো?’

‘সাইড এফেক্ট আছে তবে পজেটিভ সাইড এফেক্ট। আমাৰ তো রাতে ঘূম হত না। পাথরটাৰ কাছে ঘূম চাইলাম। এখন কেন অৰূপ ছাড়া মড়াৰ মত ঘূমছি। রাত দশটোৱ সময় বিছানায় যাই। পুরানো অভ্যাসমত ডেড়ো গুনতে শুরু কৰি। বললে বিশ্বাস কৰিবি না চঞ্চিষ্টা ডেড়ো গোনার আগেই ঘূম।'

‘সাইড এফেক্ট কি?’

‘বললাম না পজেটিভ সাইড এফেক্ট। যেসব জিনিস নিয়ে দৃশ্যমান হত সে সব নিয়ে এখন আমি দৃশ্যমান হয় না। এ যে ইয়াকুবকে নিয়ে খুব দৃশ্যমান কৰতাম— তোৱ খালু কেন এ হারামজাদাটিকে এত টাকা দিয়ে গেল। এখন আমি দৃশ্যমান হয় না। নিয়েছে তাল কৰেছে।’

‘ইয়াকুবের সঙ্গে কথা বলব না?’

‘কোন দরকার নেই।'

‘তোমার জীবন তো খালা টেনশন ক্ষি হয়ে যাচ্ছে, তুমি বাচবে কি করে? এখন তো তুমি ঘৃণ করে মরে যাবে।'

‘খামখা কথা বলিননা তো হিমু।'

‘বেঁচে থাকার জন্যে টেনশন লাগে খালা। যার যত টেনশন তাঁৰ বাঁচা তত আনন্দবান।’

‘আমাৰ টেনশন যথেষ্টই আছে। আমাৰ টেনশন নিয়ে তোকে ভাবতে হবে না। বুলবুল বলছে চাকুৰি কৰবেন না। আমি চোখে অস্ফুকাৰ দেখছি। বুলবুলেৰ মত আৱেক্ষণ মাসে লাখ টকা সিলেও পাৰ না।’

‘বুলবুল সাহেবে চাকুৰি কৰবেন না কেন?’

‘জানি না কেন, পরিষ্কাৰ কৰে বিছুই বলছে না। সারাক্ষণ মুখ তোতা কৰে থাকে।’

‘পাথৰকে বল বুলবুল দেন কোমাকে হেঢ়ে না যায়।’

‘তাই মনে হয় বগতে হবে। হিমু তুই পাথৰটোৱ খৰচ নিয়ে যা। কত খৰচ পড়োৰ?’

‘পাথৰ উক্তাবের ব্যাপারে একজনেৰ সাহায্য নিয়েছি। বলতে গেলে সেই পাথৰ এনে নিয়েছে। তার নাম ছক্ষু। ছক্ষুৰ খুব শৰ্ক একটা ষ্টেশনারীৰ সেকান দেখে।

‘এ তো মেলা টাকাৰ ব্যাপার।’

‘পাথৰটা কি তুমি দেখবে না?’

‘আছো যা দোকান দিয়ে দেব। বুলবুলকে এখনি বলে নিছি সে সব ব্যবহাৰ কৰে বাবুবে।’

‘আমি ছক্ষুকে নিয়ে আসি?’

‘যা নিয়ে আসি। আৰ দায়াতেৰ কাৰ্ডটলি নিয়ে যা। তুই তোৱ বক্সুবাঙ্কিকে দায়াত কৰিবি না।’

‘কাৰ্ড সুন্দৰ হয়েছে খালা।’

‘সুন্দৰ হবে না! কি বিশিস তুই? কাৰ্ড আমি নিজে বেছে কিনেছি।’

‘তামাঙ্গু কি আশপাশে আছে?’

‘হ্যা আছে। এখন ওৱ সঙ্গে আড়া দিতে যাবি না। বিয়েৰ আগে কনেৰ সাথে দেখা সাক্ষৎ হওয়া দিক না।’

‘আমি শুধু একটা কথা বলে চলে যাব।’

‘কি বলবি?’

‘সেটা তো খালা তোমাকে বলা যাবে না।’

কোতুহলে খালাৰ চোখ চকচক কৰেছে। কি কথাটা বলা হবে তা জানাৰ জন্যে তার মধ্যে টেনশন তৈৰি হচ্ছে। টেনশন তৈৰি হচ্ছে বলেই তিনি বেঁচে আনন্দ পাচ্ছেন।

খালার হাত থেকে দাওয়াতের কার্ড নিলাম। প্রথম কার্ডটা দিলাম তামান্নাকে। আমির নিয়ের নিম্নুৎ আমি আমার হবু স্তীকে করব না? সেটাই তো খাতাবিক।

তামান্না গঙ্গায় বলল, 'ধ্যাংকস।'

আমি বললাম, 'তুমি কেমন আছ তামান্না?'

তামান্না বলল, 'ভাল।'

'তোমার ঘূর্ম হচ্ছে তো?'

তামান্না কিছি বলল না। তার চোখে রাগ নেই, দৃষ্টব্যেও নেই, অভিমান নেই। মেন সে পাথরের একটা মেরে। আমি দাওয়াতের কার্ড নিয়ে রওনা হলাম।

কার্ডগুলি বিলি করতে হবে। কার্ড কাদের দেব ভাবতে ভাবতে যাচ্ছি—

তিকুক মেছকাপ্পার

হার্তু

দেশ প্রেমিক জোবেদ আলি

ওসি রমন ধানা

ইয়াকুব সাহেব।

আজ্ঞা রূপাকে একটা কার্ড দেব না? অবশ্যই দেব। সবার শেষে দেব। রূপাকে কার্ড দেবার পর যে কার্ডগুলি বাচে সেতালি কুচি কুচি করে ছিঁড়ে ফেলতে হবে।

'আমাকে চিনতে পারছেন?

'হ্যামি সাহেব না!'

'টিকই চিনেছেন। আমি আপনাকে চিনতে পারছিলাম না। আপনার একি অবস্থা?'

'মরতে বসেছি হ্যামি সাহেব।'

'ভাই তো দেখছি!'

ওসি রমন ধান উঠে বসতে গিয়েও বসলেন না। আবার অন্যে পড়লেন। বড় বড় করে খাস নিতে লাগলেন। এই কয়েকদিনেই তার শাশ্য ডেকে পড়েছে। চোখে মুখে ঘূর্ম ঘূর্ম ভাব। ডাঙুরার সংস্কৃত ঘূর্মের অন্ধের মধ্যেই তাকে রাখছে। চোখ কেটেরে ঢুকে গেছে।

তদ্দোলক কেবিনে সীট পাননি। তার দু'পাশেই রোগীর সমৃদ্ধ। এদের মধ্যে একজন বেধহয় মারা যাচ্ছে। ডাঙুর নার্স তাকে নিয়ে ছেটাছুটি করছে। আমি ওসি সাহেবের পাশে বসতে বসতে বললাম, 'আপনার হয়েছে কি বলুন দেখি।'

'স্টোক করেছে। বী পাটা কোমরের নিচ থেকে অচল।'

'বলেন কি?'

'পুরো তেজিটেবল হয়ে গেছি। নিজেকে মনে হচ্ছে চালকুমড়া।'

ওসি সাহেব আবারো উঠে বসতে গেলেন। আমি তাকে সাহায্য করলাম। পিঠের নিচে বালিশ দিয়ে নিলাম। ওসি সাহেবের কান্ত গলায় বললেন, 'একটা মশা আমাকে খুব বিরক্ত করছে। মের দিন তো!'

আমি মশা মের দিলাম। ওসি সাহেব মুত মশার দিকে খুব আগ্রহ নিয়ে তাকিয়ে থাকলেন। কোন মৃত মশার দিকে এত কৌতুহল নিয়ে রোমাল রসও তাকাননি। ওসি সাহেব মশার দিকে তাকিয়ে থেকেই বললেন, 'হ্যামি সাহেব। মেন আমি না, মশাটাই হ্যামি।'

আমি বললাম, 'কি!'

'আপনি এসেলেন আমি খুব খুশি হয়েছি। আপনি কি একটা ব্যাপার জানেন? আমি যে মরতে বসেছি আপনার জন্মেই মরতে বসেছি।'

আমি বললাম, 'জানি। আমার কথা শোনার জন্যে আপনার উপর প্রেসার তেরি হল। মেই খেসাতে স্টোক। আপনার চাকরি আছে না, গেছে?'

'সাস্পেন্সেন আবাই। চাকরি শেষ পর্যন্ত থাকবে বলে মনে হয় না।'

'অপরাধী যাদের ধরেছিলেন তারা কি ছাড়া পেয়েছে?'

কি না তারা ছাড়া পায় নাই। তদন্তের ফলাফল এমন যে ছাড়া পাওয়া মুশকিল। তাছাড়া অস্ত্রসহ ধরা পড়েছে।

অনেকক্ষণ পর ওসি সাহেবের মুখে আনন্দের হাসি দেখা দেল।

'হ্যামি সাহেব!

কি!

'আমি তো মরতে বসেছি কিন্তু আছি সুবে। অনেকদিন পর প্রথম বৃক্ষাম যে আমি মানুষ। এত ভাল ধাগল। চাকরি চলে গেলে চলে যাবে— তিক্ষা করব।'

'পা নষ্ট তিক্ষা করার জন্যে যোড়া কিনতে হবে। যোড়ায় চড়ে তিক্ষা।'

ওসি সাহেব শব্দ করে হেসেই হাসি শিলে ফেললেন। হাতের মোগীদের জেনারেল ওয়ার্ড শব্দ করে হসির জায়গা না। অন্য মোগীরা অবাক হয়ে আমাদের দেখে।

'হ্যামি সাহেব!

কি!

'খুব হেটেডেল মা মারা গিয়েছিল। মায়ের চেহারা-চেহারা কিছুই মনে নেই। গতকাল রাতেই মাকে বন্ধে দেখলাম। মা বললেন, খোকন, তোর উপর আমি খুশি হয়েছি। তোর পা ঠিক হয়ে যাবে, পা নিয়ে দুক্ষিণ্ঠা করিস না।'

'নানান ধরনের অপরাধ আপনি করতেন। অপরাধবোধ থেকে মুক্ত হওয়ায় এই শপথ দেখছেন।'

'আপনার যা ইচ্ছা আপনি করতে পারেন। ঘটনা যে কি তা আমি জানি।'

'ভাবী কোথায়?'

'ও বেবী একটোটি করছে তো। এডভাল্সড ষ্টেজ। প্রতিদিন আসতে পারে না। গতকাল এসেছিল আজ আসবে না।'

'ভাবী মেবী একটোটি করছেন না-কি? উনাকে দেখে কিছু বোঝা যায়নি।'

'শুধু সবধানে নিজেকে আড়ল করে রাখে বলে কিছু বোঝা যায় না।'

'এইটি কি উনার প্রয় স্টান্ড?'

'এর আগে তিনটা স্টান্ড হয়েছে। তিনটা স্টান্ডই মৃত অবস্থায় হয়েছে। তবে এবারেরটা বাঁচে। কি হিমু সাহেব, আপনি বলেন দেখি বাঁচবে না?'

'হ্যা বাঁচবে।'

'আমি ঠিক করে রেখেছি হলে হলে নাম রাখব হিমু।'

'আপনার মেরে হবে।'

'মেরে হলে তার নাম হিমি।'

ওসি সাহেব আবারো শব্দ করে হাসলেন। এবার আর হাসি শিলে ফেললেন না। অন্যদিন বেজের রোগীরা উৎসুক কোথে তাকাচ্ছে। কেউ রাগ করছে না।

আমি উঠে দাঢ়াতে দাঢ়াতে বললাম, 'ওসি সাহেবের কার্ডটা রাখুন।'

ওসি সাহেব বিখ্যত হয়ে বলেন, 'কিসের কার্ড?'

'বিয়ে করছি। বিয়ের কার্ড। আপনি অসুস্থ মানুষ হতে পারবেন বলে মনে হয় না।'

'আপনি বিয়ে করবেন আর আমি যাব না, তা কি করে হয়। আমি এখনেসে করে হলেও আপনার বিয়েতে যাব।'

সারাদিন আমি বিয়ের কার্ড দিয়ে বেড়ালাম। কেউ বাদ পড়ল না। ভিস্কুট মেঠকান্দুর মিয়াও একটা কার্ড পেল। আমি বললাম, 'ভিস্কুট সাহেব মনে করে যাবেন কিন্তু। কাপড় চোপড় যা আছে তাতেই চলবে শপথ পাথরটা সঙ্গে নেবেন না। তুঁপিকেট হয়ে গেলে অসুবিধা আছে।'

মেঠকান্দুর বিড় বিড় করে বলল, কি কল কিছুই বুঝি না।

'আমি বিয়ে করছি বিয়ের দাওয়াত।'

'সাব আপনে বড় ভ্যাক করেন।'

'আঙ্গ যাও আর তাক করব না। তাল কথা তোমার পাথর কিন্তু এখনো কিনতে পারি। সাষ্টি প্রাইম কৃতি হাজার টাকা।'

১৩৬

'পাথর বেছুম না।'

বিয়ের দাওয়াত সবাইকে দিলাম শপথ ইয়াকুব সাহেবকে পাওয়া গেল না। তাৰ বৌজে দিয়ে শুলাম পাঁচ মাসের বাড়ি ভাড়া বাকি রেখে তিনি রাতের অক্তকারে পালিয়ে গেছেন। বাড়িওয়ালা বের হয়ে আমার সঙ্গে খুব হাতিতারি করতে লাগল, আপনি যদি তার রিলেটিভ হন তাহলে খবর আছে। আপনার গলায় গামছা দিয়ে আমি টাকা আদায় করাব।

আমি বিলীতভাবে বললাম, আমিও আপনার মতই পাওনাদার। আজ আমাকে টাকা দেবার কথা।

'আপনার কত টাকা চাচে?'

'পায় দশ হাজার।'

'কি রকম হারামজাদা লোক আপনি কঞ্চাও করতে পারবেন না। মধ্যের বাবহাব। মেদিন চৰে যাবে সেন্টিও আমাকে বাসায় ঢেকে এনে চা খাইয়েছে। বাসার প্রতিটা জিনিস এর মধ্যে সরিয়ে ফেলেছে। কিঞ্চ বুঝতে পারি নাই। একটা ডাবল খাট দিল সেই খাটও নাই।'

'বাবন কি?'

'এত বড় খাট কি করে সৱাল সেটাই আমার মাথায় আসে না।'

'এভেল না রেখে বাড়ি ভাড়া দেয়া ঠিক হয় নাই।'

'অতি সত্য কথা বলিয়ে ফেলেছে। কথা দিয়ে ভুলিয়ে ফেলেছে। আমার স্ত্রী এখন আমাকে নিয়ে হাস্যহাসি করে।'

'হাস্যহাসি করাই কথা।'

বাড়িওয়ালা আমাকে ছাড়লেন না। চা বিসকিট খাওয়ালেন। দেশ যে মানুষের বদলে আমাকে ভার্তি হয়ে যাচ্ছে এই বিষয়ে তার সঙ্গে ঔরকমতো পৌছে ছাড়া পেলাম। বাকি রইল শপথ রূপ। রূপার কাছে যেতে ভয় করছে। সে কি বকলে কে জানে।

রূপ কার্ড হাতে নিয়ে হাসল। হাসতে হাসতে বলল, 'কার্ডটা খুব সুন্দর। তুমি কিনেছ?'

'ন। আমি খালা কিনেছেন।'

'ধৰণের সাদা কার্ডে রূপালী সেখা। জোছনা জোছনা ভাব। তোমার বিয়েও তো দেখি পূর্ণিমা।'

'আজকাল জোছনার হিসাব রাখ না?'

'ন।'

'আমি রাখি। তোমার বিয়ে পূর্ণিমার রাতেই হচ্ছে।'

১৩৭

'একসেলেন্ট। কপা তুমি বিয়েতে যাও তো?'  
কপা আবারো হাসল। এমনিতে সে খুব কম হাসে। ছেটবেলায় কেউ বোধ-হয় তাকে বলেছিল— তাকে বিষণ্ণ অবস্থায় দেখতে ভাল লাগে। ব্যাপারটা তার মাথায় চুকে পেছে। সে সারাক্ষণ বিষণ্ণ থাকে। আজ হাসছে। এর মধ্যে ডিনবার হাসল।

'হাসছ কেন কপা?'  
'তুমি বদলে যাও— এই জন্যে হাসছি। মানুষকে তুমি আগে ধোকা দিতে না। এখন নিছ!'

'কাকে ধোকা দিছিঃ'

'তামান্না নামের মেয়েটাকে নিছ। বিয়ের রাতে সবাই উপস্থিত হবে। তুমি হবে না। তুমি জোছনা দেখতে জঙ্গলে চলে যাবে। মেয়েটার কি হবে তেবেছ কথখনে!'

'এমন যদি আমি করি তামান্নার কিছুই হবে না। তামান্নার জন্যে একজন স্ট্যান্ডবাই বর আছে। ফাতেমা খালার মানেজার বুলবুল সাহেব। তার সঙ্গে হিয়ে হয়ে যাবে। বাকি জীবন দু'জনে সুবেই কাটাবে।'

'ওয়া দু'জন বিয়ে করবে তার কথা— মাঝখানে তুমি জড়ালে কেন?'

'আমি না জড়ালে বিয়েটা হত না।'

'তোমার সমস্যা কি জান হিয়ুঁ? তোমার সমস্যা হল নিজেকে তুমি খুব গুরুত্বপূর্ণ মনে কর।'

'সেটা কি দোবের? সামান্য যে বালিকণা সেও নিজেকে খুব গুরুত্বপূর্ণ মনে করে।'

'বালির কণা এই কথা তোমাকে বলে শেছে?'

'হ্যাঁ।'

কপা আবারো হাসল। এই নিয়ে সে হাসল চারবার। পঞ্চমবার হাসলেই ম্যাঙ্গিক নাথর পূর্ণ হবে। তখন আমাকে উঠে পড়তে হবে।

'কপা!

'বল অসছি।'

'অনেকদিন জোছনা দেখা হয় না। গাজীপুরের জঙ্গলে আমার সঙ্গে জোছনা দেখবে।'

কপা পঞ্চমবারের মত হেসে উঠে বলল, 'না।'

ব্যাঙ্গাচি বলল, 'আমরা কোথায় যাচ্ছি?'

আমি বললাম, 'গাজীপুরের শালবনে। জোছনা দেখব। জঙ্গলের জোছনা তুলনায়। একবার ঠিকমত দেখলে জোছনা মাথায় তেজর চুকে যায়। জীবনটা অন্য বক্স হয়ে যায়।'

'আজ না তো বিয়ে? আমি শিফট কিনে রেখেছি। তোর তারী পার্টির মেঝে কুণ্ঠ বাধিয়ে এনেছে।'

'বিয়ে তেজে শেছে।'

'সেকিং?

ব্যাঙ্গাচি অসম্ভব মন খারাপ করল। সে ময়তামার্খ গলায় বলল, 'তোর ভাগটা এত খারাপ কেন দোষ্ট?'  
'জানি না।'

'এই মেখ তোর জন্যে আমার চোখে পানি এসে শেছে।'

'আমার সঙ্গে জোছনা দেখতে জঙ্গলে যাবি?'

'অবশ্যই যাব। তুই যেখানে যেতে কবরি সেখানে যাব। তুই যদি নর্মায় গলা পর্যন্ত ছুরিয়ে বলে থাকতে বলিস তাই করব।'

'বিয়ে বাড়ি চাষবার খাওয়া মিস করবি মন খারাপ লাগছে না?'

'না দোষ্ট লাগছে না। মন খারাপ লাগছে তোর জন্যে। তোর ভাগ্য দেখি আমার চেয়েও খারাপ।'

জোছনা দেখতে রওনা হবার আগে তামান্নার সঙ্গে কথা বললাম। কমিউনিটি সেন্টারে টেলিফোনে খুব সহজেই তাকে ধূরা দেল। সে টেলিফোন তুলে প্রথম যে কথাটা বলল, তা হচ্ছে— 'আপনি আসছেন না, তাই না?'

আমি বললাম, 'হ্যাঁ। তুম যা চেয়েছিলে তাই হচ্ছে।'

তামান্না বলল, 'ওসুন, আমি মত বদলেছি। আপনি আসুন। আপনাকে আগে অনেক কঠিন কঠিন কথা বলেছি তার জন্যে আমি লজিত। প্রিজ আপনি আসুন।'

'म्यानेज़ार बुलबुल सहेब आहेन। तिनि तोमाके खुबी पहन्द करतेन।  
तोमार विये हवे म्यानेज़ार सहेबेर संसे!'  
'आपनाके के बल्ल?'  
'आमाके नेट बलेनि। तबे म्यानेज़ार सहेबेर इच्छा पूर्ण पाथरे हात  
रेखे एই इच्छा प्रकाश करतेहेन। पाथरे तार इच्छा पूर्ण करतेहेन।'  
'ग्रीष्म आपनि आमाके रपकथा उनावेन ना; पृथिवीटा रपकथा नय?'  
'के बल धर्षिवी रपकथा नय?'  
'आपनि आसवेन ना?'  
'ना। आज आमार जोहिना देखार निमत्तण!'  
'हिमु सहेब शुभ्यं...'।  
आपि टेलिफोन रेखे दिलाम।

गण्डीपूरेर जळले तोकार मुखे देखि एकटा प्राइटेच कर दाढ़िये आहे।  
गाडी नष्ट। स्टार्ट निष्ट ना। एक उद्भोव तार शी एवं दू'टा बडू बडू मेये  
निये खुब विपदे पडतेहेन। हात उटिये हाइड्रेयर गाडी थामाते चाइतेहेन। कोन  
गाडी थामाहे ना। वांगादेशेर हाइड्रेयर नियम-कानून पासेते गेहे।  
हाइड्रेयरेते गाडी चालावार प्रथम नियम होते कोन विपदवात पधे देखले गाडी  
थामावे ना। गाडी थामावेहि विपदवातके सहाय करते हवे। तोमार देवि  
हये यावे। त्रुमि निजेव विपदे गडते पाव। कि दरकार।

आपि व्याङ्गाचिके निये एगिये गेलाम। व्याङ्गाचिर विशाल शरीर देखे मेये  
दू'टि डये अविहर हये गेल। आपि उद्भोवके दिके ताकिये बलाम,  
'आपनादेर समस्या कि? गाडी स्टार्ट निष्ट ना?'

उद्भोवक बलाम, 'ना।'

आपि बलाम, 'आमर एই बऱ्ह अटोमोबाईल इन्शिनियर। गाडीर बनेट  
खुल्ण ओ देशुक!'

उद्भोवक अनिष्टर संसे गाडीर बनेट खुलासेन। व्याङ्गाचि प्राय संसे संसेइ  
गाडी स्टार्ट करे दिल।

उद्भोवके चोरे-मुखे कृतज्ञता। मेये दू'टि आनन्दे ठोऱ्हे।  
उद्भोवकेर शी बलाम, डाइ, आमर दू'टीटा धरे जळले पडे आछि। कि बरे  
ये आपनादेर झण शोध करव।

आपि उद्भोवकेर काहे एगिये गेलाम। गंडीर गलाम बलाम, 'स्यार  
आपनि कि आमाके चिनते पारहेन?'

उद्भोवक विशित गलाय बलाम, 'त्त्वं ना।'

'आपि आपनाके चिनते पेरोहि। आपनि खुब उच्च पदेर एकजन मिलिटरी  
अफिसार ना?'

'आपि सेनावाहिनीर एकजन रिपोर्टियर। श्री कन्यादेव निये खशवाडी  
याच्छि।'

'अनेककाल आगे आपनि आमाके एकटा लिफ्ट दियोचिलेन। एक पाकेट  
सिगारेट दियोचिलेन। मने पडत्तेहेन।'

'ও अच्छा यां, मने पडत्तेहेन।'

'आपि सेही व्याकि। आमार खुब इच्छा छिल आवार येन आपनार संसे देवा  
हय। देवा हयेहेह।'

'आपि कि आपनार नाम जानते गारिं?'

'जानते पारेन। बिस्तु नाम जानार दरकार आहे कि? आपि आपनार नाम  
जानि न। आपनिओ आमारटा जानेन न। आमरा ना हय आमादेर नाम नाई  
जानालाम। रात अनेक हयेगेहे। आपनारा रात्ना हये यान।'

आपि व्याङ्गाचिके निये शालवने ढुकलाम। दू'जमे एत्तिह — झमेह घन वदे  
रुके याच्छि। व्याङ्गाचिके बलाम, 'कि रे डय लागत्तेह?'

'किंधे लागत्तेह?'

हंगः

'आज त्तुइ जोहिना येये पेट तरावि।'

'जोहिना कि करे व्याव?'

'तात माह येतावे खाय सेतावे खावि। हा करवि, मुखे चादेर आले  
पडत्तवे। सेही आले बोळै करे गेले फेलवि। तारपर देववि आर कोनदिन  
किछु खेते इच्छा करवे ना। तोर किंधे रोग सेवे यावे।'

'संज्ञि?'

'हां संज्ञि।'

बन्धुमिते मोठामुटि एकटा फाका जारपा पाओया गेल। जायगाटा चादेर  
आलेय तरे गेहे। आपि आमार दीर्घ जीवने एमन आले देखिनि। व्याङ्गाचिर  
दिके ताकिये आहे। किंचुक्षण पर पर मूळ

বন্ধ করে জোছনা খাবার ভঙ্গি করছে। ব্যাঙাটি এক ধরনের খেলা খেলছে কিন্তু সে জানে না এই খেলা তার রক্ষে চুকে যাচ্ছে। বাকি জীবনে সে আর এই খেলা থেকে মুক্ত হতে পারবে না।

ব্যাঙাটি হঠাতে অবাক গলায় বলল, ‘হিমু! কি ব্যাপার বল তো? আমি চাঁদের দিকে তাকিয়ে আছি হঠাতে দেখি ধপ করে চাঁচটা অনেকখানি নিচে নেমে এসেছে। হচ্ছেটা কি?’

আমি কিছু বললাম না। শুধু যে চাঁদ নিচে নেমে আসছে তানা। আমরা যে তায়গাটোয় দাঢ়িয়ে আছি সেটাও বড় হতে শুরু করেছে। একসময় তা বিশাল এক খোলা প্রস্তর হয়ে যাবে। সেখানে বৈ বৈ করবে অবাক জোছনা। চাঁদ নেমে আসবে হাতের কাছে। হাত বাঢ়ালেই চাঁদ স্পর্শ করা যাবে। আমি অপেক্ষা করে আছি।



জন্ম : ১৩ই নভেম্বর ১৯৪৮  
ইংরেজী।

অনুষ্ঠান : সেতাকোনা জেলার  
মোহনগঞ্জে, তাঁর মাতৃলালময়।

বাবা : ফয়জুর রহমান আহমেদ,  
মুকিয়ুক্তের বীর শহীদ সৈনিক।

মা : আয়শা আখতার।

ইমাইল আহমেদ একসময় শিক্ষকতা  
করতেন। ঢাকা বিশ্ববিদ্যালয়ের  
রসায়ন শাস্ত্রের অধ্যাপক ছিলেন।

পড়াতে আর ভালো লাগে না বলে  
চাকরি ছেড়ে দিয়েছেন। তাঁর তিনি

কন্যা, নোভা-শীলা-বিপাশা, এক  
পুত্র নুহাশ। শ্রী গুলতেকিন ধান।

অবসরে শ্রী, পুত্র, কন্যা, বক্সের  
নিয়ে ঝুঁক হৈচে করেন, এবং বক্সেন,

জনতার মধ্যেই আছে নির্বাচন।  
আমার অনেক অনুসন্ধানের একটি অনুসন্ধান হল  
নির্বাচন অনুসন্ধান।

For More Books Visit [www.BDeBooks.Com](http://www.BDeBooks.Com)

Read Online



E-BOOK